लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–14

गाय की पूँछ का चँवर

और पश्चिमी अफ्रीका की दूसरी कहानियाँ

हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग

1947

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series–14
Book Title: Gaaya Ki Poonchh Ka Chanwar… (Cow-Tail Switch…)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of West Africa

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

गाय की पूँछ का चॅवर और...

एशिया के बाद अफ्रीका ही संसार में दूसरे नम्बर का महाद्वीप है जनसंख्या में भी और क्षेत्रफल में भी। अफ्रीका में केवल **2–4** देशों का ही साहित्य प्रकाशित रूप में अधिक मिलता है जैसे नाइजीरिया, घाना, मिश्र, दक्षिण अफ्रीका, तनज़ानिया आदि इसलिये जहॉ भी हमें अफ्रीका की लोक कथाओं की पुस्तकें दिखायी देती हैं हम उनका हिन्दी अनुवाद कर लेते हैं।

इससे पहले हमने अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी।[2] अफ्रीका की लोक कथाओं की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी जो दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेलसन मन्डेला की सम्पादित की हुई थी।[3] उसके बाद हमने तीसरी पुस्तक प्रकाशित की थी नाइजीरिया की योरुबा लोक कथाओं की फूजा अबायेमी की लिखी हुई "चौदह सौ कौड़ियॉ... ।"[4] उसके बाद प्रकाशित की थी अफ्रीका की लोक कथाओं की चौथी पुस्तक "अफ्रीका की लोक कथाऐं"[5]।

आशा है ये सभी पुस्तकें आप सबको बहुत पसन्द आयी होगी। तो लीजिये अब प्रस्तुत है आपके हाथों में एक और पुस्तक "गाय की पूँछ का चॅवर और दूसरी पश्चिमी अफ्रीका की कहानियॉ"[6]। इस पुस्तक में एक कहानी को छोड़ कर बाकी सब कहानियॉ पश्चिमी अफ्रीका के घाना देश की हैं।

आशा है कि यह पुस्तक भी आपको उतनी ही पसन्द आयेगी जितनी इससे पहले वाली चार पुस्तकें आयी थीं। लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें की सीरीज़ में आपको ये पुस्तकें हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये अफ्रीका की ये लोक कथाओं की यह पुस्तक अब हिन्दी में।

---

[2] Bateman, George W. "Folktales of Zanzibar". Chicago: AC McClurg. 1901. 10 tales. Available in English at : https://www.worldoftales.com/Tanzanian_folktales.html ; and http://www.forgottenbooks.com/books/Zanzibar_Tales_Told_By_Natives_of_the_East_Coast_of_Africa_1000655761

[3] Mandela, Nelson. "Nelson Mandela's African Favorite Folktales". WW Norton Company. 2002. 32 tales.

[4] Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries: traditional stories of the Yoruba". Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
Fuja, Abayomi. "Fourteen Hindred Cowries and Other African Tales." NY: Lothrop, Lee and Shepard. 1971. 1st American edition.

[5] Ceni, Alessandro. "African Folktales". Barnes & Nobles. 1998. 128 p. 18 tales.

[6] Courlander, Harold and Herzog, George. "The Cow-tail Switch and Other West African Stories." NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p. Available in English at : http://westafrikanoralliterature.weebly.com/the-cow-tail-switch.html]
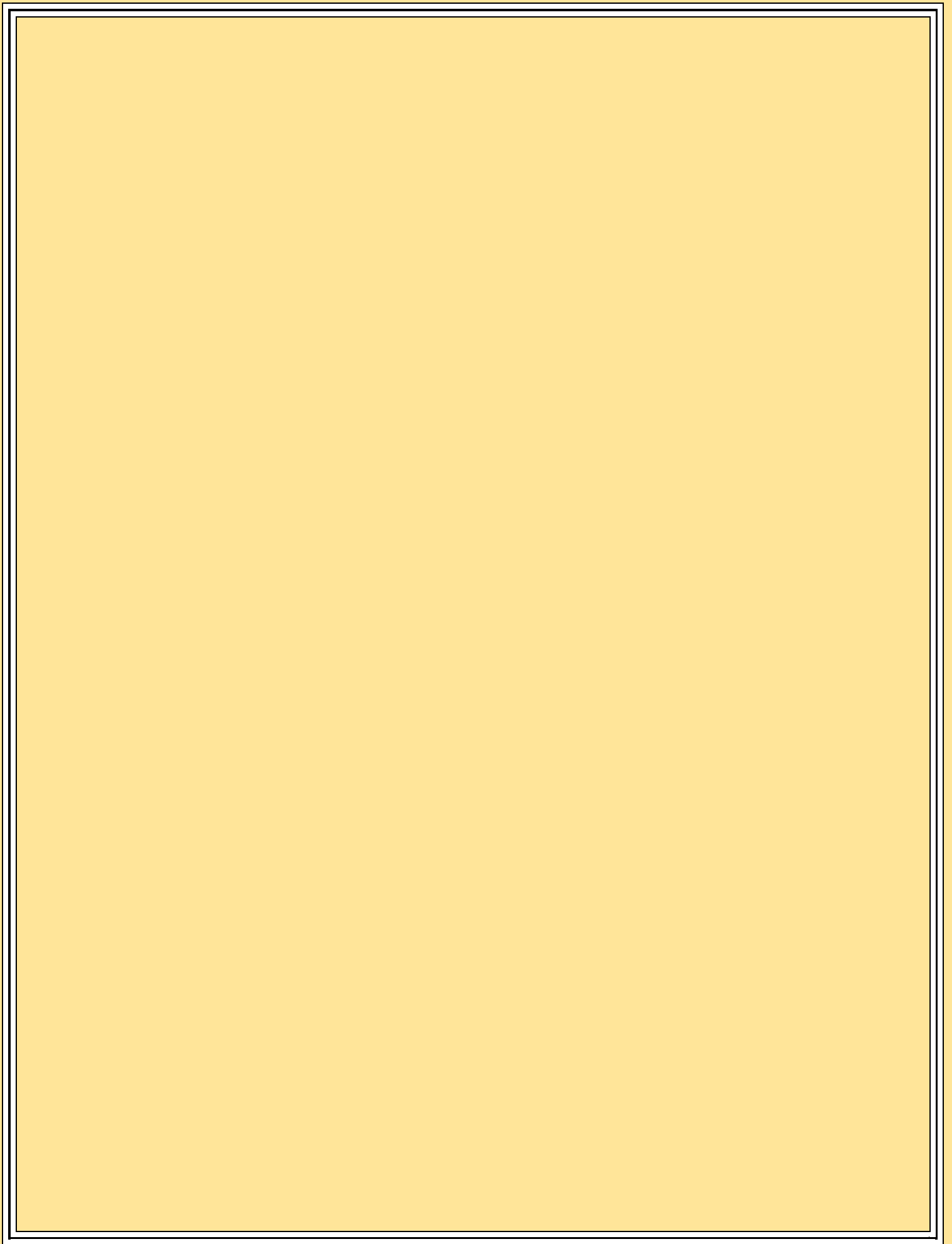
1 गाय की पूँछ[7]

लाइबेरिया[8] के बारिश वाले जंगल[9] के किनारे के पास एक पहाड़ी थी जहाँ से कवाली[10] नदी दिखायी देती थी। वहाँ एक गाँव था जिसका नाम था कुंडी[11]।

वहाँ चावल और कसावा[12] के खेत चारों तरफ फैले पड़े थे। वहाँ उन गाँव वालों के जानवर नदी के पास वाले घास के मैदानों में चरते रहते थे।

मिट्टी के गोल गोल घरों की आग से निकला हुआ धुँआ उन घरों की पाम के पत्तों की छतों से निकलता रहता था। यह धुँआ छत से निकल कर सारे गाँव पर छा जाता।

आदमी और लड़के नदी में मछली पकड़ते और स्त्रियाँ अपने अपने घरों के सामने लकड़ी की ओखलियों में अनाज पीसती रहतीं।

इसी गाँव में ओगालूसा[13] नाम का एक शिकारी अपनी पत्नी और कई बच्चों के साथ रहता था। एक सुबह ओगालूसा ने अपने

---

[7] The Cow-Tail Switch (Tale No 1) – a folktale from Liberia, West Africa.
[8] Liberia is a country in Western Africa
[9] Translated for the words "Rain Forests"
[10] Cavally is a large river on the boundary of Liberia and Ivory Coast in the East.
[11] Kundi
[12] Cassava is a root vegetable like Yam except that it is thinner and longer than it. It is also a staple diet of West African people. See its picture above.
[13] Ogaloussa – the name of the man

घर की दीवार से अपने हथियार उतारे और शिकार करने के लिये जंगल चला गया।

उसकी पत्नी और उसके बच्चे खेत की देखभाल करने और जानवरों को चराने चले गये। दिन गुजर गया घर आ कर उन्होंने शाम का खाना खाया – मानियोक[14] और मछली। रात हो गयी पर ओगालूसा नहीं आया। दूसरा दिन भी गुजर गया पर ओगालूसा फिर भी वापस नहीं आया।

उन्होंने आपस में बात की कि ओगालूस के साथ ऐसा क्या हुआ जिसकी वजह से वह घर वापस नहीं आ सका। इस तरह से एक हफ्ता गुजर गया और फिर एक महीना।

कभी कभी ओगालूसा के बेटे बोलते थे कि उनका पिता घर वापस लौट कर नहीं आया था पर वे कर कुछ नहीं पा रहे थे। परिवार खेत की देखभाल कर रहा था और बेटे शिकार के लिये चले जाते थे और कुछ दिनों के बाद तो फिर किसी ने घर में ओगालूसा का नाम भी नहीं लिया।

कुछ दिन बाद ओगालूसा की पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया। उसका नाम पुली[15] रखा गया। पुली बड़ा हुआ। उसने बैठना सीखा फिर घुटनों चलना सीखा।

[14] Manioc – is the Casssava flour

[15] Puli – the name of the youngest son of Ogaloussa

और फिर एक समय आया जब पुली बोलने लगा सबसे पहले वह बोला — "मेरे पिता कहाँ हैं?"

इस सवाल के जवाब में ओगलूसा के दूसरे बेटों ने चावल के खेतों के उस पार की तरफ देखा।

फिर एक और बेटा बोला — "अरे हाँ पिता जी कहाँ हैं?"

दूसरा बेटा बोला — "असल में उनको तो बहुत पहले ही आ जाना चाहिये था।"

तीसरा बेटा बोला — "उनको जरूर ही कुछ हो गया है। हमको उनको ढूँढना चाहिये।"

एक बेटा बोला — "वह तो जँगल में गये थे हम उनको कहाँ ढूँढेंगे?"

एक बोला — "मैंने उनको जाते देखा था। वह उस तरफ नदी के उस पार गये थे। चलो उसी रास्ते पर चलते हैं और उनको ढूँढते हैं।"

सो ओगालूस के बेटों ने अपने अपने हथियार लिये और ओगालूसा को ढूँढने चल दिये। जब वे लोग जंगल में काफी पेड़ों और बेलों के बीच में पहुँच गये तो वे रास्ता भूल गये।

वे फिर जंगल में रास्ता ढूँढने लगे तो एक बेटे को रास्ता मिल गया। वे उस पर चल दिये मगर वे फिर रास्ता भूल गये। तब एक दूसरे बेटे को रास्ता मिल गया। अब जंगल में अँधेरा हो गया था।

इस अँधेरे में वे कई बार रास्ता भूले और कई बार उनको रास्ता मिला।

आखिर वे एक साफ जगह आ गये। वहाँ उन्होंने देखा कि ओगालूसा की हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं। पास में ही उसके जंग लगे हथियार पड़े थे। इससे उनको पता चल गया कि उनका पिता शिकार करते समय मारा गया।

उनमें से एक बेटा आगे बढ़ा और बोला — "मैं जानता हूँ कि कैसे किसी मरे हुए आदमी की हड्डियों को एक साथ जोड़ा जा सकता है।"

कह कर उसने ओगालूसा की हड्डियों को समेटा और उनको जो हड्डी जहाँ लगनी थी वहाँ रख कर उन सबको जोड़ दिया।

दूसरा बेटा बोला — "मुझे भी कुछ आता है। मैं जानता हूँ कि किसी हड्डी के ढाँचे को माँस से कैसे ढका जाता है।" कह कर वह अपने काम में लग गया और उसने ओगालूसा का हड्डियों का ढाँचा माँस आदि से ढक दिया।

अब तीसरा बेटा बोला — "मेरे पास ऐसी ताकत है जिससे मैं इस माँस में खून दौड़ा सकता हूँ।" सो वह आगे बढ़ा और उसने ओगालूसा की नसों में खून बहा दिया और फिर एक तरफ को खड़ा हो गया।

ओगालूसा का दूसरा बेटा बोला — "मैं इस शरीर में सॉस डाल सकता हूॅ।" कह कर उसने अपना काम किया और सब लोगों ने देखा कि ओगालूसा की छाती ऊपर नीचे उठ बैठ रही थी।

ओगालूसा का एक और बेटा बोला — "मैं इस शरीर में हलचल ला सकता हूॅ।"

सो उसने अपने पिता के शरीर में चलने फिरने की ताकत डाली और ओगालूसा उठ कर बैठा हो गया और फिर उसने अपनी ऑखें खोल दीं।

उसके एक और बेटे ने कहा कि वह उसको बोलने की ताकत दे सकता है। सो उसने उसको बोलने की ताकत दी और वह भी थोड़ा पीछे हट कर खड़ा हो गया।

ओगालूसा ने अपने चारों तरफ देखा और खड़ा हो गया। उसने पूछा — "मेरे हथियार कहॉ हैं?"

बच्चों ने घास पर से उसके जंग लगे हथियार उठाये और उसको दे दिये। उसके बाद वे सब उसी रास्ते से अपने गॉव वापस लौट आये जिस रास्ते से गये थे – जंगल में से और चावलों के खेतों में से हो कर।

ओगालूसा अपने घर के अन्दर गया। उसकी पत्नी ने उसके नहाने का इन्तजाम किया। नहाने के बाद उसने खाना खाया। वह घर में चार दिन तक रहा।

पॉचवे दिन वह बाहर निकला तो उसने अपना सिर मुँड़वाया क्योंकि वहॉ लोग यही करते थे जब वे मरे हुओं के देश से वापस आते थे।

उसके बाद उसने फिर एक बड़ी दावत के लिये एक गाय मारी। उसने उस गाय की पूँछ ली, उसकी चोटी[16] बनायी। फिर उसने उसको मोतियों और कौड़ियों[17] और चमकीली धातु के टुकड़ों से सजाया। यह सब करने के बाद वह पूँछ बहुत सुन्दर लग रही थी।

अब ओगालूसा जब भी किसी खास मौके पर कहीं जाता तो वह उसको अपने साथ ले जाता। कभी कहीं कोई नाच होता या फिर कोई बहुत खास रस्म होती या कुछ और तब भी वह उसको हमेशा अपने साथ ही रखता।

लोगों का कहना था कि वह सबसे ज्यादा सुन्दर गाय की पूँछ थी जो उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में देखी थी।

जल्दी ही ओगालूसा के मर कर वापस आने की ख़ुशी में गॉव में एक उत्सव मनाया गया। लोगों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने।

---

[16] Translated for the "Braid". See its picture above.

[17] Translated for the words "Beads and Cowrie Shells". See the pictures of both above – of beads above and of cowrie shells below.

बाजा बजाने वाले अपने अपने बाजे ले कर आये और नाच शुरू हुआ।

ढोल बजाने वालों ने अपने अपने ढोल बजाने शुरू किये और स्त्रियों ने गाना शुरू किया। लोगों ने उस दिन बहुत सारी पाम की शराब पी। सब बहुत खुश थे।

ओगालूसा आज भी अपनी गाय की पूँछ लिये हुए था और सब उस पूँछ की तारीफ कर रहे थे। कुछ लोग ज़रा ज़्यादा हिम्मती थे तो वे ओगालूसा से उसकी गाय की पूँछ माँगने के लिये उसके पास भी आये और उन्होंने उसकी वह पूँछ माँगी पर ओगालूसा ने उसको अपने हाथ में ही रखा।

कभी कभी कई लोगों ने उसको एक साथ भी माँगा। स्त्रियों और बच्चों ने भी उसको देखना चाहा पर ओगालूसा ने सबको उसे दिखाने से मना कर दिया।

आखीर में वह बोलने के लिये खड़ा हुआ तो नाच रुक गया और लोग उसको सुनने के लिये उसके पास आ गये। उसने बोलना शुरू किया —

"यह काफी पहले की बात है कि मैं शिकार करने के लिये जंगल गया। जब मैं शिकार कर रहा था तो एक चीते[18] ने मुझे मार दिया।

[18] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

तब मेरे बेटे मुझे ढूँढने के लिये आये और वे मुझे मरे हुए लोगों के देश से मेरे गाँव वापस ले कर आये। मैं यह गाय की पूँछ अपने उन्हीं बेटों में से एक बेटे को दूँगा।

मेरे सब बेटों ने मुझको मरे हुए से ज़िन्दा करने के लिये कुछ न कुछ किया है पर मेरे पास तो देने के लिये केवल एक ही गाय की पूँछ है। मैं यह गाय की पूँछ उसी को दूँगा जिसने मुझको घर लाने के लिये सबसे ज़्यादा किया है।

यह सुन कर बहस शुरू हो गयी कि वह गाय की पूँछ किसको मिलनी चाहिये।

एक बेटा बोला — "पिता जी यह पूँछ मुझे देंगे। मैंने ही सबसे ज़्यादा काम किया है क्योंकि जब हम जंगल में रास्ता भूल गये थे तो मैंने ही वहाँ रास्ता ढूँढा था।"

दूसरा बेटा बोला — "नहीं यह पूँछ मुझे मिलेगी क्योंकि उनके शरीर की हड्डियाँ तो मैंने ही जोड़ी थीं।"

तीसरा बेटा बोला — "पर उस हड्डियों के ढाँचे को माँस से तो मैंने ही ढका था इसलिये वह पूँछ मुझे मिलेगी।"

चौथा बेटा बोला — "लेकिन वह मैं था जिसने उस माँस के शान्त शरीर को हिलने डुलने की ताकत दी इसलिये वह पूँछ मुझे ही मिलेगी।"

पाँचवाँ बेटा बोला — "वह पूँछ तो मुझे मिलनी चाहिये क्योंकि पिता जी के शरीर में खून तो मैंने ही भरा था।"

छठा बेटा बोला — "असल में वह पूँछ तो मुझे मिलनी चाहिये क्योंकि उनके शरीर में साँस तो मैंने भरी थी।

उसका सातवाँ बेटा बोला — "और उनको बोलने की ताकत मैंने दी थी इसलिये गाय की वह पूँछ मुझे मिलनी चाहिये।"

इस तरह से उसके सब बेटे आपस में बहस कर रहे थे कि गाय की वह पूँछ उसी को क्यों मिलनी चाहिये। जल्दी ही उसके बेटे ही नहीं बल्कि गाँव के दूसरे लोग भी आपस में इस बारे में बात करने लगे कि गाय की वह पूँछ उसके किस बेटे को मिलनी चाहिये।

कोई किसी बेटे को पूँछ देने को कह रहा तो कोई किसी बेटे को। कुछ कह रहे थे कि उसको उस पूँछ को अपने सभी बेटों को दे देनी चाहिये।

ओगालूसा ने जब यह शोर सुना तो उसने सबको चुप रहने के लिये कहा और बोला — "मैं यह गाय की पूँछ अपने उस बेटे को दूँगा जिसका मैं सबसे ज़्यादा कर्जदार हूँ।"

कह कर वह आगे बढ़ा और बड़ी नम्रता से झुक कर उसने वह गाय की पूँछ अपने सबसे छोटे बेटे को दे दी जो ओगालूसा के जाने के बाद पैदा हुआ था।

तब गाँव के लोगों को याद आया कि उसके पहले शब्द थे — "मेरे पिता जी कहाँ हैं?" वे जान गये कि ओगलूसा गाय की पूँछ को देने के लिये अपने बेटे को चुनने में ठीक था।

क्यों कि वहॉ एक और कहावत भी कही जाती है कि “कोई आदमी तब तक मरा हुआ नहीं समझा जाता जब तक लोग उसे याद करते रहते हैं।”

2 कैडो की दीवार[19]

गिनी की खाड़ी के उत्तर में सेनो राज्य के टैन्डैला शहर में एक बहुत ही अमीर आदमी रहता था जिसका नाम कैडो था।[20] वह इतना अमीर था कि उसके खेत उस शहर के चारों तरफ फैले हुए थे।

जब उन खेतों में हल चलाने का समय आता तो सैंकड़ों की गिनती में आदमी और लड़के उसमें हल चलाते। उसके बाद जब बीज बोने का समय आता तो सैंकड़ों की गिनती में स्त्रियॉ और लड़कियॉ उन खेतों में मक्का के बीज बोतीं।

उसके अनाजघर उन खेतों के अनाज से इतने भर जाते कि हर फसल पर जितना भी अनाज उसके खेतों में होता वह उसे खा नहीं पाता था।

कैडो का नाम सेनो राज्य में तो दूर दूर तक मशहूर था ही यहॉ तक कि वे यात्री भी जो उस शहर से गुजरते थे वे उसकी अमीरी की कहानियॉ सेनो राज्य से बाहर दूर दूर तक ले जाते।

एक दिन कैडो ने अपने शहर टैन्डैला के सभी आदमियों को एक बड़ी मीटिंग के लिये अपने घर के सामने बुलाया। वे सब वहॉ आये क्योंकि एक तो कैडो बहुत बड़ा आदमी था। और दूसरे

---

[19] Kaddo's Wall (Tale No 2) – a folktale from West Africa.

[20] In the town of Tendella, in the Kingdom of Seno, North of the Gulf of the Gulf of Guinea there was a rich man by the name of Kaddo.

उनको यह भी मालूम था कि उस दिन वह वहॉ कोई खास बात कहने वाला था।

कैडो बोला — "मुझे एक बात बहुत परेशान कर रही है। इस बात को मैं काफी दिनों से सोच रहा हूँ और इसको सोच सोच कर मैं रातों को जाग भी जाता हूँ। बात यह है कि मेरे पास मेरे अनाजघर में इतना अनाज है कि मुझे नहीं मालूम कि मैं उसका क्या करूँ।

लोगों ने उसकी इस बात को ध्यान से सुना और उस पर विचार किया।

एक आदमी बोला — "शहर के कुछ लोगों के पास बिल्कुल भी मक्का नहीं है। वे बहुत गरीब हैं और उनके पास और कुछ भी नहीं हैं। आप अपनी कुछ मक्का उनको क्यों नहीं दे देते?"

कैडो ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा — "नहीं नहीं। यह कोई अच्छा विचार नहीं है। यह विचार मुझे कुछ ठीक नहीं लगा।"

दूसरा आदमी बोला — "तो फिर आप अपनी मक्का उन लोगों को उधार दे सकते हैं जिनकी फसल खराब हो गयी है या फिर जिनके पास वसन्त में बोने के लिये कोई बीज नहीं है। यह शहर के लिये बहुत अच्छा रहेगा क्योंकि इससे शहर की गरीबी भी दूर होगी।"

कैडो बोला — "नहीं, यह भी इसका कोई हल नहीं है।"

एक और आदमी बोला — "तो फिर आप ऐसा करें कि आप अपनी कुछ मक्का बेच कर कुछ जानवर खरीद लें।"

यह बात भी कैडो की समझ में नहीं आयी और उसने ना में सिर हिलाया। फिर वह बोला — "नहीं, यह भी कोई बहुत अच्छी सलाह नहीं है। असल में सामान्य लोगों के लिये एक अमीर आदमी को ऐसे मामले पर जैसा कि मेरा है, कोई भी सलाह देना बहुत मुश्किल काम है।"

बहुत से आदमियों ने कैडो को कई सलाहें दीं पर उसको किसी भी आदमी की कोई सलाह नहीं जॅची। वह कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला — "तुम लोग मेरे पास जितनी लड़कियॉ भेज सकते हो उतनी लड़कियॉ भेजो। वे सब मेरे लिये मेरी मक्का पीसेंगी।"

यह सुन कर सब लोग वहॉ से चले गये। वे लोग कैडो से गुस्सा थे। फिर भी कैडो ने जैसा उनसे कहा था उन्होंने वैसा ही किया। अगले दिन उन्होंने उसके पास उसका काम करने के लिये 100 लड़कियॉ भेज दीं।

सौ मक्का पीसने की चक्कियॉ मॅगवायी गयीं और काम शुरू हो गया। सारा दिन वे लड़कियॉ उन चक्कियों में मक्का डालती रहीं और मक्का का आटा निकालती रहीं।

सारा दिन शहर के लोग कैडो के घर से आती उन चक्कियों की आवाज सुनते रहे। मक्का के आटे का ढेर लग गया। सात दिन और सात रात तक वे लड़कियॉ बिना रुके मक्का पीसती रहीं।

जब मक्का का आखिरी दाना भी आटे मे पिस गया तो कैडो ने उन लड़कियों को बुलाया और कहा — "अब तुम लोग झरने से पानी ले आओ। उस पानी को हम इस मक्का के आटे में मिलायेंगे और फिर उससे एक ओखली[21] बनायेंगे।"

यह सुन कर लड़कियॉ गयीं और झरने पर से पानी ले आयीं और उसको आटे में मिला कर उसकी एक बहुत मोटी सी ओखली बनायी।

उसके बाद कैडो ने उनको उस ओखली से ईंटें बनाने के लिये कहा। वह बोला — "जब ईंटें सूख जायेंगी तो मैं उन ईंटों की अपने घर के चारों तरफ एक दीवार बनवाऊॅगा।"

सारे शहर में यह बात फैल गयी कि कैडो अपने घर के चारों तरफ मक्का के आटे की एक दीवार बनवा रहा है। शहर के बहुत सारे लोग उसके इस विचार के खिलाफ थे। वे उसके दरवाजे पर इस बात का विरोध करने के लिये भी आये।

उन्होंने कहा — "आप ऐसा नहीं कर सकते। यह काम इन्सानियत के खिलाफ है।"

"यह ठीक नहीं है। आप आटे की दीवार बनवा कर इस तरह से खाना बरबाद नहीं कर सकते।"

---

[21] Translated for the word "Mortar". See its picture above.

कैडो बोला — "क्या ठीक है और क्या गलत है? यह मैं ज़्यादा जानता हूँ। क्योंकि मैं बहुत अमीर हूँ इसलिये मेरा ठीक तुम्हारे ठीक से बहुत अलग है। मैं जो चाहे करूँ।"

एक दूसरा आदमी बोला — "मक्का खाने के लिये होती है ताकि उसको खा कर लोग ज़िन्दा रह सकें। यह उन लोगों का मजाक बनाने के लिये नहीं है जिनकी किस्मत कमजोर हैं।

एक और आदमी बोला — "जब लोग भूखे हों तो यह बहुत गलत बात है कि आटे की दीवार बना कर उनको उसके बाहर खड़ा कर दिया जाये।"

कैडो बोला — "अपनी यह सब शिकायतें बन्द करो। यह मेरी मक्का है। यह मेरा ज़्यादा वाला अनाज है। मैं उसे सारा नहीं खा सकता। वह मेरे खेतों का अनाज है। मैं अमीर हूँ। अमीर होने का क्या फायदा अगर तुम अपनी ही चीज़ का अपने तरीके से इस्तेमाल नहीं कर सकते।"

यह सब सुन कर शहर के लोग कैडो की बेवकूफी पर गुस्से में अपना सिर हिलाते हुए अपने अपने घर वापस चले गये।

वे 100 लड़कियाँ उस आटे की ईंटें बनाती रहीं और उनको धूप में सुखाती रहीं। जब वे ईंटें सूख गयीं तो कैडो ने उनसे अपने घर के चारों तरफ दीवार बनवानी शुरू कर दी।

उन्होंने गीला आटा ओखली में इसलिये इस्तेमाल किया था ताकि वह ईंटों को एक दूसरे से चिपका सके। धीरे धीरे दीवार

बढ़ने लगी। उस दीवार को सुन्दर बनाने के लिये उन्होंने उसमें कई डिजाइन बना कर कौड़ियाँ लगायीं जिससे वह दीवार बहुत सुन्दर हो गयी।

जब वह दीवार बन गयी और जब मक्का के आटे का आखिरी थैला भी इस्तेमाल हो गया तो कैडो अपनी दीवार देख कर बहुत खुश हुआ। वह उस दीवार के आगे चला, वह उस दीवार के पीछे चला, उसने उसको सब तरफ से देखा और देख कर सन्तुष्ट हो गया।

अब जब लोग उस से मिलने आते तो उनको दीवार में बने दरवाजे के पास खड़े होना पड़ता और जब तक उनको अन्दर आने की इजाज़त नहीं मिल जाती वे वहीं दरवाजे के बाहर ही खड़े रहते।

जब वे मजदूर जो कैडो का खेत जोतते थे और उनमें बीज बोते थे उससे बात करने के लिये आते थे तो कैडो दीवार के पास बैठ जाता और वहीं बैठ कर उनसे बात करता।

और जब कोई शहर का आदमी उससे किसी मामले पर बात करने के लिये आता तो वह अपनी दीवार के ऊपर बैठ जाता और उनसे बात करता रहता, जब कि वे लोग खड़े रहते और उसको सुनते रहते।

काफी दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। मीलों तक कैडो अमीर होने की इज्जत पाता रहा। उसकी दीवार की कहानी भी बहुत दूर दूर तक फैलती रही।

और फिर एक साल कैडो की मक्का की फसल बहुत ही खराब हुई। मक्का की फसल के लिये बारिश काफी नहीं थी। जमीन सूख कर सड़क की तरह से सख्त और रेतीली हो गयी थी। उस साल उसके खेत में या उसके किसी रिश्तेदार के खेत में मक्का का एक भुट्टा[22] भी नहीं लगा।

उसके अगले साल भी ऐसा ही हुआ। अब तो कैडो के पास मक्का का बीज भी नहीं था। उसने खाने और बीज के लिये मक्का खरीदने के लिये अपने जानवर और घोड़े बेच दिये।

उसने फिर से मक्का बोयी पर अगले साल भी ऐसा ही हुआ। किसी के खेत में मक्का का कोई भुट्टा नहीं था। इस तरह से हर साल कैडो की फसल खराब होती रही।

उसके कुछ रिश्तेदार भूख से मर गये। उसके दूसरे रिश्तेदार सेनो राज्य के दूसरे हिस्सों में चले गये क्योंकि उनके पास बोने के लिये मक्का का बीज भी नहीं था और खाने के लिये वे कैडो पर निर्भर भी नहीं कर सकते थे।

कैडो के मजदूर भाग गये थे क्योंकि कैडो अब उनको खाना नहीं खिला सकता था। धीरे धीरे कैडो राज्य के जिस हिस्से में रहता

[22] Translated for the words “Ear of Corn”. See its picture above.

था वह हिस्सा भी अब खाली होता जा रहा था। उसके पास बस अब उसकी एक नौजवान बेटी रह गयी थी और एक खाल की बीमारी वाला गधा रह गया था।

जब कैडो के जानवर और पैसा सब चले गये तो कैडो बहुत भूखा हो गया। उसने अपनी मक्का के आटे की दीवार को थोड़ा सा खुरचा और खा लिया। अगले दिन उसने उसको और ज़्यादा खुरचा और खा लिया।

अब वह उस दीवार में से थोड़ा थोड़ा आटा रोज खुरचता और रोज खा लेता। दीवार नीची होती गयी और फिर एक दिन वह भी आया जब वह दीवार भी धीरे धीरे कर के गायब हो गयी।

उस शानदार दीवार का अब कुछ भी नहीं बचा जिस पर बैठ कर वह शहर के लोगों की बातें सुनता था जब वे उससे बात करने आते थे। या फिर कभी वह उनको वहाँ से मक्का के बीज उधार देता था।

अब कैडो को पता चला कि अगर उसको इसके बाद रहना पड़ा तो वह अब अकेले नहीं रह सकता। उसको किसी और से सहायता लेनी ही पड़ेगी। वह यही सोचता रहा कि कौन उसकी सहायता करेगा।

यकीनन टैन्डैला के लोग तो उसकी सहायता कभी नहीं करेंगे क्योंकि उनकी तो उसने बेइज्जती की है और उनके साथ बुरा बर्ताव किया है। अब उनका उससे क्या लेना देना।

अब तो केवल एक ही आदमी बचा है जिसके पास वह जा सकता था और वह था सोगोले[23], घाना के लोगों का राजा। वह अपनी अमीरी और दया के लिये बहुत मशहूर था।

सो कैडो और उसकी बेटी अपने उस आधा खाना खिलाये गये खाल की बीमारी वाले गधे पर चढ़े और घाना देश तक पहुँचने के लिये सात दिन तक चलते रहे।

जब कैडो राजा के महल में पहुँचा तो सोगोला अपने महल के सामने बैठा था। उसके पास ही जमीन पर एक मुलायम सी खाल पड़ी थी। कैडो और उसकी बेटी वहीं जा कर बैठ गये। राजा ने उन दोनों के लिये बाजरे की शराब मॅगवा ली।

सोगोले बोला — "घाना देश में ओ अजनबी, तुम लोग इस शराब का एक लम्बा सा घूँट पियो क्योंकि अगर तुम टैन्डैला से आये हो तो तुम लोग बहुत लम्बी यात्रा कर के आ रहे हो।"

कैडो बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद पर मैं ज़्यादा नहीं पी सकता।"

सोगोला बोला — "ऐसा क्यों? जब लोग प्यासे होते हैं तो पीते ही हैं।"

कैडो बोला — "यह तो सच है पर क्योंकि मैं बहुत दिनों से भूखा हूँ इसलिये मेरा पेट सिकुड़ गया है।"

---

[23] Sogole, the King of Ganna people

सोगोला बोला — "ठीक है तो धीरे धीरे पियो क्योंकि अब तुम मेरे मेहमान हो तो तुम भूखे नहीं रहोगे। तुमको जिस किसी चीज़ की भी जरूरत पड़ेगी वह तुमको मुझसे मिल जायेगी।"

कैडो ने हॉ में अपना सिर हिलाया और उसने वह बाजरे की शराब थोड़ी थोड़ी कर के पी।

सोगोला बोला — "अब तुम मुझे बताओ। तुम कह रहे हो कि तुम सेनो देश के टैन्डैला शहर से आये हो? मैंने उस शहर के बारे में बहुत सुना है। वहॉ अकाल पड़ा तो उसने वहॉ से बहुत सारे लोगों को बाहर निकाल दिया क्योंकि उसके पास वहॉ कोई मक्का नहीं थी।"

कैडो बोला — "आप ठीक कहते हैं। इन मुश्किल दिनों ने वहॉ से सबको बाहर निकाल दिया क्योंकि वहॉ किसी के खेत में कोई मक्का हो ही नहीं पायी।"

"पर मुझे यह तो बताओ कि टैन्डैला में एक बहुत ही अमीर आदमी रहता था जिसका नाम था कैडो। क्या वह वहॉ नहीं था? उसको क्या हुआ? क्या वह अभी भी ज़िन्दा है?"

कैडो बोला — "जी हॉ, वह अभी भी ज़िन्दा है।"

सोगोला बोला — "वह तो बहुत बढ़िया आदमी था। लोगों का कहना है कि उसने अपनी जरूरत से ज़्यादा उपज के आटे की अपने मकान के चारों तरफ दीवार बनवायी थी। और जब वह अपने

लोगों से बात करता था तो वह दरवाजे के पास उस दीवार पर बैठ कर लोगों से बात किया करता था। क्या यह सच है?"

कैडो दुखी हो कर बोला — "हॉ यह सच है।"

सोगोला फिर बोला — "क्या उसके पास अभी भी उतने ही जानवर हैं जितने पहले थे?"

कैडो बोला — "नहीं, अब उसके पास वे जानवर नहीं हैं। वे सब चले गये।"

सोगोला कुछ दुखी हो कर बोला — "यह तो उस आदमी के लिये बहुत ही दुख की बात है कि जिस आदमी के पास इतना कुछ हो और उसका सब कुछ खत्म हो जाये। पर उसके पास क्या अभी भी बहुत सारे मजदूर और नौकर चाकर नहीं हैं?"

कैडो बोला — "नहीं, वे मजदूर और नौकर चाकर सब चले गये। उसका तो बहुत बड़ा परिवार था पर अब उस परिवार में केवल उसकी एक बेटी ही रह गयी है। बाकी सब चले गये क्योंकि अब न उनके पास पैसा था और न उनके पास खाना था।"

सोगोलो यह सुन कर बहुत उदास हो गया — "ओह वह भी क्या अमीर आदमी है जिसके सारे जानवर चले गये हों, जिसके सारे नौकर चाकर उसको छोड़ कर चले गये हों। पर मुझे यह तो बताओ कि उसकी उस आटे की दीवार का क्या हुआ जो उसने अपने घर के चारों तरफ बनवायी थी?"

कैडो बोला — "वह दीवार उसने खा ली। रोज उसमें से वह थोड़ा थोड़ा आटा खुरचता और खा लेता। इस तरह से वह दीवार भी खत्म हो गयी।"

सोगोला एक लम्बी सी सॉस ले कर बोला — "अजीब कहानी है। पर ज़िन्दगी ऐसी ही है क्या करें।"

फिर वह चुपचाप सोचता रहा कि कभी कभी किस अजीब तरह से कुछ लोगों की ज़िन्दगी चलती है। फिर उसने पूछा — "और इत्तफाक से क्या तुम कैडो के परिवार से हो?"

कैडो बोला — "हॉ सचमुच में मैं कैडो के परिवार का ही एक था। एक समय था कि मैं अमीर था। एक समय मेरे पास इतने सारे जानवर थे कि मैं उनको गिन ही नहीं सकता था।

एक समय मेरे पास बहुत सारे मक्का के खेत थे। एक समय था जब मेरे पास सैंकड़ों मजदूर थे जो मेरे खेत जोतते थे। एक समय था जब मेरे अनाजघर में से अनाज बाहर बिखरा पड़ता था। एक बार मैं कैडो था जो टैन्डैला का बहुत बड़ा आदमी था।"

यह सुन कर सोगोला तो चौंक ही पड़ा। वह बोला — "क्या तुम खुद कैडो हो?"

"हॉ एक समय था जब मेरी बड़ी शान थी और मैं एक सरदार की तरह रहता था पर आज में चिथड़े पहने हुए सहायता की भीख मॉग रहा हूॅ।"

सोगोला बोला — "मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ कैडो?"

कैडो बोला — "मेरे पास अब कुछ नहीं है। मुझे मक्का के कुछ बीज चाहिये ताकि मैं वापस जा कर फिर से उनको बो सकूँ।"

सोगोला बोला — "तुम्हें जो कुछ चाहिये तुम वह ले जाओ।"

फिर उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे मक्का के थैले ले आयें और उनको कैडो के गधे पर लाद दें। नौकर तुरन्त ही मक्का के कुछ थैले ले आये और उनको कैडो के गधे पर लाद दिया।

कैडो ने सोगोला को नम्रता से धन्यवाद दिया और फिर वह और उसकी बेटी दोनों अपने शहर टैन्डैला वापस चल दिये। वे फिर से सात दिन की यात्रा के बाद अपने घर वापस आये।

रास्ते में कैडो को बहुत भूख लगी। उसने इतना सारी मक्का बहुत दिनों से देखी नहीं थी। उसने एक थैले में से मक्का के कुछ दाने निकाले और उनको अपने मुँह में डाल लिया और चबाने लगा। उसने फिर एक मुट्ठी भर मक्का के दाने लिये और अपने मुँह में डाल लिये और उनको निगल गया।

वह रुक नहीं पाया। वह खाता गया खाता गया। वह भूल गया था कि यह मक्का तो उसके खेत में बोने के लिये थी। जब वह टैन्डैला पहुँचा तो वह अपने बिस्तर पर सोने चला गया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो उसने फिर खाया। उसने वह मक्का इतनी खायी कि वह बीमार पड़ गया। वह फिर बिस्तर पर लेट गया और दर्द से चिल्लाने लगा क्योंकि अब उसके पेट को

पता ही नहीं था कि वह खाने का क्या करे। जल्दी ही कैडो मर गया।

सेनो राज्य में कैडो के धेवते धेवतियॉ[24] और उनके बच्चे आज भी गरीब हैं। आज भी कभी कभी वहॉ के गरीब लोग अमीर लोगों से कहते हैं कि "अपने घर के चारों तरफ आटे की दीवार कभी मत बनाओ।"

[24] Children of one's daughter

3 बात[25]

एक बार की बात है कि गिनी की खाड़ी के ऊपर अकरा शहर[26] के पास एक गॉव में एक आदमी रहता था। एक दिन वह अपने बागीचे में याम[27] तोड़ने गया। वह उस याम को बाजार में बेचने के लिये ले जाना चाहता था।

जब वह याम खोद रहा था तो एक याम ने उससे कहा — "तो आखिर तुम यहॉ आ ही गये। तुमने मेरी कभी घास तो निकाली नहीं और आज तुम मुझे अपनी डंडी से खोदने के लिये यहॉ आ गये। जाओ और मुझे यहीं छोड़ दो।"

किसान मुड़ा और मुड़ कर आश्चर्य से अपनी गाय की तरफ देखा। गाय अपना खाना खा रही थी और उसकी तरफ देख रही थी।

किसान ने उससे पूछा — "क्या तुमने मुझसे कुछ कहा?"

गाय चरती रही। वह कुछ नहीं बोली।

---

[25] Talk (Tale No 3) – a folktale from Ghana, West Africa.

[26] Accra is the capital of Ghana, West Africa

[27] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries. See its picture above.

पर उस आदमी का कुत्ता बोल पड़ा — “वह गाय नहीं थी जो तुमसे बोली। वह तो याम था। उसने तुमसे कहा था कि तुम उसको वहीं छोड़ दो।”

यह सुन कर वह आदमी तो नाराज हो गया क्योंकि उसका कुत्ता पहले तो कभी नहीं बोला था आज उसे क्या हो गया था। और फिर उसको उसके बोलने का ढंग भी कुछ अच्छा नहीं लगा।

उसने अपना चाकू लिया और अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम के पेड़ की एक शाख काटी तो वह पाम का पेड़ बोला — “इस शाख को नीचे रख दो।”

जब उसने यह सुना तो वह बहुत ही परेशान हुआ क्योंकि आज तो उसके साथ ये सब घटनाऐं बड़ी अजीब सी हो रही थीं।

पाम के पेड़ की बात सुन कर उस किसान ने वह पाम की शाख फेंकनी चाही तो पाम की शाख बोली — “ओ किसान, ज़रा धीरे से।”

सो उसने वह शाख धीरे से एक पत्थर पर रख दी। तो पत्थर बोला — “ए किसान, मेरे ऊपर से यह चीज़ उठाओ। यह तुमने क्या रख दिया मेरे ऊपर।”

किसान के लिये बस इतना काफी था। वह वहाँ से उठा और अपने गाँव की तरफ भाग लिया।

रास्ते में उसको एक मछियारा मिल गया। उसने किसान को जब इस तरह भागते देखा तो उससे पूछा — "क्या हो गया है तुमको? तुम इतनी जल्दी में क्यों हो?"

वह किसान बोला — "आज मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

मछियारे अपना मछली पकड़ने वाला जाल ले कर जा रहा था। वह बोला — "बस इतनी सी बात? बस इसी ज़रा सी बात ने तुमको इतना डरा दिया?"

मछियारे का जाल बोला — "फिर क्या इसने उस पाम की शाख को वहाँ से हटाया?"

मछियारा बोला — "वाह तुम भी बोले।" उसने भी अपना मछली पकड़ने वाला जाल नीचे जमीन पर फेंक दिया और किसान के साथ साथ वह भी भाग लिया।

रास्ते में उनको एक कपड़ा बुनने वाला मिल गया। उसके सिर कपड़ों की एक गठरी रखी थी। किसान और मछियारे को भागता

देख कर उसने उनसे पूछा — "तुम लोग इतनी जल्दी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?"

किसान बोला — "आज मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

उसके बाद मछियारा बोला — "उसके बाद मेरा मछली पकड़ने वाला जाल भी बोला "क्या इसने उस पाम की शाख को वहाँ से हटाया?"

कपड़ा बुनने वाला बोला — "पर इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है? यह तो कोई बात न हुई।"

तभी उसकी कपड़ों की गठरी बोली — "ओह, परेशान होने की बात तो है। अगर ऐसा तुम्हारे साथ होता तो तुम भी ऐसे ही भागते।"

कपड़ा बुनने वाला चिल्लाया — "अरे तुम भी।"

उसने अपनी कपड़े की गठरी सड़क से दूर फेंकी और वह भी किसान और मछियारे के साथ साथ भाग लिया।

भागते भागते वे एक नदी के किनारे आये तो वहाँ उनको एक आदमी नहाता हुआ मिल गया। उसने उनको इस तरह भागते हुए देखा तो उनसे पूछा — "क्या तुम लोग किसी हिरन का पीछा कर रहे हो?"

किसान हाँफते हुए बोला — "आज मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

उसके बाद मछियारा बोला — "उसके बाद मेरा मछली पकड़ने वाला जाल बोला "क्या इसने उस पाम की शाख को वहाँ से हटाया?"

उसके बाद कपड़ा बुनने वाला बोला — "और मेरी कपड़े की गठरी भी बोली "ओह परेशान होने की बात तो है। अगर ऐसा तुम्हारे साथ होता तो तुम भी ऐसे ही भागते।"

नदी में नहाता हुआ आदमी बोला — "अरे क्या तुम सब लोग केवल इसी लिये भाग रहे हो?"

नदी बोली — "तो क्या तुम नहीं भागते अगर तुम्हारे साथ ऐसा हुआ होता तो?" यह सुन कर वह नहाता हुआ आदमी भी नदी में से कूद कर बाहर आ गया और उन तीनों के साथ साथ भागने लगा।

भागते भागते वे एक बड़ी सड़क पर आ गये। वह सड़क गाँव के सरदार के घर की तरफ जाती थी सो वे सब सरदार के घर आये। सरदार के नौकरों ने अन्दर से एक स्टूल ला दिया तो सरदार उनकी शिकायतें सुनने के लिये उस स्टूल पर बैठ गया।

सबसे पहले आदमी ने कहना शुरू किया — "आज मैं अपने खेत से याम उखाड़ने गया तो मेरे आस पास की सब चीज़ों ने बोलना शुरू कर दिया। मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

उसके बाद मछियारा बोला — "उसके बाद मेरा मछली पकड़ने वाला जाल बोला "क्या इसने उस पाम की शाख को वहाँ से हटाया?"

उसके बाद कपड़ा बुनने वाला बोला — "और मेरी कपड़े की गठरी भी बोली "ओह परेशान होने की बात तो है। अगर ऐसा तुम्हारे साथ होता तो तुम भी ऐसे ही भागते।"

नदी में नहाता हुआ आदमी अपनी फटी हुई आवाज में बोला — "मैं नदी में नहा रहा था तो मेरी नदी भी बोली "तो क्या तुम नहीं भागते अगर तुम्हारे साथ ऐसा हुआ होता तो?"

सरदार ने उन सबकी बात आराम से सुनी तो पर वह भी कुछ गुस्सा हुए बिना न रह सका। वह कुछ गुस्से से बोला — "यह कहानी तो बहुत ही अजीब है। ऐसा करो तुम लोग सब अपने अपने काम पर जाओ और मुझे चैन से रहने दो वरना मैं तुम सबको सजा दूँगा।"

यह सुन कर वे सब चले गये। सरदार ने भी अपना सिर हिलाया और अपने आप से बोला — "यह सब बेकार की बातें लोगों को परेशान तो करती ही हैं।"

कि तभी उसका स्टूल बोला — "बहुत बढ़िया। ज़रा सोचो तो एक बात करता हुआ याम।" यह सुन कर सरदार भी उस स्टूल पर से उठ कर खड़ा हो गया और अन्दर अपने घर में भाग गया।

4 वह जिसे तुम आते नही देखते[28]

वे लोग जो देश के बारिश वाले जंगल[29] के आस पास कैवेली नदी के आस पास रहते थे वे हमेशा ही एक जानवर की बात किया करते थे – "जिसे तुम आते नहीं देखते"।

उनका कहना था कि — "वह रात होने के इन्तजार में सारा दिन ऊँचे ऊँचे पेड़ों की छाया में इधर उधर घूमता रहता है। और फिर जब अँधेरा हो जाता है तो वह चुपचाप चीता[30] बन कर गॉव में चला आता है।

हमारे सबसे अच्छे शिकारियों ने इस जानवर को पकड़ने की बहुत कोशिश की है। उन्होंने उसके आने जाने के रास्तों पर और पानी पीने की जगहों पर जाल बिछाये पर उसका कोई फायदा नहीं हुआ। वह पकड़ा नहीं जा सका।

वह जंगल के सारे जानवरों में सबसे ज़्यादा सावधान जानवर है। वह हर रात हमारे घर आता है पर उसका आना न किसी को सुनायी पड़ता है और न दिखायी पड़ता है।"

---

[28] The One You Don't See Coming (Tale No 4) – a folktale from Ghana, West Africa.

[29] Translated for the words "Rain Fortest"

[30] Translated for the word "Leopard" – it is a tiger-like animal. See its picture above.

नौजवान लोगों ने पूछा — "पर वह जानवर करता क्या है जो हम उससे डरें?"

बड़े लोगों ने कहा — "वह जिसको तुम आते नहीं देखते वह एक बहुत बड़ा चोर है। वह हर एक का दिमाग चुरा लेता है इससे वह आदमी सुबह तक के लिये सब कुछ भूल जाता है।

एक पल को लोग सोचते हैं कि वे यहीं थे और बस हाल फिलहाल की बातें करते रहते हैं। अगले पल ही वह जिसको तुम आते नहीं देखते वह उनके ऊपर आ जाता है और उनका दिमाग चुरा कर ले जाता है।

फिर वे न बात कर पाते हैं और न सोच पाते हैं। वे बस बिना हिलेडुले लेट जाते हैं और सुबह सूरज निकलने तक ऐसे ही पड़े रहते हैं।"

नौजवानों ने पूछा — "तो फिर हमारे ये कुत्ते किस काम के हैं अगर ये उसको महसूस करके या सुन कर भौंक नहीं सकते?"

"वे न उसको सुन पाते हैं और न ही उसको सूँघ पाते हैं। वह जब आता है तब वह उनका भी दिमाग ले लेता है। जिसको तुम आते नहीं देखते उसका एक दूसरा नाम भी है। कुछ लोग उसको "नींद" के नाम से भी बुलाते हैं।"

कुछ देर तक नौजवान लोग इस अजीब से जानवर के बारे में बात करते रहे। फिर एक दिन बियाफू[31] नाम के एक आदमी ने

---

[31] Biafu – a man's name

कहा — "हम लोग फिर किस तरह के शिकारी हैं अगर हम जिसको तुम आते नहीं देखते को नहीं मार सकते?"

एक दूसरा शिकारी जिसका नाम गुन्डे[32] था बोला — "यह कहना बहुत आसान है। पर तुम उसको पाओगे कहाँ? हमारे बाप दादा भी बहुत अच्छे शिकारी थे पर वे भी उसको नहीं पकड़ सके।"

एक और आदमी डीबा[33] बोला — "मैंने सुना है कि वह अपने पाँवों के निशान भी नहीं छोड़ता फिर तुम किसको देख कर उसका पीछा करोगे?"

बियाफू बोला — "जैसा के बड़े लोग कहते हैं अगर वह वाकई जंगल में रहता है तो हम उसको पा सकते हैं। हम लोग उसको वहीं पकड़ कर हमेशा के लिये खत्म कर देंगे।"

गुन्डे बोला — "मैं नहीं डरता।"

डीबा बोला — "मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। हम इस चीज़ को पकड़ेंगे जिसको तुम लोग आते नहीं देखते या नींद कहते हो और उसको खत्म कर देंगे। तब बड़े लोग हमारी तारीफ करेंगे और हम को भेंटें भी देंगे।"

सो गुन्डे डीबा और बियाफू तीनों ने अपने अपने शिकारी चाकू और भाले लिये और जंगल में बहुत दूर तक चले गये।

---

[32] Gunde – a name of a man

[33] Deeba – a name of a man

वहाँ जा कर उन्होंने सुनने की कोशिश की पर उनको कुछ सुनायी नहीं दिया। उन्होंने उसके पाँवों के निशान देखने के लिये काफी दूर दूर तक जमीन भी देख डाली पर उनको उसका कोई पाँव का निशान भी नहीं मिला। नींद ने अपना कोई निशान ही नहीं छोड़ा था।

वे सारे दिन नींद को ढूँढते ढूँढते जंगल के एक ऐसे हिस्से में आ गये जहाँ गाँव वाले शायद ही कभी गये हों।

वहाँ आ कर बियाफू बोला — "वह यहीं पर इन ऊँची ऊँची फर्न के पेड़ों में किसी जगह छिपा होगा।"

डीबा बोला — "मुझे तो वह कहीं दिखायी नहीं दे रहा।"

गुन्डे बोला — "मुझे तो वह कहीं सुनायी भी नहीं दे रहा।"

"अगर वैसा जानवर सचमुच में ही कहीं है तो हम उसको किसी पानी के गड्ढे के पास जरूर ही पकड़ लेंगे क्योंकि वह पानी पीने तो आयेगा ही।"

इसी तरह से बातें करते करते वे ऊँची ऊँची फर्न में से होते हुए और आगे चल दिये। आगे आ कर वे एक नदी के पास आये जो जंगल में से हो कर बहती थी। उस नदी के किनारे पर हिरन, बारहसिंगे, भैंसे और चीतों के पाँवों के निशान थे।

बियाफू बोला — "हम लोग उसका यहीं इन्तजार करते हैं और जब वह यहाँ पानी पीने आयेगा तब हम उसको मार देंगे।"

उसने नदी के किनारे एक ऊँचा सा पेड़ ढूँढा। वह पेड़ पानी की तरफ को झुका हुआ था। अगर कोई जानवर वहाँ पानी पीने आता तो वह उसकी शाखाओं के नीचे आ जाता।

बियाफू डीबा से बोला — "तुम पेड़ पर चढ़ जाओ और जब वह नींद यहाँ पानी पीने आये तो तुम उसकी पीठ पर कूद पड़ना और फिर हम लोग उसको मार देंगे।"

डीबा ने ऊपर देखा और कुछ देर सोच कर बोला — "अच्छा होगा कि तुम पेड़ पर चढ़ जाओ।"

बियाफू बोला — "नहीं। गुन्डे और मैं यहीं नीचे उसको देखेंगे। और जब हम तुम्हारे चिल्लाने की आवाज सुनेंगे तो हम भागे भागे आ जायेंगे।"

डीबा ने ना में सिर हिलाया तो बियाफू गुन्डे से बोला — "तब तुम पेड़ पर चढ़ जाओ और वहाँ उसका इन्तजार करो। जब नींद पानी पीने आये तब तुम उसके ऊपर कूद सकते हो और डीबा और मैं भागते हुए आ जायेंगे।"

गुन्डे ने भी कुछ पल सोचा और उसने भी अपना सिर ना में हिला दिया। वह बोला — "मैं तो धरती पर रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

इस पर बियाफू गुस्सा हो गया और बोला — "तुम लोग कैसे ताकतवर शिकारी हो। तुम एक ऐसे जानवर से डर रहे हो जिसको तुम देख भी नहीं सकते।"

डीबा बोला — "तुम भी तो डर रहे हो। क्या हो अगर वह पेड़ पर चढ़ना पसन्द करता हो तो?"

गुन्डे भी बोला — "हॉ हॉ, क्या हो अगर वह पेड़ पर चढ़ना पसन्द करता हो तो?"

वे तीनों काफी देर तक बहस करते रहे। आखीर में बियाफू ने पैर पटके और बोला — "ठीक है। मैं ही पेड़ पर चढ़ जाऊॅगा और फिर वहीं उसका इन्तजार करूॅगा। जब तुम मेरा चिल्लाना सुनो तो जल्दी से चले आना।"

सो वह पेड़ पर चढ़ गया और उस पेड़ की जो शाखाऐं पानी की तरफ को लटकी हुई थीं उनकी पत्तियों में छिप कर बैठ गया। गुन्डे और डीबा घनी झाड़ियों में छिप गये और वे वहॉ उसका इन्तजार करने लगे।

कुछ समय गुजरा। एक बारहसिंगा उधर पानी पीने आया। उसने पानी पिया और चला गया। रात हो गयी। उल्लू चिल्लाने लगे। फिर कुछ चीते पानी पीने के लिये आये और चले गये।

बियाफू अपने हाथ में अपना चाकू कस कर पकड़े अपनी शाख से चिपका बैठा रहा। गुन्डे अैर डीबा झाड़ियों मे छिपे बैठे थे और बियाफू के चिल्लाने का इन्तजार कर रहे थे। रात बीतती जा रही थी और चॉद आसमान पार कर के दूसरी तरफ जा रहा था।

बियाफू तो यही सोच कर बहुत खुश हो रहा था कि बड़े लोग कितने खुश होंगे जब वे लोग जिसको तुम आते नहीं देखते को

पकड़ कर गॉव ले जायेंगे। पर वह बैठे बैठे बहुत थक भी गया था। नींद से उसकी ऑखें झुकी जा रही थीं।

उसने पल भर के लिये एक बार झपकी मारी। पर वे फिर बन्द होने लगीं। अबकी बार वे कुछ देर ज़्यादा के लिये बन्द हुईं। उसको लगा कि उसका दिमाग रात में निकला जा रहा है।

उसने हिल कर अपने आपको जगाया और उसका दिल बहुत जोर जोर से धड़कने लगा। उसको लगा कि वह जानवर कहीं पास में ही था। उसने अपना चाकू हवा में हिलाया और चिल्लाया — "मैंने तुमको देख लिया, मैंने तुमको देख लिया।"

डीबा और गुन्डे भी अपनी झाड़ियों में से निकल आये और बोले — "कहॉ है वह? कहॉ है वह?"

बियाफ़ू बोला — "वह आया था पर फिर वह भाग गया। तुम लोग अपनी अपनी छिपने की जगह चले जाओ और अभी और इन्तजार करो।"

डीबा और गुन्डे दोनों अपनी अपनी झाड़ियों में चले गये। बियाफ़ू अब जिसको तुम आते नहीं देखते के इन्तजार में बिल्कुल सीधा हो कर बैठ गया।

वह ॲंधेरे में नदी की तरफ इधर उधर झॉक झॉक कर देखता रहा पर उसको दूर उल्लुओं और मेंढकों की आवाज के अलावा और कुछ सुनायी नहीं दिया। चॉद अभी भी आसमान के दूसरी तरफ जा रहा था।

एक बार फिर से बियाफू के दिमाग पर सुस्ती सी छाने लगी। उसने बहुत चाहा कि वह अपनी ऑख खोल कर रखे पर वे बन्द ही होती रहीं। एक पल को तो वह सब कुछ भूल ही गया था। उसे लगा कि वह तैरता हुआ कहीं और चला जा रहा था। पेड़ भी हवा में तैर कर कहीं जा रहे थे।

बियाफू ने पेड़ की शाख फिर से कस कर पकड़ ली और अपनी ऑखें खोलीं। उसने फिर से अपना चाकू हवा हिलाया और चिल्लाया — "मैंने तुमको देख लिया, मैंने तुमको देख लिया।"

डीबा और गुन्डे फिर झाड़ी में से अपने भाले लिये हुए तुरन्त ही बाहर निकल कर आये और ॲधेरे में देखते हुए पूछा — "कहॉ है वह? कहॉ है वह?"

बियाफू बोला — "वह यहीं पास में है। वह यहॉ पेड़ के पास आया था। उसने मुझे पकड़ लिया था पर मैंने उसे झटक दिया।

अभी तुम वापस जाओ और जा कर फिर से अपनी झाड़ी में छिप जाओ। मुझे उम्मीद है कि अगली बार हम उसको जरूर ही पकड़ लेंगे। पर देखो दूर मत जाना और इस बार मैं तुम्हें जैसे ही पुकारूॅ जल्दी से भाग कर आ जाना।"

यह सुन कर डीबा और गुन्डे फिर से झाड़ी में छिपने चले गये।

बियाफू अपने आपको जगा हुआ रखने के लिये अपने आपसे बोलता रहा और अपनी ऑखें मलता रहा। वह उस उत्सव के बारे

में सोच रहा था जो इस जानवर को पकड़ने पर गॉव में मनाया जायेगा।

तभी एक बादल ने आसमान में इधर से उधर चल कर चॉद को ढक लिया। इससे बहुत ॲधेरा हो गया। हवा बिल्कुल बन्द थी। पत्तियॉ का खड़कना भी बन्द हो चुका था। उल्लुओं ने भी बोलना बन्द कर दिया था। मेंढकों ने भी टर्राना बन्द कर दिया था।

धीरे धीरे फिर से बियाफू की ऑखें बन्द होने लगीं। उसकी याद फिर से रात में खिसकने लगी। उसको नींद आने लगी। धीरे धीरे उसके हाथ शाख पर से ढीले पड़ने लगे। धीरे धीरे उसका सिर नींद की वजह से नीचे की तरफ झुकने लगा।

बियाफू के हाथ से उसका चाकू खिसक गया और नीचे पानी में गिर पड़ा। नींद उसके ऊपर हावी होने लगी और वह इधर उधर गिरने लगा। अचानक बियाफू सो गया और नीचे नदी में गिर पड़ा।

गिरते गिरते वह चिल्लाया — "डीबा, गुन्डे, उसने मुझे पकड़ लिया है।"

यह सुन कर डीबा और गुन्डे वहॉ इस उम्मीद से आये कि वे उस जानवर से बहुत जोर की लड़ाई लड़ेंगे पर उनको बहुत देर हो चुकी थी। उन्होंने केवल बियाफू को ही देखा। नींद वहॉ नहीं था।

जैसे ही बियाफू पानी से बाहर निकल कर आया तो वे चिल्लाये — "कहॉ है वह? कहॉ है वह?"

बियाफू बोला — “वह पेड़ पर चढ़ आया था और उसने मुझे पानी मे नीचे फेंक दिया।” कह कर वह नदी के किनारे दुखी हो कर बैठ गया और सोचने लगा कि यह सब क्या था।

वह बहुत देर तक चुपचाप रहा फिर डीबा और गुन्डे से कहा — “नींद को ढूँढने से कोई फायदा नहीं है। हमारे बड़े लोग ठीक ही कहते हैं।

क्योंकि वह कोई चीते जैसा जानवर तो है नहीं जो हमारी बकरियाँ चोरी कर के ले जाये और फिर उनको वापस न ले कर आये। नींद तो बस जो कुछ भी चुराता है वह केवल कुछ घंटे के लिये ही चुराता है। क्योंकि जब सुबह होती तो तुम सब लोग फिर से ठीक होते हो।”

सो सब शिकारियों ने अपने अपने हथियार उठाये, दावत के लिये एक बारहसिंगा मारा और उसको अपनी पीठ पर लाद कर घर ले आये। बारहसिंगे को देख कर सब बड़े लोग बहुत खुश हुए पर फिर भी उन्होंने नींद के बारे में पूछा।

डीबा बोला — “हमने उसको करीब करीब देख लिया था।”

बियाफू बोला — “मैं तो उस से पेड़ के ऊपर लड़ा भी पर मैं उसको पकड़ नहीं सका।”

गुन्डे बोला — “उसने बियाफू को तो नीचे नदी में फेंक ही दिया था।”

बियाफू बड़ी शान से बोला — "इसीलिये मैं कहता था कि तुम लोग नींद को आते हुए नहीं देख सकते। तुम उसको करीब करीब तो देख सकते हो पर सचमुच में नहीं।"

5 मजबूत कासा[34]

एक बार मैन्डे[35] लोगों में एक बहुत ही ताकतवर आदमी था जिसका नाम था कासा केना गेनानीना[36]। वह कहता था — "मैं एक मजबूत आदमी हूँ – दुनियाँ का सबसे ज़्यादा मजबूत आदमी। और मैं किसी से डरता भी नहीं हूँ।"

एक दिन कासा दो दूसरे नौजवानों के साथ शिकार करने के लिये जंगल गया। उनके नाम थे ईरी बा फारब और कौंगों ली बा जैलैमा[37]। ईरी और कौंगो दोनों के पास शिकार करने के लिये बन्दूकें थीं पर कासा के पास केवल लोहे का एक डंडा था।

ईरी और कौंगो शिकार की तलाश में जंगल में बहुत इधर उधर घूमे पर उनको कोई शिकार नहीं मिला। पर कासा बहुत तेज़ था और मजबूत भी था। उसने अपने लोहे के डंडे से ही **20** बड़े बड़े बारहसिंगे मारे।

वह उनको एक खुली जगह ले आया जहाँ ईरी और कौंगो उसका इन्तजार कर रहे थे। कासा बोला — "यह रहा माँस। अब यह बताओ कि जंगल में आग जलाने के लिये लकड़ी लेने कौन जायेगा।"

---

[34] Strong Kassa (Tale No 5) – a folktale from Ghana, West Africa.

[35] Mende people – a large tribe whose territory stretches over large area in Northwestern Africa

[36] Kassa Kena Genanina – the name of a man

[37] Iri Ba Farra and Congo Li Ba Jelema – both are the names of Ghanaian men

ईरी और कौंगो दोनों ही जंगल में अकेले जाने से डरते थे सो कासा ने ईरी से कहा — "ऐसा करो तुम यहाँ रह कर इस माँस की रखवाली करो ताकि इसको जंगल का कोई जानवर चुरा कर न ले जाये और मैं और कौंगो दोनों जंगल में आग जलाने के लिये लकड़ी लेने के लिये जाते हैं।"

सो कासा और कौंगो तो जंगल में आग जलाने के लिये लकड़ी लाने चले गये और ईरी वहाँ माँस की रखवाली के लिये अकेला रह गया।

जब वह उस माँस की रखवाली कर रहा था तो वहाँ आसमान से उड़ती हुई एक बहुत बड़ी चिड़िया आयी और बोली — "मुझे बहुत भूख लगी है। अब मुझे यह बताओ कि मैं तुमको ले जाऊँ या इस माँस को ले जाऊँ?"

वह बड़ी चिड़िया बहुत डरावनी थी। ईरी डर गया और बोला — "तुम माँस ले जाओ।" उस चिड़िया ने एक बारहसिंगा उठाया और उसको ले कर उड़ गयी।

जब कासा और कौंगो वापस आये तो ईरी ने उनसे कहा — "जब तुम लोग गये हुए थे तो यहाँ एक बहुत बड़ी चिड़िया आयी और बोली "मैं तुमको ले जाऊँ या इस माँस को ले जाऊँ?" तो मैंने कह दिया कि तुम यह माँस ले जाओ।"

इस पर कासा बहुत नाराज हुआ और बोला — "तुमको उसको एक बारहसिंगा नहीं देना चाहिये था। तुमको कहना चाहिये था कि "तुम मुझे ले जाओ।"

अगले दिन कासा फिर से जंगल में आग जलाने वाली लकड़ी लेने गया तो इस बार वह ईरी को अपने साथ ले गया और कौंगो को मॉस की रखवाली के लिये छोड़ गया।

जब कौंगो उस मॉस की रखवाली कर रहा था तो वहाँ वही बहुत बड़ी चिड़िया आयी और बोली — "मुझे भूख लगी है। अब मुझे यह बताओ कि मैं तुमको ले जाऊँ या इस मॉस को ले जाऊँ?"

वह बड़ी चिड़िया बहुत डरावनी थी। उसको देख कर कौंगो भी डर गया और बोला — "अगर तुम इतनी ही भूखी हो तो तुम मॉस ले जाओ।" उस चिड़िया ने फिर एक बारहसिंगा उठाया और उसको ले कर उड़ गयी।

जब कासा और ईरी वापस आये तो ईरी ने उनसे कहा — "जब तुम लोग गये हुए थे तो यहाँ एक बहुत ही बड़ी चिड़िया आयी और बोली "मुझे बहुत भूख लगी है। मैं तुमको ले जाऊँ या इस मॉस को ले जाऊँ?" तो मैंने कह दिया कि तुम यह मॉस ले जाओ।"

कासा बोला — "तुमको उसको एक बारहसिंगा नहीं देना चाहिये था। तुमको कहना चाहिये था "तुम मुझे ले जाओ।" पर ठीक है कल मॉस की रखवाली मैं करूँगा।"

अगले दिन ईरी और कौंगो जंगल में आग जलाने वाली लकड़ी लेने चले गये और कासा मॉस की रखवाली के लिये रह गया। जब वे चले गये तो आसमान से उड़ती हुई वह बड़ी चिड़िया फिर वहाँ आयी।

वह बोली — "मुझे भूख लगी है। अब मुझे यह बताओ कि मैं तुमको ले जाऊँ या इस मॉस को ले जाऊँ?"

कासा कूद कर खड़ा हो गया और चिल्ला कर बोला — "मेरा नाम कासा केना गेनानीना है – सबसे ज़्यादा मजबूत ज़िन्दा आदमी। तुम यहाँ से किसी को ले कर नहीं जाओगी – न तो इस मॉस को और न ही मुझे।"

कह कर उसने अपना लोहे का डंडा पकड़ लिया और उसको फेंक कर उस बड़ी चिड़िया को मारा। चिड़िया उड़ी पर वह डंडा उसको लग गया और वह मर कर नीचे जमीन पर गिर पड़ी।

पर उसके शरीर से एक छोटा सा पंख निकल गया और हवा में उड़ गया। वह पंख नीचे की तरफ उड़ा और कासा के कन्धे पर आ कर बैठ गया।

वह पंख बहुत भारी था। उसने कासा को नीचे गिरा दिया। कासा पेट के बल गिर पड़ा। पंख अभी भी उसके ऊपर था। पंख इतना ज़्यादा भारी था कि कासा तो हिल भी नहीं सका। कासा ने उठने की बहुत कोशिश की पर उस पंख ने उसको दबा कर रखा हुआ था।

काफी देर बाद एक स्त्री वहाँ से अपने बच्चे को अपनी पीठ पर बाँधे निकली तो कासा ने उससे कहा — "मेरे साथी जंगल में बैठे हैं उनको बुला दो ताकि वे मेरे उठने में मेरी सहायता कर सकें।"

वह जंगल में गयी और ईरी और कौंगो को कासा का सन्देश दिया तो वे दोनों वहाँ भागे आये जहाँ कासा लेटा हुआ था।

पहले कौंगो ने उस पंख को उठाने की कोशिश की पर वह बहुत भारी था। फिर ईरी ने उसको उठाने की कोशिश की पर उसके लिये भी वह बहुत भारी था। फिर दोनों ने उसको उठाने की कोशिश की पर वे दोनों मिल कर भी उसको हिला न भी सके।

वह स्त्री वहीं खड़ी यह सब देख रही थी। फिर वह झुकी तो उसने फूँक मार कर कासा के कन्धे से वह पंख उड़ा दिया। उसने वह मरी हुई चिड़िया भी जमीन पर से उठायी और अपनी पीठ पर बँधे बच्चे के हाथ में एक खिलौने की तरह दे दी और वहाँ से चली गयी।

6 अनन्सी मछली पकड़ने चला[38]

एक बार अशान्ती देश[39] में जंगल के किनारे के पास एक आदमी रहता था जो मीलों तक सब लोगों में बहुत मशहूर था। उसका नाम था अनन्सी।

अनन्सी कोई बहुत बड़ा शिकारी नहीं था या कोई बहुत बड़ा काम करने वाला नहीं था या फिर कोई बहुत बड़ा लड़ने वाला भी नहीं था। उसकी खासियत तो बस उसकी चतुराई में थी।

वह बहुत चतुर था। वह सबको अपनी चतुराई से जीत लेता था। वह अच्छी तरह रहना चाहता था पर चाहता था कि दूसरे लोग उसके लिये काम करें।

पर क्योंकि देश के सभी लोग अनन्सी को जानते थे और उसकी वजह से मुश्किल में फॅस चुके थे तो उसको अब उनको बेवकूफ बनाने का कोई और तरीका निकालना था।

एक दिन अनन्सी गॉव में बैठा हुआ था कि उसके पास ओसान्सा[40] नाम का एक आदमी आया तो अनन्सी उससे बोला — "मेरे दिमाग में एक विचार आया है क्यों न हम लोग अपने मछली

---

[38] Anansi's Fishing Expedition (Tale No 6) – a folktale from Ghana, West Africa.

[39] Long before Ghana was known as Gold Coast. Ashanti was a large gribe there and ruled the Ashanti Kingdom which was named on that tribe.

[40] Osansa – a name of a man

पकड़ने के जाल साथ साथ डालें? फिर हम उन मछलियों को बाजार में बेच लेंगे और अमीर हो जायेंगे।"

पर ओसान्सा अनन्सी की साख अच्छी तरह जानता था सो वह बोला — "नहीं अनन्सी भाई नहीं। मेरे पास तो अभी काफी खाना है, खाने के लिये भी और बेचने के लिये भी। तुम अपना मछली पकड़ने का जाल अपने आप ही क्यों नहीं फेंकते?"

अनन्सी जोर से हँसा और बोला — "मछली पकड़ना और अकेले? तब तो मुझ अकेले को ही सारा काम करना पड़ेगा। मुझे तो एक बेवकूफ साथी की जरूरत है जो मेरा सारा काम करे और मछली बेच कर अमीर मैं बनूँ।"

यह सुन कर ओसान्सा वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद एक और आदमी वहाँ आया। उसका नाम अनेने[41] था।

अनन्सी उससे भी बोला — "मेरे दिमाग में एक विचार आया है क्यों न हम लोग अपने मछली पकड़ने के जाल साथ साथ डालें? फिर हम उन मछलियों को बाजार में बेच लेंगे और अमीर हो जायेंगे।"

हालाँकि अनेने भी अनन्सी को बहुत अच्छी तरह जानता था पर उसने अनन्सी की बात बड़े ध्यान से सुनी और बोला — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है। दो लोग एक आदमी से बहुत ज्यादा मछली पकड़ सकते हैं। चलो मैं तैयार हूँ।"

---

[41] Anene – a name of a man

यह खबर बहुत जल्दी ही चारों तरफ फैल गयी कि अनन्सी और अनेने दोनों एक साथ मछली पकड़ने जा रहे हैं।

ओसान्सा अनेने से बाजार में मिला और बोला — "हमने सुना है कि तुम अनन्सी के साथ मछली पकड़ने जा रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि वह तुम्हारा बेवकूफ बनाने जा रहा है?

वह तो हर एक से यही कहता है कि उसको मछली पकड़ने के लिये साथ जाने के लिये एक बेवकूफ की जरूरत है।

असल में उसको कोई ऐसा आदमी चाहिये जो उसके लिये जाल फेंक सके और और भी कई सारे काम कर सके जबकि पकड़ी हुई मछली बेच कर उसके सारे पैसे वह खुद ले सके।"

अनेने बोला — "तुम चिन्ता मत करो दोस्त ओसान्सा। अनन्सी मुझे बेवकूफ नहीं बना पायेगा।"

अगले दिन अनन्सी और अनेने दोनों मछली पकड़ने का जाल बनाने के लिये जंगल में पाम के पेड़ की कुछ शाखाऐं काटने गये। अनन्सी तो सारे रास्ते यही सोचता रहा कि वह अनेने से कैसे ज़्यादा से ज़्यादा काम ले सकता है।

सो जब वे दोनों जंगल में वहाँ पहुँचे जहाँ पाम के पेड़ उगे हुए थे तो अनेने बोला — "अनन्सी, तुम मुझे चाकू दे दो। मैं मछली के जाल बनाने के लिये पाम के पेड़ की शाखाऐं काटता हूँ।

हम लोग साथी हैं इसलिये हम सब चीज़ें साझेदारी में करेंगे। मेरा काम शाखाऐं काटने का है तुम्हारा काम मुझसे थक जाने का है।"

अनन्सी बोला — "ज़रा रुको। मुझे सोचने दो। मैं ही क्यों थकूँ?"

अनेने बोला — "जब कुछ काम करने के लिये होगा तो किसी न किसी को तो थकना ही होता है। यही तो तरीका है। सो अगर मैं शाखाऐं काटूँगा तो कम से कम तुम यही कर सकते हो कि तुम मेरे लिये थक ही जाओ।"

अनन्सी बोला — "क्या तुमने मुझे बेवकूफ समझ रखा है? लाओ चाकू मुझे दो मैं शाखाऐं काटता हूँ और तुम मेरे लिये थको।"

अनेने ने सीधे स्वभाव चाकू अनन्सी को दे दिया। अनन्सी ने चाकू लिया और पाम के पेड़ से उसकी शाखाऐं काटने लगा। हर बार जब भी वह कोई शाख काटता तो अनेने उसके ऊपर गुर्राता।

फिर अनेने छाया में बैठ गया और झूठी थकान की वजह से आह ओह करने लगा जब कि अनन्सी शाखाऐं काटता रहा और पसीने में भीगता रहा।

आखीर में जब सारी शाखाऐं कट गयीं तो अनन्सी ने उन सबको एक बड़े से गठ्ठर में बाँध लिया। अनेने भी अपनी कमर पकड़े कराहता हुआ जमीन पर से उठा और बोला — "अनन्सी,

लाओ लकड़ियों का यह गठ्ठर मैं ले चलता हूँ। अब तुम मेरे लिये थक सकते हो।"

अनन्सी बोला — "अरे नहीं नहीं मेरे दोस्त। अब मैं इतना भी बेवकूफ नहीं हूँ। मैं यह लकड़ी लिये चलता हूँ तुम मेरे लिये थकान ले कर चलो।"

सो अनेने ने वह लकड़ी का गठ्ठर अनन्सी के सिर के ऊपर रख दिया और दोनों गॉव की तरफ वापस चल दिये। अनेने रास्ते भर आह ओह करता रहा और अनन्सी से कहता रहा — "ओह अनन्सी धीरे से, सॅभाल के। आह।"

जब वे गॉव के पास आ गये तो अनेने बोला — "लाओ अनन्सी, अब मैं इन शाखाओं के मछली पकड़ने वाले जाल बनाता हूँ। तुम अब थोड़ी देर बैठ जाओ और मेरे लिये थकते रहो।"

अनन्सी बोला — "ओह नहीं अनेने। तुम उसी तरह से रहो जैसे हो। मैं ही जाल बना लूँगा।" और वह मछली पकड़ने वाला जाल बनाने बैठ गया। अनेने एक पेड़ की छाया में ऑखें बन्द करके लेट गया। वह वहॉ लेट कर आह ओह करता रहा जैसे कि वह बहुत थक गया हो।

अनन्सी गर्मी में बैठा बैठा जाल बनाता रहा। पसीना उसके चेहरे पर से टपक टपक कर उसकी छाती तक टपक रहा था। अनन्सी ने देखा कि अनेने बेचारा उसकी थकान और दुखती हुई

मॉस पेशियॉ ले कर वहॉ लेटा हुआ था। उसको उसके ऊपर तरस आने लगा कि वह उसकी थकान ले कर कितना परेशान था।

सो उसने अपना सिर हिलाया और अपनी जीभ काट ली। फिर अपने आपसे बोला — "अनेने सोचता है कि वह बहुत अक्लमन्द है। पर देखो तो वह बेचारा कितना दुखी हो कर लेटा हुआ है। लगता है कि वह तो थकान से मरा ही जा रहा है।"

जब मछली पकड़ने वाले जाल बन गये तो अनेने उठ खड़ा हुआ और बोला — "अनन्सी मेरे दोस्त, कम से कम अब तो मुझे इन जालों को पानी के पास ले जाने दो और अब तुम मेरे लिये थक जाओ। मैं बहुत थक गया हूॅ।"

अनन्सी बोला — "अरे नहीं नहीं अनेने, तुम बस मेरे साथ आ जाओ और अपने हिस्से का काम करते रहो। मैं इनको ले जाऊॅगा और तुम मेरे लिये थकते रहो।"

सो वे दोनों पानी के पास चले – अनन्सी जाल उठाये हुए और अनेने कराहते हुए। जब वे पानी के पास पहॅुच गये तो अनेने ने अनन्सी से कहा — "ज़रा सा रुको अनन्सी। अब हमको यहॉ पर कुछ विचार कर लेना चाहिये।

देखो यहॉ इस पानी में बहुत सारी शार्क मछलियॉ हैं। किसी को

भी यहॉ चोट लग सकती है इसलिये मेहरबानी कर के तुम मुझे पानी में जाने दो और वहॉ मछली पकड़ने के लिये जाल

बिछाने दो। क्योंकि अगर कोई शार्क मछली मुझे काटती भी है तो कम से कम तुम मेरे लिये मर तो सकते हो।"

अनन्सी ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "वाह। देखो अनेने, तुम एक बात कान खोल कर सुन लो। तुमने मुझे समझ क्या रखा है। मैं खुद पानी में जाऊँगा और मछली पकड़ने का जाल बिछाऊँगा। अगर कोई शार्क मुझे काट भी ले तो कोई बात नहीं, तुम मेरी जगह मर जाना।"

कह कर अनन्सी ने मछली पकड़ने के जाल उठाये और पानी के अन्दर चला गया। वहाँ उसने जाल बिछाये और जाल बिछा कर दोनों गाँव वापस आ गये।

अगली सुबह जब वे अपने जाल देखने के लिये गये तो जाल में केवल चार मछलियाँ थीं। अनेने जल्दी से बोला — "अनन्सी, यहाँ तो केवल चार ही मछलियाँ हैं। इनको तुम ले लो। कल शायद जाल में और ज़्यादा मछलियाँ फँस जायें तो कल मैं ले लूँगा।"

अनन्सी बोला — "तुम मुझे क्या समझते हो? क्या मैं इतना बेवकूफ हूँ इतना गया गुजरा हूँ? अनेने, तुम ये चारों मछलियाँ ले लो मैं अपना हिस्सा कल ले लूँगा।"

सो अनेने ने वे चारों मछलियाँ ले लीं और उनको वह शहर ले जा कर बाजार में बेच आया। अगले दिन जब वे मछली का जाल देखने आये तो उनको वहाँ आठ मछलियाँ मिलीं।

अनेने बोला — "मुझे खुशी है कि आज तुम्हारी बारी है क्योंकि मुझे यकीन है कि कल इससे भी ज्यादा मछलियाँ जाल में फँसेंगीं।"

अनन्सी बोला — "एक मिनट, एक मिनट, तो क्या तुम यह कहना चाहते हो कि आज की पकड़ी मछलियाँ मैं ले जाऊँ ताकि कल तुम मुझसे ज़्यादा मछलियाँ घर ले जा सको? ओह नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ये सब मछलियाँ तुम्हारी हैं, मेरे दोस्त। तुम इन सबको ले जाओ। मैं अपना हिस्से की मछलियाँ कल ले लूँगा।"

सो अनेने ने वे आठों मछलियाँ उठायीं और उनको शहर ले जा कर बेच आया। अगले दिन जब वे नदी पर आये तो उन्होंने देखा कि उनके जाल में 16 मछलियाँ फँसी हैं।

अनेने बोला — "मैंने कल कहा था न कि कल और ज्यादा मछलियाँ फँसेंगी सो देखो आज इन जालों में कल से दोगुनी मछलियाँ फँसी हैं। इसमें कुछ छोटी मछलियाँ भी हैं। मैं अपना हिस्सा कल ले लूँगा मेरी बात मानो आज इनको तुम ले जाओ।"

अनन्सी बोला — "हाँ ठीक है तुम अपना हिस्सा कल ले लेना। आज मेरी बारी है मछलियाँ लेने की।"

लेकिन फिर उसने कुछ सोचा और बोला — "तुम मेरा फिर से बेवकूफ बना रहे हो अनेने यह बात ठीक नहीं है। तुम चाहते हो कि मैं ये 16 छोटी छोटी मछलियाँ ले जाऊँ ताकि कल की बड़ी बड़ी मछलियाँ तुम ले जाओ।

नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यह तो अच्छा है कि मैं सावधान हूँ नहीं तो तुम तो मेरा बेवकूफ ही बना देते। आज तुम ये 16 मछलियॉ ले जाओ कल की मछलियॉ मैं ले जाऊॅगा।"

अनेने ने उस दिन की भी मछलियॉ उठायीं और उनको शहर के बाजार में जा कर बेच आया। अगले दिन वे फिर नदी पर अपना शिकार देखने के लिये आये और जाल में से मछलियॉ निकालने के लिये पानी में से जाल निकाला।

अनेने बोला — "अनन्सी भाई आज मछली ले जाने की तुम्हारी बारी है और आज मैं इस बात के लिये बहुत खुश हूँ।

देखो मछली पकड़ने के जाल तो अब फट गये हैं और सड़ भी गये हैं। अब हम इनको दोबारा इस्तेमाल नहीं कर सकते। मैं तुमको एक बात बताऊॅ – तुम ये मछलियॉ शहर ले जाओ और इनको बेच दो।

मैं ये सड़े हुए जाल ले लेता हूँ और इनको बेच दूँगा। ये सड़े हुए जाल तो बहुत ही अच्छी कीमत पर बिक जायेंगे। कितना अच्छा विचार है, है न?"

अनन्सी बोला — "हूँ। पर ज़रा रुको। इतनी जल्दी मत करो। अगर इनकी अच्छी कीमत मिलती है तो फिर ये मछली पकड़ने वाले जाल मैं ले लेता हूँ और इनको मैं खुद ही बेच लूँगा।

यह अच्छी कीमत तुम्हारी बजाय मुझे क्यों नहीं मिलनी चाहिये। दोस्त, तुम ये मछलियाँ ले जाओ और मैं ये मछली पकड़ने वाले जाल ले जाता हूँ।"

कह कर अनन्सी ने वे सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जाल खुद उठाये, अपने सिर पर रखे और शहर की तरफ चल दिया। अनेने भी अपनी मछलियाँ ले कर उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब वे शहर में आये तो अनेने ने तो अपनी मछलियाँ बाजार में बेच दीं पर अनन्सी ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ आगे पीछे घूमता रहा — "मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हूँ। मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हूँ।"

पर कोई भी उसके सड़े हुए मछली के जाल खरीदना नहीं चाहता था। बल्कि शहर के लोग तो उससे इसी बात पर बहुत गुस्सा हो गये कि अनन्सी ने उनको इतना बेवकूफ समझा कि वे उसके सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल खरीद लेंगे।

अनन्सी वहाँ सारा दिन गाता हुआ घूमता रहा — "मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हूँ। मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हूँ।"

आखिर शहर के सरदार ने अनन्सी को यह चिल्लाते सुना तो वह भी बहुत गुस्सा हुआ। उसने अनन्सी को लाने के लिये उसके पास अपने कुछ आदमी भेजे।

जब वे अनन्सी को पकड़ कर लाये तो सरदार ने उससे पूछा — “तुम क्या सोचते हो अनन्सी कि तुम क्या कर रहे हो? और यह क्या बदतमीजी है कि तुम ये सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जालों को शहर के लोगों के ऊपर लाद रहे हो।”

अनन्सी बोला — “मैं तो अपने सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जालों को बेच रहा हूँ। ये तो बहुत ही बढ़िया सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जाल हैं।”

सरदार बोला — “तुमने हमें समझा क्या है? और तुम क्या समझते हो कि हमको कुछ पता ही नहीं है? तुम्हारा दोस्त अनेने यहाँ आया था और वह हमें बहुत अच्छी मछलियाँ बेच गया है।

लोगों को वैसी ही मछलियाँ चाहिये थीं जैसी वह बेच गया था पर तुम तो ऐसी चीज़ बेच रहे हो जो किसी काम की नहीं। बल्कि वह तो शहर भर में बदबू फैला रही है। यह ठीक नहीं है। तुम हमारी बेइज़्ज़ती कर रहे हो।”

सरदार के पास ही शहर के लोग खड़े खड़े यह सब सुन रहे थे। वह उन सब लोगों से बोला — “ले जाओ इसको और ले जा कर इसको कोड़े लगाओ।”

वहाँ खड़े लोग अनन्सी को शहर के दरवाजे पर ले गये और उसको डंडों से खूब मारा। अनन्सी बहुत चिल्लाया, बहुत रोया. बहुत शोर मचाया तो आखिर उन्होंने उसको छोड़ दिया।

तब अनेने वहाँ आया और बोला — "अनन्सी, यह तो तुम्हारे लिये एक सबक था। तुम यह चाहते थे कि कोई बेवकूफ तुम्हारे साथ मछली पकड़ने के लिये जाये पर तुमने ठीक से देखा ही नहीं कि तुम किसको साथ ले जा रहे हो। तुम तो खुद ही बेवकूफ निकले।"

अनन्सी ने हाँ में सिर हिलाया। फिर कुछ सोचते हुए और अपनी पीठ और टाँगें जहाँ उसको डंडे पड़े थे सहलाते हुए पछताते हुए अनेने से कहा — "हाँ तुम ठीक कहते हो अनेने।

पर तुम किस तरह के साथी हो? कम से कम तुमको मेरी इतनी परवाह तो करनी ही चाहिये थी कि जब मैं पिट रहा था तब तुम मुझे आ कर बचा लेते।"

7 याउन्डे शहर चला[42]

एक बार घाना के आकीम प्रान्त[43] में समुद्र के किनारे से बहुत पीछे की तरफ की पहाड़ियों में याउन्डे[44] नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बहुत ही सीधा सादा आदमी था जो कभी अपने घर से दूर नहीं गया था।

उसने अपना सारा समय और दूसरे गाँव वालों की तरह से खेती करने और शिकार करने में ही गुजार दिया था।

उसने अक्सर बड़े शहर अकरा[45] की कहानियाँ सुनी थीं जो समुद्र के किनारे बसा हुआ था पर वह वहाँ कभी गया नहीं था। उसने वहाँ पर पायी जाने वाली दूसरी चीज़ों के बारे में भी सुना था पर वह तो अपने गाँव से अपने गाँव की नदी से ज़्यादा दूर कभी गया ही नहीं था सो अपने गाँव के बाहर का उसको कुछ पता ही नहीं था।।

पर एक दिन याउन्डे को अकरा जाना पड़ा। उसने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, अपना चाकू अपनी कमर की पेटी में लगाया, कुछ खाना एक कपड़े में लपेट कर अपने सिर पर रखा और अकरा की तरफ चल दिया।

---

[42] Younde Goes to Town (Tale No 7) – a folktale from Ghana, West Africa.
[43] Akim Province of Ghana
[44] Younde – a name of a man from Ghana
[45] Accra is the capital of Ghana.

वह कई दिनों तक चलता रहा। सड़क गर्म थी धूल से भरी थी। कुछ समय के बाद वह अपने प्रान्त से बाहर पहुँच गया। वहाँ के लोग उसकी अपनी भाषा आकीम नहीं बोलते थे।

वह अकरा के पास आता जा रहा था। उसको रास्ते में बहुत सारे लोग और गधे मिले जो या तो अकरा जा रहे थे या फिर वहाँ से आ रहे थे। उसने पहले कभी किसी सड़क पर इतने सारे लोग नहीं देखे थे।

फिर उसको बहुत सारी गायें सड़क के किनारे घास चरती हुई दिखायी दीं। उसने कभी इतनी सारी गायें तो अपनी ज़िन्दगी भर में नहीं देखी थीं। वह वहीं खड़ा हो गया और उन गायों को आश्चर्य से देखने लगा।

उसने देखा कि उन गायों को वहाँ एक छोटा सा लड़का चरा रहा था। वह उस बच्चे के पास गया और उसने उससे पूछा — "ये गायें किसकी हैं।"

पर वह बच्चा याउन्डे की भाषा नहीं समझ सका क्योंकि याउन्डे तो "आकीम" भाषा बोल रहा था जबकि अकरा में "गा" भाषा बोली जाती थी। लड़का बोला — "मीनू।" यानी मैं समझा नहीं।

याउन्डे ने सोचा "अच्छा मीनू। तो वह तो कितना बड़ा आदमी होगा जिसके पास इतने सारे जानवर होंगे।"

वह वहाँ से फिर से शहर की तरफ चल दिया। वह वहाँ जो कुछ भी देख रहा था उससे वह बहुत प्रभावित था। वहाँ से वह

एक बहुत बड़ी इमारत के पास आ गया और उसको देखने के लिये वह वहीं रुक गया।

वह इमारत पत्थर की बनी हुई थी और बहुत ऊँची थी। उसको देख कर याउन्डे ने आश्चर्य में अपना सिर हिलाया। इस तरह की कोई चीज़ उसके पहाड़ी गाँव में नहीं थी।

जब एक स्त्री उसको बाजार जाते समय रास्ते में मिली तो याउन्डे ने उससे कहा — "यह कितना बड़ा घर है। इस इमारत का मालिक भी कितना बड़ा आदमी होगा।"

पर वह स्त्री नहीं जानती थी कि याउन्डे क्या कह रहा था क्योंकि वह तो आकीम भाषा बोल रहा था और वह केवल "गा" भाषा ही समझती थी। उसने भी उसको वही जवाब दिया "मीनू।"

याउन्डे ने सोचा "अरे यह तो वही आदमी है, मीनू। इसका यह मतलब हुआ कि यह इमारत भी उसी आदमी की है। ओह तो यह मीनू तो कितना बड़ा आदमी होगा।"

जैसे जैसे वह शहर के बाजार की तरफ चलता गया वह और भी ज़्यादा आश्चर्यजनक चीज़ें देखता गया। अब वह बाजार में आ पहुँचा था। उसने जब बाजार देखा तो देखा कि यह बाजार तो उसके अपने गाँव से भी बड़ी जगह में फैला हुआ था।

वह जब उस बाजार के बीच से हो कर निकला तो उसने देखा कि वहाँ स्त्रियाँ ऐसा सामान बेच रही थीं जो उसके गाँव में नहीं मिलता था – जैसे लोहे के बर्तन और लोहे की चम्मचें।

याउन्डे ने एक छोटी सी लड़की से पूछा — "यह सब सामान आता कहाँ से है?"

वह लड़की उसकी तरफ देख कर मुस्कुरायी और बोली — "मीनू।"

अबकी बार याउन्डे चुप हो गया। हर एक चीज़ मीनू मीनू मीनू। मीनू वहाँ हर जगह मौजूद था।

वहाँ भीड़ बहुत थी। लोग एक दूसरे को धक्का दे दे कर चल रहे थे क्योंकि वह दिन बड़ा बाजार दिन था और हर दूसरा और तीसरा आदमी वहाँ या तो बेचने वाला था या फिर खरीदने वाला था। याउन्डे ने एक जगह पर इतने सारे लोग पहले कभी नहीं देखे थे।

वे कहानियाँ जो उसने अकरा के बारे में सुन रखी थीं वे यहाँ के हाल से मेल नहीं खाती थीं। कहानियाँ तो उसके सामने कुछ भी नहीं थीं जो कुछ वह यहाँ देख रहा था।

वहीं एक बूढ़ा जा रहा था जिसकी बगल में एक ढोल दबा हुआ था। उसने उसको रोका और उससे पूछा — "इतने सारे आदमी और एक ही समय में? ऐसा क्या है आज जो इतने सारे लोग अकरा आये हुए हैं।"

बूढ़ा बोला — "मीनू।"

याउन्डे मीनू का नाम फिर से सुन कर बहुत खुश हो गया।

उसने सोचा “इस आदमी का कितना असर है। केवल मीनू को देखने के लिये ही आज कितनी बड़ी संख्या में लोग अकरा में इकट्ठा हुए हैं। हमारे गॉव के लोग तो इस आदमी के बारे में कुछ जानते ही नहीं।”

याउन्डे उस बाजार वाले शहर से बाहर निकल कर समुद्र के किनारे आ गया। वहॉ उसने देखा कि पानी में बहुत सारी छोटी छोटी मछली पकड़ने वाली नावें पड़ी हुई थीं जिनमें पाल लगे हुए थे। ऐसी नावें याउन्डे ने पहले कभी नहीं देखी थीं।

उसने समुद्र के किनारे पर खड़े एक मछियारे से पूछा — “वाह तो ये नावें किसकी हैं?”

मछियारा बोला — “मीनू।”

याउन्डे वहॉ से आगे चल दिया और फिर एक ऐसी जगह आया जहॉ एक बहुत बड़े सामान ले जाने वाले जहाज़ पर पाम का तेल और पाम के फल[46] लादे जा रहे थे।

उस जहाज़ में से इतना काला धुँआ निकल रहा था जैसे कोई काला बादल हो और सैंकड़ों की संख्या में लोग जहाज़ के डैक पर इधर से उधर काम करते घूम रहे थे।

याउन्डे उस जहाज़ को देख कर बहुत ही खुश हुआ। उसके मुँह से निकला — “आहा। कितनी बड़ी नाव है।”

---

[46] Palm fruit from which the Palm nut is extracted. See the picture of palm fruit above

उसने पास में ही एक केले का गुच्छा ले जाते हुए आदमी से कहा — “यह तो दुनियाँ की सबसे बड़ी नाव होगी।”

उस आदमी ने तुरन्त ही जवाब दिया “मीनू।”

यून्डे बोला — “हाँ हाँ इतना तो मैं भी जानता हूँ कि यह नाव मीनू की है पर यह इतना सारा फल जा कहाँ रहा है?”

उस आदमी ने फिर कहा “मीनू।” और वह उस जहाज़ के डैक पर चढ़ गया।

अब याउन्डे का धीरज छूट गया। वह बस यही सोचता रहा कि यह मीनू कितना बड़ा आदमी होगा। उसके पास तो सब कुछ था। वह सब कुछ खाता था। कोई भी सवाल पूछने से पहले ही जवाब मिलता “मीनू।” मीनू यहाँ, मीनू वहाँ, मीनू हर जगह।

याउन्डे बोला — “मुझे तो विश्वास ही नहीं होता अगर मैंने खुद यह सब अपनी आँखों से नहीं देखा होता। असल में तो अकरा को अकरा नहीं बल्कि मीनू शहर कहना चाहिये। कितना अच्छा हो अगर मीनू की सारी दौलत उसे मिल जाये तो।”

फिर याउन्डे ने अपना काम किया जिसके लिये वह आया था। उसने अपना बचा हुआ खाना फिर से उसी कपड़े में बाँधा अपने सिर पर रखा और घर के लिये वापस चल दिया।

जब वह शहर के किनारे आया तो उसने एक बहुत बड़ा जुलूस देखा और ढोलों के बजने की आवाज सुनी।

वह उस जुलूस के पास तक आया तो उसने देखा कि वह तो किसी का जनाज़ा निकल रहा था। लोग एक ताबूत ले जा रहे थे और उसके पीछे पीछे स्त्रियाँ दुख से रोती हुई जा रही थीं।

याउन्डे ने इतना सुन्दर जनाज़ा पहले कभी नहीं देखा था। वह उस भीड़ में घुस गया और जा कर उस जनाज़े को देखने लगा। उसने एक दुखी आदमी से पूछा — "यह कौन आदमी मर गया है?"

उस आदमी ने दुखी हो कर जवाब दिया — "मीनू।"

"क्या? मीनू मर गया?" वह मीनू जिसके बहुत सारे जानवर थे वह मीनू जिसका वह बहुत ऊँचा सा घर था। वह मीनू जिसकी बहुत सारी पाल वाली नावें थीं।

वह मीनू जिसका भाप वाला जहाज था। वह मीनू जिसकी वजह से बाजार में इतनी भीड़ थी। उस बेचारे को यह सब दौलत छोड़ कर जाना पड़ा। ओह वह बेचारा तो एक मामूली आदमी की तरह ही मर गया।"

और इस तरह से दुखी होते हुए वह बेचारा अपने घर की तरफ चल दिया पर उसके दिमाग से मीनू नहीं निकला। वह बार बार यही कहता रहा "बेचारा मीनू। बेचारा मीनू।"

8 गाने वाली मादा कछुआ[47]

एक बार घाना के उत्तर के हिस्से में जहॉ कौंग पर्वत[48] से अडीरी नदी[49] निकलती है वहॉ एक शिकारी रहता था जिसका नाम था आमा[50]।

एक दिन वह शिकार करने के लिये जंगल गया तो उसको काफी देर तक कोई शिकार नहीं मिला सो वह उसको ढूँढने के लिये जंगल में अन्दर बहुत दूर तक निकल गया।

चलते चलते वह एक नदी के किनारे आ गया जो जंगल के बीच में से बहती थी। जंगल का वह हिस्सा उसने पहले कभी नहीं देखा था।

वह खड़ा खड़ा यही सोचता रहा कि वह अब किधर जाये कि उसको पेड़ों में से संगीत की आवाज आती सुनायी दी। उसको गाने की आवाज भी सुनायी पड़ी और सॉसा[51] बजाने की भी आवाज सुनायी पड़ी। वह आवाज गा रही थी —

वह आदमी है जो अपने को दूसरों पर लादता है
न कि चीज़ें अपने आपको आदमी पर लादती हैं

[47] The Singing Tortoise (Tale No 8) – a folktale from Ghana, West Africa, Africa.
[48] Kong Mountains
[49] Adiri River
[50] Ama – a name of a man from Ghana
[51] Sansa is an African musical instrument, like tiny piano, played with the thumbs.

आमा चुपचाप आगे बढ़ा और पेड़ों में से झॉक कर देखा तो एक जंगल में एक खाली जगह में एक मादा कछुआ बैठी थी। उसके हाथों में एक सॉसा[52] था और वह गा रही थी

वह आदमी है जो अपने को दूसरों पर लादता है
न कि चीज़ें अपने आपको आदमी पर लादती हैं

आमा तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया। वह मादा कछुआ बहुत ही सुन्दर गा रही थी। उसने अपने देश में इतना अच्छा गाते हुए किसी को नहीं सुना था। वह वहॉ खड़ा हो गया और उसका गाना सुनता रहा।

मादा कछुआ को बिल्कुल भी डर नहीं था। वह बराबर गाये जा रही थी। उसका संगीत जादू भरा था। आमा ने ऐसा संगीत भी पहले कभी नहीं सुना था।

कुछ देर बाद वह गॉच वापस चला गया पर वह उस मादा कछुए को नहीं भूल सका। अगली बार जब वह जंगल में शिकार करने गया तो वह फिर से उसी जगह चला गया। वहॉ उसने फिर उसी मादा कछुए को सॉसा के साथ गाते पाया —

वह आदमी है जो अपने को दूसरों पर लादता है
न कि चीज़ें अपने आपको आदमी पर लादती हैं

[52] Sansa is a musical instrument. See its picture above.

अब हर बार जब भी आमा जंगल जाता तो वह वहाँ उसी जगह जरूर जाता और उस मादा कछुए को गाते सुनता। वह तो बहुत ही अजीब और आश्चर्यजनक चीज़ थी।

एक दिन उसने सोचा कि क्या ही अच्छा हो अगर यह मादा कछुआ उसके गाँव में उसके घर में हो ताकि जब वह शिकार करके या अपने खेतों पर काम करके शाम को घर आये तो वह उसको रात को भी सुन सके।

यह बात उसने मादा कछुए से कही और उससे पूछा कि क्या वह उसको अपने घर ले जा सकता था। पर मादा कछुआ बोली — "तुम मुझे ले तो जा सकते हो पर यह एक भेद है। अगर तुम मुझको अपने घर ले गये तो लोग इसके बारे में जान जायेंगे।"

आमा बोला — "नहीं, तुम्हारे बारे में कोई नहीं जान पायेगा। अगर मैं तुमको अपने घर में रखूँगा तो मैं तुम्हारे बारे में किसी को नहीं बताऊँगा और तुमको केवल बस मैं ही सुनूँगा।"

मादा कछुआ बोली — "ठीक है तब मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ। पर मैं केवल तुम्हारे लिये ही गाऊँगी और इस बात का तुम्हारे गाँव वालों को भी पता नहीं चलना चाहिये।"

आमा खुशी से बोला — "बिल्कुल नहीं। मैं किसी को नहीं बताऊँगा। बस तुम केवल मेरे लिये ही गाओगी।"

कह कर उसने मादा कछुए को बहुत सँभाल कर उठाया ताकि उसको कोई तकलीफ न पहुँचे और उसको अपने घर ले गया।

अब हर शाम को आमा जब भी अपने खेत पर काम करके या जंगल से शिकार से वापस आता तो वह मादा कछुआ उसके लिये सॉसा बजाती और गाती।

आमा को यह सब इतना अच्छा लगा कि वह उसके बारे में अपने गॉव वालों से कहे बिना न रह सका। पहले उसने कुछ लोगों से कहा फिर उसने उसके बारे में और ज़्यादा लोगों से कहा।

यह सुन कर लोग आपस में आमा की हॅसी उड़ाने लगे कि आमा ने तो उनको बहुत अच्छी कहानी सुनायी। असल में तो किसी ने भी उसकी इस बात पर विश्वास ही नहीं किया।

आमा की गाने वाली मादा कछुए की कहानी बहुत दूर दूर तक फैल गयी और एक दिन गॉव के सरदार तक जा पहुँची। उसने पूछा — "यह कौन आदमी है जो एक गाने वाली मादा कछुए की कहानी को फैला रहा है? ऐसी बेवकूफी की कहानी फैला कर तो वह हमारी हॅसी उड़ा रहा है।"

ऐसा कह कर सरदार ने अपने कुछ आदमी आमा के पास भेजे ताकि वे उसको उसके घर ले कर आयें।

जब आमा सरदार के घर आया तो सरदार अपने घर के ऑगन में एक स्टूल पर बैठा हुआ था और उसके सलाहकार उसके आसपास खड़े हुए थे। सबने आमा की कहानी सुनी।

आमा को अपनी कहानी सुना कर बहुत अच्छा लगा। वह यह सब बता कर बड़ी शान महसूस कर रहा था कि उसके पास एक ऐसी चीज़ थी जो सारे शहर में इतनी उत्सुकता पैदा कर रही थी।

पर सरदार यह सुन कर कुछ परेशान था और उसके सलाहकार भी अविश्वास में अपना सिर हिला रहे थे। वे बोले — "गाने वाली मादा कछुआ या सॉसा बजाने वाली कछुआ जैसी कोई चीज़ तो होती ही नहीं। एक जानवर ऐसा कैसे कर सकता है।"

आमा बोला — "पर जो कुछ भी मैंने आप सबसे कहा है वह सब सच है और वह हो रहा है। मेरे पास एक मादा कछुआ है जो गाती भी है और बजाती भी है।"

लोग बोले — "तुम हमको बहका रहे हो। तुम अपनी इन फालतू बातों से हमको बदनाम करने की कोशिश कर रहे हो।"

आमा को यह सुन कर बहुत दुख हुआ पर वह बोला — "ठीक है मैं उस मादा कछुए को यहाँ लाता हूँ। वह तुम लोगों के लिये गायेगी भी और बजायेगी भी तभी तुम लोगों को विश्वास आयेगा कि मैं झूठ बोल रहा हूँ या सच। अगर वह यह नहीं करेगी तो तुम लोग मुझे पीट सकते हो।"

सरदार राजी हो गया और आमा यह कह कर अपने गाँव चला गया। अब हर आदमी आमा और उसके कछुए के बारे में बात कर रहा था। उधर आमा ने अपनी मादा कछुए को सँभाल कर उठाया और उसको सरदार के पास ले चला।

मादा कछुआ ने पूछा — "हम लोग कहॅ जा रहे हैं?"

आमा बोला — "लोग सोचते हैं कि मैं झूठ बोल रहा हूॅ। हम उनको दिखा देंगे कि मैं झूठ नहीं बोल रहा।"

मादा कछुआ कुछ नहीं बोली। जब आमा सरदार के घर पहुॅचा तो वहॅ तो लोगों की एक बड़ी भीड़ जमा थी क्योंकि वहॅ तो इस तमाशे को देखने के लिये पास वाले गॉवों से भी लोग इकट्ठा हो गये थे।

आमा ने उस मादा कछुए को सरदार को सामने ले जा कर जमीन पर रख दिया और उसका सॉसा भी उसके पास रख दिया। फिर वह बोला — "अब तुम लोग देखना।" कह कर उसने मादा कछुए से कहा कि वह सबको गा बजा कर दिखाये।

पर आमा ने जहॅ उस मादा कछुए को रखा था वह वहीं चुपचाप बैठी रही। पीछे वाले लोग यह तमाशा देखने के लिये आगे आने के लिये एक दूसरे को धक्का देते रहे।

पर मादा कछुए ने ना ही गाया और ना ही उसने सॉसा उठाया। लोग इन्तजार करते रहे पर जब काफी देर तक कुछ भी नहीं हुआ तो वे आपस में बहस करने लगे। उनका धीरज छूटने लगा। कई मिनट बीत गये।

मादा कछुए ने अपना सिर अपने खोल में छिपा लिया। कभी कभी वह अपना सिर अपने खोल में से बाहर निकाल कर लोगों की

तरफ देख लेती पर फिर वह दोबारा से उसे अपने खोल में छिपा लेती।

जब काफी देर हो गयी और मादा कछुए ने गाना नहीं गाया तो लोग गुस्सा हो गये। आखिर उन्होंने आमा से पूछा कि यह गाना कब गायेगी।

आमा को भी परेशानी हो रही थी क्योंकि वह झूठा पड़ रहा था। वह मादा कछुए से बोला — "तुम इनके लिये गाओ न ताकि ये लोग यह न समझें कि मैं झूठ बोल रहा हूँ।" पर मादा कछुए ने केवल अपनी पलकें हीं झपकायीं और कुछ नहीं किया।

समय गुजरता जा रहा था। वहाँ खड़े लोग आमा को गुस्से में आ कर कुछ कुछ कहने लगे। आखिर सरदार बोला — "हमने देख लिया है कि इस कहानी को सुना कर इस आमा ने हमारा बेवकूफ बनाया है इसलिये अब इसको ले जाओ और इसकी खूब पिटाई करो।"

लोगों ने उसकी वहीं पिटाई करनी शुरू कर दी जहाँ वह खड़ा था और वे तब तक उसकी पिटाई करते रहे जब तक सरदार ने उनको उसको पीटने से रोक नहीं दिया।

सरदार बोला — "यह पिटाई तुमको यह सबक सिखायेगी कि आगे से तुम ऐसी झूठी कहानियाँ फैला कर हमारे गाँव को बदनाम न करो। अब तुम अपना सामान बाँधो और इस गाँव से चले जाओ क्योंकि ऐसे लोगों के लिये हमारे गाँव में कोई जगह नहीं है।"

आमा कुछ नहीं बोला। पिटाई की वजह से उसका सारा शरीर दर्द कर रहा था। उसको शर्म भी बहुत आ रही थी। उसने अपना सामान उठाया और वह गॉव छोड़ दिया। लोग उसको जाते हुए देखते रहे।

इस समय मादा कछुए ने अपना सिर अपने खोल में से बाहर निकाला और बोली। उसको बोलते देख कर सारे लोग आश्चर्य में पड़ गये।

मादा कछुआ बोली — "आमा ने दूसरों का विश्वास नहीं रखा इसी लिये उसको यह शर्म उठानी पड़ी। वह अपनी यह सजा अपने ऊपर अपने आप ही ले कर आया है।

मैं तो जंगल में गाते और अपना सॉसा बजाते हुए बहुत खुश थी पर यह मुझे अपने घर ले कर आया और इसने मुझसे यह वायदा किया कि यह मेरा भेद किसी पर भी नहीं खोलेगा।

पर यह मेरा भेद भेद नहीं रख सका। इसने तो उसे सबको बता दिया – पहले फुसफुसा कर और फिर ज़ोर से बोल कर।"

फिर उसने अपना सॉसा उठाया और एक बार फिर गाया —

वह आदमी है जो अपने को दूसरों पर लादता है
न कि चीज़ें अपने आपको आदमी पर लादती हैं

9 समय[53]

एक बार अफ्रीका में एक बहुत ही अमीर आदमी रहता था जिसका नाम था समय। उसके पास इतनी ज़्यादा बकरियाँ मुर्गियाँ और गायें थे कि वह उनको गिन भी नहीं सकता था।

उसके पास जमीन भी बहुत थी। इतनी ज़्यादा कि उसने इतनी जमीन पहले कभी देखी भी नहीं होगी। उसकी इस जमीन पर बहुत सारा चावल, कसावा[54] और बहुत सारे तरह के खाने उगते थे।

उसके पास कपड़े का बहुत बड़ा भंडारघर था और उसके अनाजघर अनाज से इतने भरे रहते थे कि अनाज उनमें से बाहर निकला पड़ता था।

उसका नाम उसकी अपनी जाति से बाहर भी बहुत फैला हुआ था। उसके पास बहुत दूर दूर से व्यापारी व्यापार करने के लिये आया करते थे। नाचने वाले तमाशा करने वाले कुश्ती लड़ने वाले हमेशा ही उसके लिये कुछ न कुछ करते रहते थे।

और दूसरी जातियाँ अपने लोगों को उसके पास केवल इसलिये भेजती थीं ताकि वे उसको आमने सामने देख सकें और फिर वहाँ के

---

[53] Time (Tale No 9) – a folktale from Ghana, West Africa.

[54] Cassava is a root vegetable like Yam except that it is thinner and longer than it. It is also a staple diet of West African people. See its picture above.

लोगों को यह बता सकें कि वह देखने में लगता कैसा है और वह रहता कैसे है। जो अजनबी समय के यहॉ आते थे समय उनको गाय, बकरियॉ और बढ़िया कपड़े भेंट करता था।

समय के बारे में लोगों का कहना यह था कि जिसने भी समय को नहीं देखा उसकी ज़िन्दगी बेकार थी।

धीरे धीरे समय बूढ़ा हो गया और उसकी किस्मत बदल गयी। उसकी दौलत चली गयी। उसके पास बहुत कम गायें रह गयीं। उसकी धरती भी कम रह गयी।

उसके अनाजघर भी अब छोटे रह गये और अब उनमें अनाज भी बहुत कम रह गया। उसका खाया पिया शरीर भी अब पतला दुबला हो गया था। उसके मकान भी अब टूट फूट गये थे और गन्दे रहने लगे थे।

वह अब गरीबों में भी बहुत गरीब हो गया था। पर दूर देशों में अभी भी लोगों को इस बात का पता नहीं था कि समय की किस्मत बदल गयी है।

एक बार समय के शहर से बहुत दूर के शहर में रहने वाली एक जाति के लोगों ने अपने कुछ आदमी समय को देखने के लिये भेजे और उनसे कहा — “देखो तुम लोग समय के शहर जाओ और समय को देखो। जब तुम लोग उसको देख लो तो यहॉ वापस आ कर हमें बताना कि क्या वह अभी भी उतना ही अमीर और दयालु है जितना कि लोग उसको कहते हैं।”

वे लोग अपनी लम्बी यात्रा पर चल दिये और कई दिनों तक चलते रहे। आखिर वे समय के गॉव की हद के पास आये तो वहॉ उनको फटे कपड़े पहने एक गरीब बूढ़ा मिल गया। वह बहुत ही दुबला पतला सा था और उसके शरीर पर झुर्रियॉ पड़ी हुई थीं।

उन्होंने उस आदमी से पूछा — "ज़रा हमें बताओ तो कि समय यहीं रहता है क्या? और अगर वह यहीं रहता है तो उसका घर कहॉ है?"

उस बूढ़े ने कहा — "हॉ, समय यहीं रहता है। तुम शहर में अन्दर चले जाओ तो लोग तुमको बता देंगे कि वह तुमको कहॉ मिलेगा।"

वे अजनबी शहर में चले गये और शहर के लोगों से कहा — "हम लोग समय से मिलने आये हैं जिसकी इज़्ज़त बहुत दूर दूर तक फैली हुई है। हम भी इस बढ़िया आदमी से मिलना चाहते हैं ताकि जब हम उसको देख कर वापस अपने शहर जायें तो उनको भी उसके बारे बता सकें।"

जब वे वहॉ बातें कर रहे थे तो वही बूढ़ा जो उन लोगों को गॉव की हद पर मिला था उनकी तरफ आ रहा था। एक आदमी बोला — "वह देखो, वह समय आ रहा है जिसे तुम लोग देखने आये हो और ढूँढ रहे हो।"

आने वालों ने उसकी तरफ देखा और देख कर बहुत ही नाउम्मीद हुए। उन्होंने पूछा — "क्या यह वही आदमी है जिसका नाम हमारे शहर में भी फैला हुआ है?"

क्योंकि उनको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि यही वह समय होगा जिसका नाम उनके शहर तक फैला हुआ है। यह तो भिखारी निकला और वह भी सब गरीबों में गरीब आदमी, और बेचारा इस तरह का अभागा दिखायी दे रहा होगा। उन्होंने इतना अभागा आदमी पहले कभी कहीं नहीं देखा था।

जब समय वहाँ आया जहाँ वे लोग बैठे हुए थे तो उन्होंने उससे हाथ मिलाये और उससे पूछा — "क्या सचमुच में तुम ही समय हो जिसके बारे में हम सब सुनते आ रहे हैं?"

वह बोला —"हाँ, मैं ही वह समय हूँ।"

"पर यह कैसे हो सकता है? हम तो अपने देश में तुम्हारे बारे में बहुत सारी कहानियाँ सुनते चले आ रहे हैं। बहुत सारे यात्री तुम्हारे बारे में तुम्हारी अमीरी की, तुम्हारे असर की कहानियाँ कहते चले आ रहे हैं।

इसी लिये हमारे देश के लोगों ने हमें उसी आदमी को देखने के लिये भेजा है ताकि वापस जाने पर हम अपने लोगों को उसके बारे में बता सकें।"

समय बोला — "मैं ही वह समय हूँ। पर अब मेरी किस्मत बदल गयी है। कभी मैं दुनियाँ का सबसे अमीर आदमी हुआ करता था और आज मैं दुनियाँ का सबसे ज़्यादा गरीब आदमी हूँ।"

वे लोग दुखी हो कर बोले — "क्या करें ज़िन्दगी ऐसी ही है। पर अब हम लोग अपने लोगों से जा कर क्या कहेंगे?"

समय ने कुछ देर सोचा फिर बोला — "जब तुम लोग अपने शहर जाओ तो अपने लोगों से कहना कि समय अब वह समय नहीं है जो वह पहले हुआ करता था।"

10 माफ्ताम के लिये दूत[55]

बहुत दिनों पहले गिनी की खाड़ी[56] के उत्तर में सोनिन्के जाति के लोगों[57] में एक आदमी रहता था जिस का नाम था ममादी[58]। वह बहुत गरीब था और एक बहुत ही छोटे और बहुत ही सादे से मकान में रहता था।

लेकिन फिर भी ममादी की सब लोग बहुत इज़्ज़त करते थे क्योंकि सब लोगों का यह विश्वास था कि वह झूठ नहीं बोलता था चाहे छोटा सा भी क्यों न हो।

सोनिन्के लोगों का सरदार बहेने[59] खुद भी बहुत गुणवान था। ममादी के बारे में उसने भी बहुत कुछ सुन रखा था।

जब वह उसकी अच्छाइयों के बारे में सुनते सुनते चिढ़ गया तो एक दिन उसने अपने सलाहकारों से पूछा— "कौन है यह ममादी जो इतना गुणवान और चतुर है कि वह कभी झूठ नहीं बोलता?"

उसके सलाहकारों ने उसको बताया कि वह ओगो गॉव[60] में रहता है और वह बहुत दूर दूर तक मशहूर है क्योंकि वह हमेशा ही सच बोलता है।"

---

[55] The Messenger for Maftam (Tale No 10)

[56] Gulf of Guinea – the Bay below the West African countries

[57] Soninke tribe – a tribe of Ghana

[58] Mamadi – a name of a man, probably of a Muslim religion

[59] Bahene – a name of a man

[60] Ogo village

बहेने बोला — "मेरा विश्वास है कि इस आदमी के बारे में जरूर कुछ ज़्यादा ही कहा जा रहा है। ऐसा कोई भी आदमी कहीं भी नहीं है जो हमेशा ही सच बोलता हो चाहे वह रेगिस्तान हो या मैदान। तुम लोग उसको मेरे पास ले कर आओ तो मैं देखता हूँ उसको।"

बहेने के लोग ममादी के पास गये और उसको अपने सरदार के पास ले आये। बहेने बोला — "ममादी, क्या यह सच है कि तुमने कभी झूठ नहीं बोला?"

ममादी बोला — "जी हॉ जनाब। यह सच है।"

बहेने बोला — "इस बात पर विश्वास करना ज़रा मुश्किल है। क्योंकि आज के समय में कोई ऐसा आदमी नहीं है जिसने किसी न किसी समय पर कोई छोटे से छोटा भी झूठ न बोला हो।

फिर भी लोगों का कहना है कि यह सच है कि तुमने कभी कोई झूठ नहीं बोला। पर मुझे यह बताओ कि क्या तुमको इस बात का भी विश्वास है कि तुम आगे भी कभी झूठ नहीं बोलोगे?"

ममादी बोला — "हॉ जी। मुझे पूरा विश्वास है।"

बहेने बोला — "पर तुम इतने विश्वास के साथ इस बारे में कैसे कह सकते हो? क्योंकि बिना कुछ सोचे समझे पहले से ही यह कहना कि वह कल कोई आदमी क्या करेगा क्या कुछ ज़रा ज़्यादा ही नहीं है?"

ममादी बोला — “जनाब, इसमें हालात कोई मानी नहीं रखते इसमें तो आदमी की आदत काम करती है। क्योंकि मैं झूठ बोल ही नहीं सकता इसलिये मैं झूठ बोलॅूगा ही नही।”

बहेने बोला — “तुम काफी गुणवान आदमी लगते हो। अगर तुम्हारी जबान तुम्हारे लिये इतनी वफादार है, जैसा कि तुम कहते हो, तो मेरा यह सोचना गलत है कि कोई ऐसा आदमी नहीं है जो झूठ न बोलता हो।

पर अगर तुम झूठ बोलोगे तो तुम्हारा जुर्म उन मामूली आदमियों के जुर्म से बहुत ज़्यादा बड़ा होगा जो अक्सर झूठ बोलते हैं। क्योंकि कोई मामूली आदमी अपनी जबान से अपने आपको इतना गुणवान नहीं कहता।

इसलिये ममादी ज़रा उस दिन का ध्यान रखना जब तुम झूठ बोलोगे। वह दिन तुम्हारे लिये बहुत बुरा दिन होगा। अगर सोनिन्के लोगों ने तुमको झूठ बोलते पकड़ लिया तो मैं तुमको रस्सियों से पिटवाऊॅगा।”

ममादी यह सुन कर चला गया। जब ममादी चला गया तो बहेने ने अपने सलाहकारों से कहा — “यह आदमी कुछ ज़रा ज़्यादा ही हवा ले रहा है। यह तो ठीक है कि यह गुणवान है क्योंकि इसकी इज़्ज़त चारों तरफ फैली हुई है पर इसका कभी झूठ न बोलने की आदत को इसके गुणवान होने से कुछ और ज़्यादा चाहिये और वह है इसकी चतुराई। यह चतुर भी बहुत है।

ममादी का यह सोचना कि वह कभी झूठ बोल ही नहीं सकता यह उसका घमंड है। उसको सबक सिखाना पड़ेगा।"

कई दिन बाद एक दिन सुबह सवेरे बहेने ने ममादी को फिर से अपने घर बुलाया। ममादी बहेने के घर के सामने आया तो उसने देखा कि वहॉ तो बहेने और उसके आदमी अपने हाथों में हथियार लिये खड़े हैं।

बहेने बोला — "ममादी, तुमको मेरा एक काम करना होगा। तुम मेरे दूसरे घर जाओ और मेरी पत्नी को मेरा एक सन्देश देना। उससे कहना कि हम एक बारहसिंगे[61] का शिकार करने गये हैं।

और उससे कहना कि हम माफ्ताम दोपहर को पहुॅचेंगे। उस समय हम भूखे होंगे सो हम लोगों को बहुत सारा खाना चाहिये। तुम हमारा वहीं इन्तजार करना। तुम हमारे साथ ही खाना खाओगे।"

यह सुन कर बहेने और उसके शिकारी अपनी जगह से ऐसे उठे जैसे कि वे शिकार करने जा रहे हों और ममादी वहॉ से बहेने के दूसरे घर की तरफ जल्दी जल्दी चला गया ताकि वह समय पर पहुॅच कर उसकी पत्नी को यह सूचना दे सके कि वह समय पर उसके लिये खाना बना सके।

पर जैसे ही ममादी ऑखों से ओझल हुआ बहेने बाहर से वापस लौट आया और अपने घर के अन्दर चला गया।

[61] Translated for the word "Antelope".

उसने अपने हथियार रख दिये और अपने शिकारियों से कहा — “मैंने अपना विचार बदल दिया है। हम अब शिकार के लिये नहीं जायेंगे। और ना ही आज माफ्ताम जायेंगे।

यह ममादी जो मेरी पत्नी को हमारा सन्देश ले कर गया है सोचता है कि वह झूठ नहीं बोल सकता है उसको हम आज देखेंगे।

वह मेरी पत्नी को कहेगा कि हम शिकार करने के लिये गये हैं और एक बारहसिंगा ले कर वापस लौटेंगे। वह उसको यह भी कहेगा कि हम दोपहर को आयेंगे और हम बहुत भूखे होंगे। पर इनमें से कुछ भी नहीं होगा।

जब हम वहॉ पहुॅचेंगे तो हम बहुत हॅसेंगे क्योंकि उस बेचारे गॉव वाले में अक्ल इतनी ज़्यादा नहीं है जितना कि वह गुणवान है। और फिर वह अपने अड़ियलपने के लिये मार खायेगा।”

उधर ममादी जल्दी जल्दी माफ्ताम पहुॅचा। सरदार के घर से माफ्ताम तक का पैदल का रास्ता तीन घंटे का था।

वहॉ पहुॅच कर वह तुरन्त बहेने की पत्नी के पास पहुॅचा और उससे बोला — “मैं बहेने का एक बहुत ही जल्दी का सन्देश ले कर आया हूॅ।”

बहेने की पत्नी ने पूछा — “क्या सन्देश है?”

ममादी बोला — “मैं इसके बारे में यकीन के साथ नहीं कह सकता।”

बहेने की पत्नी कुछ गुस्सा सी हो कर बोली — “तुम ऐसा सन्देश कैसे ला सकते हो जिसको तुम खुद ही यकीन के साथ नहीं कह सकते? तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो? जल्दी बोलो।”

ममादी बोला — “या तो ऐसा हो सकता है या फिर मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद या निश्चित रूप से बहेने शिकार के लिये गये हों।”

बहेने की पत्नी बोली — “यह तो तुम कुछ साफ बात नहीं कह रहे ममादी। ठीक बताओ कि वह शिकार के लिये गये या नहीं गये।”

ममादी बोला — “मुझे इस बात को इस तरीके से कहना चाहिये था कि जब मैं उनके घर पहुँचा तो मैंने उनको और उनके साथ जाने वाले शिकारियों को जिस तरह से खड़े देखा तो वे मुझे साफ साफ शिकार पर जाते हुए दिखायी दिये क्योंकि जिस तरह वे अपने हाथों में हथियार लेकर खड़े हुए थे वे मुझे शिकार पर जाने की तैयारी में लगे।

पर ऐसे तो जब शिकार पर से वापस आते हैं तब भी वे उस तरीके से खड़े हो सकते थे। पर ऐसा नहीं लग रहा था कि वे शिकार पर से वापस आये थे क्योंकि वहॉ कोई शिकार या मॉस नहीं था।

पर ऐसा भी हो सकता था कि वे शिकार करने गये हों और वहाँ उनको कोई शिकार न मिला हो। पर मुझे तो ऐसा लगा कि वे शिकार करने जा रहे थे न कि वे शिकार कर के वापस आ रहे थे।

क्योंकि उनकी बातों से भी ऐसा ही लग रहा था जिनसे साफ साफ यह पता चल रहा था कि वे शिकार करने जा रहे थे।"

बहेने की पत्नी बोली — "इतनी ज़्यादा जल्दी मत करो ममादी। मुझे तो तुम्हारी कोई बात समझ में ही नहीं आ रही कि वह शिकार करने गये कि नहीं। अच्छा अब यह बताओ कि दूसरी खबर क्या है?"

ममादी बोला — "यह एक अक्लमन्दी का काम होगा अगर आप एक बारहसिंगा पकाने के लिये तैयार रहें क्योंकि हो सकता है कि वह एक बारहसिंगा पकड़ कर लायें। क्योंकि यही बहेने के जनरल का इरादा है।क्योंकि इसी के लिये वे लोग शिकार करने जा रहे हैं।"

बहेने की पत्नी फिर कुछ नाराज सी हो कर बोली — "और सोनिन्के गाँव के सारे लोगों में ऐसा लगता है कि बहेने की शिकार की पार्टी को केवल तुम्हीं मिले जिससे उनको यह सन्देश भिजवाना था। अच्छा और बोलो क्या कहना है।"

ममादी आगे बोला — "ओह उसके बाद फिर ज़्यादा समय नहीं बचेगा तो बहेने और उसकी पार्टी जब यहाँ दोपहर को आयेगी तो उन सबको बहुत ज़्यादा या बहुत कम भूख लगी होगी।

और अगर वे लोग यहाँ आये तो, जो कि शायद आयेंगे या निश्चित रूप से यहाँ नहीं आयेंगे। यहाँ मुझे कुछ शक है कि वे यहाँ आयेंगे या नहीं आयेंगे... ।"

बहेने की पत्नी ने ममादी की बात काटी — "ज़रा रुको। मुझे तो अभी तक तुम्हारी एक बात भी समझ में नहीं आयी। क्या तुम अपनी इसी बात को ठीक से और थोड़े शब्दों में कह सकते हो?"

ममादी ने अपनी बात जारी रखी — "एक बात और। और वह यह कि मैं यहाँ उनका इन्तजार करूँ जब तक वे लोग यहाँ आते हैं। अगर ऐसा हो सकता है, या फिर नहीं हो सकता या फिर... ।"

अब बहेने की पत्नी का धीरज छूट गया और वह चिल्लायी — "अपनी यह बकवास बन्द करो। मुझे बस यह बताओ कि वह आ रहे हैं या नहीं आ रहे और अगर वे यहाँ आ रहे हैं तो कब आ रहे हैं?"

ममादी आगे बोला — "जैसा कि मैंने पहले ही कम या ज़्यादा साफ साफ कहा जितना कि मैं कह सकता था, थोड़ा सा या सारा, ऐसा लगता है कि, पूरा पूरा यकीन के साथ तो नहीं, कि बहेने शायद जल्दी ही या देर से यहाँ आये।"

बहेने की पत्नी ने फिर बात काटी — "ठीक है ठीक है। बस अब तुमको कुछ कहने की जरूरत नहीं है। जितना तुम मुझे ज़्यादा बताओगे मैं उतना ही कम जान पाऊँगी। अब तुम जा सकते हो।"

ममादी फिर जा कर एक चटाई पर लेट गया और सरदार के आने का इन्तजार करने लगा। दोपहर आयी और चली गयी पर बहेने और उसकी शिकारी पार्टी नहीं आयी।

फिर रात हो गयी और सुबह भी हो गयी तब कहीं जा कर सरदार और उसकी शिकारी पार्टी माफ्तान आयी। उन्होंने जब ममादी को अपने ऑगन में अपना इन्तजार करते देखा तो वे लोग आते ही खूब हॅसे।

बहेने बोला — "हमारा खाना शायद थोड़ा खराब हो गया होगा पर कोई बात नहीं क्योंकि आज हमने यह साबित कर दिया कि सबसे ज्यादा गुणवान आदमी भी अपनी जबान से झूठ बोल सकता है। इस आदमी की यह ढिठाई इसके गुणों से ज़्यादा ध्यान देने लायक है।"

बहेने की पत्नी ने पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

बहेने बोला — "उसने तुमसे यह कहा कि हम शिकार पर गये हैं जबकि हम गये ही नहीं। और हम यहॉ कल आ गये होते जबकि हम यहॉ कल आये ही नहीं। और हम एक बारहसिंगा ले कर आयेंगे जो हम ले कर ही नहीं आये। और हम दोपहर को खाना खायेंगे तो जब हम आये ही नहीं तो हमने खाया ही नहीं।"

सरदार की पत्नी तुरन्त बोली — "नहीं। उसने ऐसा कुछ नहीं कहा जैसा कि तुम कह रहे हो। उसने कहा कि वह निश्चित नहीं था कि तुम ऐसा करोगे या नहीं करोगे। कि ऐसा हो भी सकता है और

नहीं भी हो सकता। क्योंकि यह सब निश्चित भी है और अनिश्चित भी।

उसने तुम्हारा सन्देश दिया तो पर उसने उस सन्देश को कई "हो सकता है" और "नहीं भी हो सकता" के साथ दिया। मुझे तो इसलिये उसका सन्देश ही समझ में नहीं आया।"

बहेने तो यह सुन कर चक्कर में पड़ गया। उसको बहुत आश्चर्य हुआ कि उसने किस होशियारी से उसकी पत्नी को उसका सन्देश दिया। इस तरह से गॉव के सामने उसको खुद को शरमिन्दगी उठानी पड़ी न कि ममादी को।

उसने ममादी को बहुत सारी भेंटें दीं और कहा — "मैं गलत था ममादी और तुम सच में बहुत ही गुणवान और अक्लमन्द आदमी हो। अब मुझे पता चल गया कि लोग तुम्हारे बारे में जो कुछ कहते हैं ठीक ही कहते हैं कि तुम कभी झूठ नहीं बोलते।"

ममादी बोला — "यह बिल्कुल सच है। मैं कभी नहीं... यह निश्चित है... या शायद नहीं...।

11 टर्की और खरगोश को न्याय मिला[62]

घाना देश में कौंग पहाड़ों[63] और समुद्र के बीच में एक जगह एक टर्की[64] रहता था। वहाँ उसका एक खेत था। वह खेत बहुत अच्छा था क्योंकि वह टर्की अपने खेत पर बड़ी मेहनत से काम करता था।

वह अपने खेत पर याम[65] और केला उगाता था। उसके खेत पर बीन्स, भिंडी, बाजरा और तम्बाकू[66] भी उगते थे। उसका खेत हमेशा भरा भरा और हराभरा रहता। शायद इसलिये कि वह टर्की अपने खेत पर बहुत मेहनत से काम करता था।

उससे कुछ दूरी पर एक खरगोश भी रहता था। उसका भी वहाँ एक खेत था। पर वह खेत कुछ बहुत ज़्यादा अच्छा नहीं था क्योंकि वह उस पर ज़्यादा मेहनत से काम नहीं करता था।

जब पौधे बोने का मौसम आता तो वह वहाँ बीज तो लगा देता पर वह कभी अपनी फसल की गुड़ाई आदि नहीं करता। जब फसल

---

[62] Guinea Fowl and Rabbit Get Justice (Tale No 13) – a folktale from Ghana, West Africa.
[63] Cong Mountains
[64] Translated for the word “Guinea Fowl”. It is native to Northern Africa. Its feminine is Guineahen. See kits pocture above.
[65] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries. See its picture above.
[66] Beans, Okra (Ladies Finger), Millet and Tobacco

काटने का समय आता तो बस वह उसमें से अपनी फसल काटने पहुँच जाता।

इसी लिये उसके खेत में कोई भी चीज़ जैसे बीन्स, भिंडी या बाजरा कुछ भी ज़्यादा नहीं होता।

एक दिन खरगोश बाहर घूमने निकला तो उसको टर्की का खेत दिखायी दे गया। वह तो उसके अपने खेत से कितना ज्यादा अच्छा खेत था। उसको लगा कि उसका खेत भी ऐसा ही होना चाहिये था।

वह उस खेत के बारे में सोचता ही रहा और फिर कुछ नाराज सा होता हुआ बोला — "ऐसा क्यों होता है कि बारिश केवल इस टर्की के खेत पर ही पड़ती है मेरे खेत पर नहीं और इसी लिये उसकी फसल अच्छी उगती है मेरी नहीं। यह तो न्याय नहीं है।"

वह इस बारे में सारे दिन सोचता रहा तो एक बहुत ही बढ़िया विचार उसके दिमाग में आया।

उस रात वह अपनी पत्नी और बच्चों को बाहर ले कर आया और उनको टर्की के खेत पर ले गया और वहाँ से फिर उनको वापस भी ले आया। वह उनको दोबारा वहाँ तक ले गया और फिर वापस ले आया।

ऐसा वह सारी रात करता रहा जिससे उसके घर से टर्की के खेत तक एक रास्ता बन गया। बस उन सबने टर्की के खेत से सब्जियाँ तोड़नी शुरू कर दीं। उन्होंने उनको टोकरी में रखा और

घर ले आये। अगले दिन सुबह वे लोग सब्जियाँ तोड़ने फिर चले गये।

जब सुबह को टर्की अपने खेत पर काम करने आया तो उसने देखा कि वहाँ तो खरगोश अपने परिवार के साथ उसकी इतनी बढ़िया फसल तोड़ कर ले जा रहा है जो उसने कितना समय लगा कर उगायी थी।

टर्की बोला — “यह तुम मेरे याम और भिंडी का क्या कर रहे हो? और वैसे भी तुम मेरे खेत पर यहाँ कर क्या रहे हो?”

खरगोश बोला — “तुम्हारा खेत? मुझे लगता है कि तुमसे कहीं गलती हुई है। यह तो मेरा खेत है।”

“हाँ मुझे भी कुछ ऐसा ही लगता है कि कहीं गलती हुई है क्योंकि यह तो मेरा खेत है। मैंने इसमें बीज बोया, मैंने इसकी घास निकाली, मैंने इसमें हल चलाया, इसलिये यह तुम्हारा खेत कैसे हो सकता है?”

खरगोश बोला — “तुम कैसे इसमें बीज बो सकते थे या कैसे इसकी घास काट सकते थे या कैसे इसमें हल चला सकते थे जबकि इसमें यह सारा काम मैंने किया।”

यह सुन कर टर्की बहुत नाराज हुआ। वह खरगोश से जोर से बोला — “अच्छा हो कि तुम मेरे खेत से चले जाओ।”

खरगोश भी जोर से बोला — “तुम मेरे खेत से चले जाओ।”

टर्की बोला — “यह तो तुम बेकार की बात कर रहे हो।”

खरगोश बोला — “वह तो है ही। जब कोई बूढ़ा टर्की आ कर किसी दूसरे के खेत को अपना खेत कहे तो वह बेकार की बात तो होती ही है।”

टर्की फिर बोला — “खरगोश, देखो मैं फिर कह रहा हूं कि यह खेत मेरा है तुम यहॉ से चले जाओ।”

खरगोश बोला — “नहीं, यह खेत मेरा है मैं यहॉ से नहीं जाऊँगा।”

टर्की बोला — “मैं इस मामले को सरदार के पास ले जाऊँगा।

खरगोश बोला — “यह ठीक है। चलो सरदार के पास चलते हैं।” सो दोनों ने अपने अपने हल उठाये और गॉव के सरदार के घर पहुँचे।

वहॉ पहुँच कर टर्की बोला — “यह मेरी सब्जियॉ तोड़ रहा था और मेरे खेत पर से हट ही नहीं रहा था।”

खरगोश बोला — “यह मेरा फायदा उठाना चाहता है। मैंने इतनी मेहनत करके इतने बढ़िया याम उगाये और यह वहॉ आ कर उनको अपना कह रहा है।”

वे दोनों सरदार को अपनी अपनी दलीलें देते रहे और सरदार उनको सुनता रहा। आखीर में वे तीनों टर्की के खेत पर वहॉ के हालात देखने गये।

सरदार ने खरगोश से पूछा — “तुम्हारे घर से इस खेत को आता हुआ रास्ता कहॉ है?”

खरगोश ने हाल की बनी हुई सड़क की तरफ इशारा करते हुए कहा — “वह रहा।”

फिर सरदार ने टर्की से पूछा — “और तुम्हारे घर से इस खेत को आता हुआ रास्ता कहाँ है?”

टर्की बोला — “रास्ता? मेरा तो कोई रास्ता नहीं है।”

सरदार बोला — पर जब किसी का खेत होता है तो उसका उसके घर से उस खेत तक पहुँचने का रास्ता तो होता ही है न?”

टर्की कुछ परेशान होता हुआ बोला — “हाँ होता तो है पर मैं तो जब भी अपने खेत पर काम करने आता हूँ तो बस उड़ कर आ जाता हूँ।”

सरदार ने कुछ सोचा और अपना सिर ना में हिलाया और बोला — “जब कोई आदमी अपना खेत बनाता है तो उसको अपने घर से उस खेत तक जाने का रास्ता तो बनाना ही पड़ता है न? अब क्योंकि इस खेत का रास्ता खरगोश के घर से आता है इसलिये यह खेत खरगोश का है।” और वह चला गया।

खरगोश और उसके परिवार ने फिर से उस खेत में से याम उखाड़ने शुरू कर दिये। टर्की इस फैसले से बहुत गुस्सा हुआ और गुस्सा हो कर अपने घर चला गया।

जब खरगोश की बड़ी सी टोकरी सब्जियों से भर गयी तो वह उसको ले कर बाजार चला। टोकरी भारी थी और वह बहुत भारी काम करने का आदी नहीं था क्योंकि वह बहुत आलसी था।

जब वह अपना भारी बोझ ले कर सड़क पर जा रहा था तो वह बीच में थक गया सो उसने अपना वह बोझ जमीन पर रख दिया और आराम करने लगा।

तभी वहाँ पर टर्की आ गया और खरगोश से बोला — "आह, दोस्त खरगोश, तुम्हारा बोझ तो बहुत भारी है। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

यह सुन कर खरगोश को बहुत अच्छा लगा। उसको लगा कि टर्की अब उससे गुस्सा नहीं था। वह उससे दोस्ती का बरताव कर रहा था।

वह बोला — "ओह टर्की, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। तुम तो मेरी सब्जियों को ले जाने में एक सच्चे दोस्त की तरह से सहायता कर रहे हो।"

यह सुन कर टर्की ने वह बोझा अपने सिर पर रखा, खरगोश की तरफ देख कर मुस्कुराया, अपने पंख फड़फड़ाये और वह बोझ ले कर उड़ गया – बाजार की तरफ नहीं बल्कि अपने घर की तरफ।

खरगोश चिल्लाता हुआ टर्की के पीछे भागा पर वह उसको पकड़ नहीं सका। क्योंकि टर्की तो मैदानों के ऊपर से तेज़ी से उड़ कर वहाँ से चला गया था।

इससे खरगोश बहुत नाराज हो गया और सरदार के पास वापस गाँव चला गया। वहाँ जा कर वह सरदार से बोला — “सरदार, टर्की ने मुझे लूट लिया। वह मेरी सब्जी की टोकरी ले कर उड़ गया।”

सरदार ने टर्की को बुलाया और उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो टर्की बोला — “वह मेरी सब्जियाँ थीं मैं ले गया।”

खरगोश चिल्ला कर बोला — “वे मेरी थीं। मैंने उनको अपने हाथ से तोड़ा था।”

वे फिर आपस में बहस करने लगे और सरदार फिर से सोचने लगा। सोच कर वह बोला — “जब लोग बहुत सारा सामान अपने सिर पर ढोते हैं तो उनके सिर के बाल रोज रोज उतना बोझ ढोने की वजह से कम हो जाते हैं।”

वहाँ बैठे गाँव के लोग बोले — “हाँ यह तो है।”

सरदार ने फिर खरगोश को बुलाया और कहा — “यहाँ तो आओ खरगोश मैं तुम्हारा सिर देखूँ।”

खरगोश सरदार के पास गया तो सरदार ने उसके सिर पर हाथ फेरा और मुँह से ना की आवाज निकालते हुए कहा — “नहीं नहीं। तुम्हारे बाल तो काफी मोटे और लम्बे हैं यह तुम्हारा बोझ नहीं हो सकता।”

फिर सरदार ने टर्की को बुलाया और कहा — “आओ टर्की अब मैं तुम्हारा सिर देखता हूँ।”

टर्की ने अपना सिर सरदार को दिखाया। सरदार ने उसके सिर पर भी हाथ फेरा तो उसके सिर पर तो ज़रा से भी बाल नहीं थे।

सरदार बोला — "यह बोझ तुम्हारा है क्योंकि तुम्हारा सिर तो बिल्कुल ही गंजा है।"

खरगोश ने शिकायत की — "पर टर्की के तो पहले से ही कोई बाल नहीं हैं। वह तो हमेशा से ही गंजा है।"

सरदार बोला — "जब लोग बहुत सारा सामान अपने सिर पर ढोते हैं तो उनके सिर के बाल रोज रोज उतना बोझ ढोने की वजह से कम हो जाते हैं इसी लिये टर्की का सिर गंजा है। और इसी लिये सब्जी की यह टोकरी भी टर्की की ही है।"

यह फैसला सुन कर वे दोनों वहॉ से चले गये।

खरगोश ने खेत पर जा कर सब्जी की दूसरी टोकरी तैयार की और उसको ले कर वह फिर से बाजार चला। वह फिर बीच में सड़क के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। टर्की फिर ऊपर से कूद लगा कर नीचे आया और उस टोकरी को ले कर उड़ गया।

खरगोश ने फिर दूसरी टोकरी तैयार की और उसको ले कर वह फिर बाजार चला। वह फिर बीच में सड़क के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। फिर वैसा ही हुआ। टर्की फिर से आया और फिर से अपनी सब्जी ले कर उड़ गया।

खरगोश ने सोचा कि अब सरदार के पास जाने से कोई फायदा नहीं था क्योंकि टर्की का सिर तो बिल्कुल ही गंजा था और वह

अपना फैसला सुना ही चुका था कि रोज रोज भारी बोझा ढोने से सिर के बाल बहुत पतले हो जाते हैं और उसके बाल तो बहुत मोटे और लम्बे थे सो वह टोकरी तो किसी भी हालत में उसकी हो ही नहीं सकती थी।

आखिर खरगोश टर्की की सब्जियाँ तोड़ते तोड़ते थक गया और वह अपने खेत पर काम करने चला गया।

इसी लिये कभी कभी लोग कहते हैं कि "सबसे छोटा रास्ता कहीं नहीं जाता।"

12 अनन्सी और कुछ नहीं पत्नी ढूँढने चले[67]

एक बार अनन्सी अपनी झोंपड़ी में बैठा हुआ था कि उसको लगा कि उसको एक पत्नी की जरूरत है।

ज़्यादातर लोगों के लिये तो यह एक सादा सा और आसान सा काम है पर अनन्सी तो सारे देश में बदनाम था। उसको पता था कि उसको अपनी बदनामी की वजह से उसके पास वाले गॉव में कोई उसको अपनी बेटी नहीं देगा।

वहीं पास की दूसरी पहाड़ी पर एक "कुछ नहीं"[68] नाम का एक और आदमी रहता था। वह बहुत ही अच्छा आदमी था। वह सोचने लगा कि अगर वह कुछ नहीं की तरह से अमीर और कोई बहुत बड़ा आदमी होता तो उसकी भी ज़िन्दगी कितनी आसान हो जाती।

लोग कुछ नहीं को बात करते हुए देखते, चलते हुए देखते, अच्छे कपड़े पहने हुए देखते। वह गॉव का एक बहुत ही मुख्य आदमी था सो सब उसको देखते।

लोग जब उसको आता हुआ देखते तो उनके मुँह से निकलता — "देखो वह आ रहा है।"

---

[67] Anansi and Nothing Go Hunting For Wives (Tale No 12) – a folktale from Ghana, West Africa.
[68] Translated for the word "Nothing"

जब वह आ जाता तो वह जो कुछ भी बोलता उसको ध्यान से सुनते और फिर जब वह चला जाता तो कहते — "देखो वह जा रहा है।" इसलिये कुछ नहीं को पत्नी पाने में कोई परेशानी नहीं हुई।

सोचते सोचते अनन्सी के दिमाग में एक तरकीब आयी। एक सुबह अनन्सी घाटी के उस पार गया जहॉ कुछ नहीं रहता था। वह उस सड़क पर चलता जा रहा था जो उसके घर को जाती थी।

उसका घर बहुत ही बड़ा और बहुत ही साफ सुथरा था। उसके घर की छत पर ताजा पाम की पत्तियों की छत पड़ी हुई थी।

अनन्सी बोला — "दोस्त "कुछ नहीं" हलो। मैं तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता हूँ कि तुम्हारे लिये तो यह बड़े शर्म की बात है कि तुम इतने बड़े घर में अकेले रहते हो। केवल नौकर ही तुम्हारी देखभाल करते हैं। तुम्हारे पास तो एक पत्नी होनी चाहिये।"

कुछ नहीं बोला — "अनन्सी यह तो तुमने बहुत ही अच्छा बताया। असल में तो मैं खुद ही इसके बारे में सोच रहा था।"

अनन्सी बोला — "मैं अपनी पत्नी ढूँढने के लिये कुमासी[69] जाने की सोच रहा था सो मैंने सोचा कि क्यों न हम दोनों एक साथ ही वहॉ चलें। इस तरह हम दोनों अपने अपने लिये पत्नी ढूँढ लेंगे।"

---

[69] Kumasi – Kumasi is a metropolis megacity and capital city of Ashanti situated on the semi-island exclave Ashanti land. Ashanti is centered around the Ashanti capital city of Kumasi, situated 20 miles North-East of a Crater Lake, the Lake Bosumtwi, in a rain forest region.

कुछ नहीं बोला — "यह तो तुमने बहुत अच्छी सलाह दी। चलो चलते हैं।"

अगली सुबह अनन्सी और कुछ नहीं घाटी में एक चौराहे पर मिले और वहाँ से उन दोनों ने कुमासी के लिये अपनी लम्बी पैदल यात्रा शुरू की।

अनन्सी अपना सबसे अच्छा सूती सूट पहने हुए था पर वह कुछ बहुत ज़्यादा अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि उसने बहुत काम भी नहीं किया था और उसका काम भी बहुत अच्छा नहीं चल रहा था।

कुछ नहीं भी अपना सूती सूट पहने हुए था पर उसके कपड़े बहुत बढ़िया थे और बहुत अच्छे रंगों के थे।

अनन्सी कुछ नहीं से बोला — "अगर मैं इस तरह के कपड़े पहने होता न कुछ नहीं तो मैं कुमासी को लोगों पर बहुत बढ़िया असर डालता।"

कुछ नहीं चुप रहा। अनन्सी फिर कुछ नहीं से बोला — "मेरे दोस्त, बस ज़रा सा आनन्द लेने के लिये कुछ देर के लिये हम अपनी कमीजें बदल लें।"

कुछ नहीं को यह विचार पसन्द आया सो उन दोनों ने आपस में अपनी कमीजें बदल लीं। करीब एक घंटे बाद अनन्सी फिर बोला — "दोस्त कुछ नहीं, इस लम्बी यात्रा पर कुछ मजा लेने के लिये हम अपने कोट भी आपस में बदल लेते हैं। बस कुमासी पहुँचने तक।"

कुछ नहीं को अनन्सी के इस विचार पर बहुत हँसी आयी सो उसने अनन्सी के कोट से अपना कोट भी बदल लिया।

कोट बदलने के बाद कुछ नहीं बोला — "अब तुम कुछ नहीं लग रहे हो और मैं अनन्सी लग रहा हूँ।" अनन्सी कुछ नहीं के कपड़े पहन कर अपने आपको बहुत ही बड़ा आदमी समझ रहा था।

आखिर वे कुमासी आ गये। वहाँ पहुँचने पर अनन्सी अचानक बोला — "अरे मुझे तो अपने चाचा को एक सन्देश देना है। मैं तुमसे बाद में मिलता हूँ।"

कह कर वह कुछ नहीं के कपड़ों को वापस किये बिना ही तुरन्त ही कुमासी की एक गली में घुस गया और गायब हो गया। कुछ नहीं ने सोचा कि उसको जरूर ही कोई बहुत जरूरी काम होगा इसी लिये वह इस तरह से बिना मेरे कपड़े लौटाये अचानक चला गया।

पर अनन्सी तो अब तक गायब हो चुका था सो कुछ नहीं ने अपने लिये अकेले ही पत्नी ढूँढनी शुरू कर दी।

उधर अनन्सी कुछ नहीं के कपड़ों से बहुत ही प्रभावित था। अब वह कुछ नहीं की तरह चल रहा था, कुछ नहीं की तरह बात कर रहा था और वहाँ के लोग उसको बहुत बड़ा आदमी समझ रहे थे।

अनन्सी कुमासी में केवल तीन दिन ही रहा और उसको एक सुन्दर सी पत्नी मिल गयी क्योंकि लोग उससे बहुत प्रभावित थे। पर

कुछ नहीं को बहुत मुश्किल पड़ी क्योंकि वह तो एक भिखारी की तरह लग रहा था और कोई आदमी उस जैसे बदकिस्मत आदमी को अपनी बेटी देने को तैयार नहीं था।

आखिर एक गरीब स्त्री ने कुछ नहीं से कहा — "तुम मेरी बेटी से शादी कर लो क्योंकि हालाँकि तुम भी बहुत गरीब हो फिर भी तुम हम लोगों से बहुत अच्छे हो।"

सो कुछ नहीं ने उस स्त्री की बेटी से शादी कर ली। वह अनन्सी की पत्नी की तरह से सुन्दर तो नहीं थी पर सारे कुमासी में वही एक थी जो उससे शादी करने पर राजी हो गयी थी। शादी के बाद दोनों ने कुछ नहीं के गाँव की तरफ अपनी वापसी की यात्रा शुरू की।

रास्ते में उनको अनन्सी मिल गया जो अभी भी कुछ नहीं के बढ़िया कपड़े पहने था। वह अपनी पत्नी के साथ एक गधे पर सवार था।

अनन्सी बोला — "आहा दोस्त कुछ नहीं। तो तुम यहाँ हो। मैं तो तुमको ढूँढ ढूँढ कर हार गया। कहाँ थे तुम? मुझे लग रहा है कि पत्नी के मामले में तुम्हारी किस्मत कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं निकली।"

कुछ नहीं ने अनन्सी की सुन्दर नौजवान पत्नी की तरफ देखा और उस गधे की तरफ देखा जिस पर वे दोनों सवार थे पर उसने कपड़ों के बारे में कुछ नहीं कहा।

जब वे लोग अपने गॉव के चौराहे पर पहुँचे तो दोनों पत्नियों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि अनन्सी के घर की तरफ जाने वाली सड़क बहुत गन्दी थी और उस पर बहुत सारी झाड़ियॉ उगी हुई थीं। जबकि कुछ नहीं के घर की तरफ जाने वाली सड़क बहुत साफ थी और उस पर झाड़ियॉ भी नहीं थी।

कुछ नहीं के नौकर हाथ पैर धोने का पानी और नये कपड़े ले कर अपने मालिक का इन्तजार कर रहे थे।

दोनों पत्नियॉ चुप थीं। अनन्सी और कुछ नहीं ने एक दूसरे से विदा ली और अपने अपने घर चले गये।

अनन्सी की पत्नी ने अपने आपको एक छोटी सी बड़ी खराब पुरानी झोंपड़ी में पाया जबकि कुछ नहीं की पत्नी कुछ नहीं के नये बढ़िया साफ मकान में पहुँची।

अनन्सी की पत्नी वहॉ जितनी देर तक खड़ी रह सकी उतनी देर तक तो खड़ी रही फिर उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। वह वहॉ बहुत नाखुश थी। एक शाम वह वहॉ से खिसक ली और कुछ नहीं के घर की तरफ जाने वाली सड़क पर चल दी।

जब वह कुछ नहीं के घर पहुँची तो कुछ नहीं की पत्नी ने उसको साथ बहुत ही अच्छा बरताव किया। अनन्सी की पत्नी ने यह तय किया कि क्योंकि उसको धोखा दिया गया है इसलिये वह अब अनन्सी के घर रहने नहीं जायेगी बल्कि वह कुछ नहीं के घर कुछ नहीं और उसकी पत्नी को साथ ही रहेगी।

पर जब अनन्सी को पता चला कि उसकी पत्नी कहाँ है तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने उसको पाने के लिये कितनी मुश्किलें उठायी थीं। वह उसको लाने के लिये कितनी दूर चला था। वह उसके लिये कुमासी तक गया था।

यहाँ तक कि उसको पाने के लिये उसने कुछ नहीं का बेवकूफ भी बनाया था। और अब वह उसको छोड़ कर कुछ नहीं और उसकी पत्नी के साथ रहने चली गयी। अनन्सी इस बात पर बहुत गुस्सा था। अनन्सी ने कुछ नहीं को मारने का प्लान बनाया।

एक रात वह अपने घर से बाहर निकला और बाहर निकल कर उसने उस सड़क पर एक गड्ढा खोदा जो कुछ नहीं के घर से आती थी।

उसने वह गड्ढा काफी गहरा खोदा था और उसने उस गड्ढे में काफी सारे लकड़ी की नुकीले टुकड़े डाल दिये जैसे कि वह किसी जानवर को पकड़ने का जाल बिछा रहा हो।

फिर उसने उस गड्ढे को छोटी छोटी डंडियों और पत्तों से ढक दिया ताकि वह छिपा रहे। यह कर के उसने सड़क पर चिकनाई लगा दी ताकि वह फिसलने वाली हो जाये।

बस इसके बाद वह झाडियों में छिप कर बैठ गया और ज़ोर से चिल्लाया — "ओ मेरे दोस्त कुछ नहीं, तुम जल्दी से मेरे घर आओ मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ।"

कुछ नहीं अनन्सी के घर जाने के लिये उठा तो कुछ नहीं की पत्नी बोली — "सुनो कुछ नहीं, तुम अनन्सी के पास मत जाओ। वह कोई अच्छा आदमी नहीं है।"

अनन्सी की पत्नी भी जो वहाँ से भाग कर आयी थी बोली — "अनन्सी तो बहुत ही चालाक आदमी है। तुम उसका विश्वास नहीं कर सकते इसलिये वहाँ मत जाओ। वहाँ अँधेरा भी है।"

पर अनन्सी उसको बुलाता ही रहा जब तक कि कुछ नहीं अपने घर से अँधेरे में बाहर नहीं निकल गया। कुछ नहीं ने रास्ते को देखने के लिये एक छोटी सी टार्च ली और अनन्सी के घर की तरफ चल दिया।

जब वह उस जगह आया जहाँ अनन्सी ने रास्ते पर चिकनाई लगा रखी थी वह फिसल गया और वह अनन्सी के बनाये गड्ढे में गिर पड़ा। नीचे नुकीली लकड़ियाँ थीं उन पर गिरते ही वह मर गया और अनन्सी वहाँ से भाग गया।

गाँव के लोग कुछ नहीं के मर जाने से बहुत दुखी हुए। उसके नौकर और उसकी पत्नी भी उसके लिये बहुत रोये क्योंकि वह एक बहुत अच्छा आदमी था।

उसकी पत्नी ने बहुत सारे याम पकाये और उनसे उसने एक मीठी सब्जी बनायी और उसको ले कर गाँव में चारों तरफ गयी। उसने उसमें से कुछ खाना कुछ बच्चों को भी दिया जो उसको रास्ते में मिले और उनसे अपने मरे हुए पति के लिये रोने के लिये कहा।

इसीलिये जब बहुत से बच्चे रोते हैं और उनसे पूछो कि "तुम क्यों रो रहे हैं" तो वे कहते हैं "कुछ नहीं।"

13 सोको ने अशान्ती पर कर्जा कैसे चढ़ाया[70]

एक बार की बात है कि सोको[71] नाम का एक शिकारी मीना[72] नाम के शहर से अशान्ती[73] आया। सोको अशान्ती देश का आदमी नहीं था पर उसने कुमासी[74] की एक लड़की से शादी की थी इसलिये वह अशान्ती में रहता था।

बहुत जल्दी ही उसने अशान्ती भाषा सीख ली थी सो वहॉ के लोग यह भूल गये थे कि वह अशान्ती का आदमी नहीं था बल्कि कहीं बाहर से आया आदमी था।

बस उसमें एक ही बात थी और वह यह कि उसके ऊपर कर्जा था। यह कर्जा उसके ऊपर वहॉ आने से पहले से ही था।

वहॉ के लोग इसके बारे में परेशान थे क्योंकि जब तक सोको अशान्ती नहीं आया था तब तक अशान्ती में किसी के ऊपर कोई कर्जा नहीं था। पर अब अशान्ती में किसी पर कर्जा है यह बात अशान्ती के लोगों को अच्छी नहीं लग रही थी।

---

[70] How Soko Brought Debt to Ashanti (Tale No 13) – a folktale from Ghana, West Africa.

[71] Soko – a name of a man

[72] Mina town

[73] Ashanti – . Long before Ghana was known as Gold Coast. Ashanti was a large tribe living there and ruled the Ashanti Kingdom which was named on that tribe.

[74] Kumasi is a metropolis megacity and capital city of Ashanti situated on the semi-island exclave Ashanti land. Ashanti is centered around the Ashanti capital city of Kumasi situated 20 miles North-East of a Crater Lake, the Lake Bosumtwi, in a rain forest region.

एक दिन कुछ बड़े बूढ़े लोग सोको के पास गये और बोले — "सोको बेटा, तुम्हारे आने से पहले यहाँ किसी पर कोई कर्जा नहीं था। जबसे तुम आये तो तभी से अशान्ती में कर्जा आया है। तुम इस कर्जे को खत्म कर दो तो हम सब कर्जे से आजाद हो जायेंगे।"

सोको ने इस मामले को समझा तो सोचा कि वे बड़े बूढ़े लोग ठीक ही कह रहे थे। यह सब सच था। उसको सचमुच में इस कर्जे से छुटकारा पाना चाहिये ताकि अशान्ती पर कोई कर्जा न रहे। पर वह यह नहीं जानता था कि वह यह कैसे करे।

पर एक सुबह जब सोको पाम के रस से पाम की शराब बना रहा था तो अनन्सी वहाँ आया।

सोको ने उससे पूछा — "अनन्सी, तुम एक बहुत ही होशियार आदमी हो। तुम ही मुझे कोई अच्छी सलाह दे सकते हो।

मेरे ऊपर कर्जा है और अशान्ती में कभी किसी के ऊपर कोई कर्जा नहीं रहा इसलिये यहाँ के लोग इस बात से बहुत परेशान हैं कि अशान्ती कर्जे में है। वे मुझसे उस कर्जे को वापस करने को कह रहे हैं। पर मैं यह कैसे करूँ?"

अनन्सी ने सोचा और फिर बोला — "यह तो बहुत आसान है। बस तुम इतना कहो कि "जो कोई यह पाम की शराब पियेगा वह इस कर्जे को ले लेगा।" इसके बाद जो भी तुम्हारी यह सारी शराब पियेगा वह तुम्हारे कर्जे को ले लेगा।"

सोको ख़ुशी से बोला — “यह तो तुमने बहुत ही अच्छी बात बतायी कि जो कोई भी यह शराब पियेगा वही यह कर्जा ले लेगा।”

अनन्सी बोला — “अब क्या तुम मुझे एक गिलास यह पाम की शराब पिला सकते हो?”

सोको ख़ुशी से बोला — “अपने आप ले लो अनन्सी।”

अनन्सी तो यही चाहता था कि वह सबसे पहले उस पाम की शराब पिये सो उसने पाम की शराब पी। सोको बोला — “अब यह कर्जा तुम्हारे ऊपर हो गया। मेरे ऊपर अब कोई कर्जा नहीं है।”

“ठीक।” इस तरह अनन्सी ने सोको का कर्जा ले लिया और वह अपने खेत पर बीज बोने चला गया।

बीज बो कर वह बोला — “जो कोई मेरा यह अनाज खायेगा वह मेरा कर्जा ले लेगा।” बीज से पौधे निकलने लगे और पौधे बड़े होने लगे। फिर उसमें अनाज के दाने आ गये।

एक दिन एक चिड़िया जंगल में से अपने घोंसले से ऊपर से उड़ती हुई आयी और अनन्सी के खेत में से उसके अनाज के दाने खा गयी।

अनन्सी बोला — “आहा, अब यह कर्जा तुम्हारे ऊपर आ गया चिड़िया रानी। मेरे ऊपर अब किसी का कोई कर्जा नहीं है।” चिड़िया अनन्सी के दाने खा कर अपने घोंसले में वापस चली गयी।

अब कर्जा चिड़िया के ऊपर आ गया था। कुछ दिन बाद उसने कुछ अंडे दिये तो वह बोली — "जो कोई मेरे अंडे तोड़ेगा वह मेरा कर्जा ले लेगा।" यह कह कर वह वहाँ से उड़ गयी।

जब वह अपने घोंसले में नहीं थी तो हवा का एक जोर का झोंका आया और उस पेड़ की एक शाख टूट गयी जिस पर उस चिड़िया का घोंसला था। वह शाख उस चिड़िया के घोंसले पर गिरी और उससे उसमें रखे उसके अंडे टूट गये।

जब चिड़िया वापस आयी और उसने देखा कि क्या हो गया था तो उसने पेड़ से कहा — "अब यह कर्जा तुम्हारे ऊपर आ गया पेड़ जी। मैं तो इस कर्जे से आजाद हो गयी।"

अब पेड़ के ऊपर कर्जा आ गया था। कुछ दिनों में पेड़ पर फूल आये तो पेड़ बोला — "जो कोई मेरे फूल खायेगा उस पर मेरा कर्जा चढ़ जायेगा।"

कुछ देर में एक बन्दर वहाँ आया और उसने उस पेड़ के फूल खा लिये। पेड़ बोला — "अब मेरा कर्जा तुम्हारे ऊपर चढ़ गया। मैं तो इस कर्जे से आजाद हो गया। मेरे ऊपर अब कोई कर्जा नहीं है।"

अब बन्दर के ऊपर कर्जा था तो बन्दर बोला — "जो कोई भी मुझे खायेगा वह मेरा कर्जा ले लेगा।"

तभी एक शेर वहाँ आ गया। उसने बन्दर को पकड़ लिया और खाने लगा तो बन्दर बोला — "वाह बहुत अच्छे, अब मेरा कर्जा तुम्हारे ऊपर चढ़ गया और मैं इस कर्जे से आजाद हो गया।"

अब कर्जा शेर पर था। वह जंगल में उस कर्जे को लिये हुए घूम रहा था। घूमते घूमते वह बोला — "जो कोई मुझे खायेगा वह मेरा कर्जा ले लेगा।"

अब अशान्ती पर कोई कर्जा नहीं था। सारा कर्जा जंगल में शेर पर था।

बदकिस्मती से एक दिन सोको जंगल में शिकार के लिये आया और उसने उस शेर को मार डाला। शेर मार कर वह उसको घर ले गया। शेर बहुत बड़ा था सो उसने उसका माँस गाँव में बहुत सारे लोगों में बाँट दिया।

वह माँस उन्होंने खाया और उसी दिन से अशान्ती के सारे लोगों के ऊपर कर्जा चढ़ गया।

14 भूखा मकड़ा और कछुआ[75]

मकड़े को बहुत भूख लगी थी। असल में तो वह मकड़ा हमेशा ही बहुत भूखा रहता था। अशान्ती[76] में हर आदमी उसकी भूख को जानता था।

पर वह हमेशा केवल भूखा ही नहीं रहता था बल्कि वह लालची भी बहुत था। उसको अपने हिस्से से हमेशा ही बहुत ज़्यादा चाहिये था इसलिये लोग उस मकड़े से हमेशा ही बचते रहते थे।

पर एक दिन एक अजनबी उधर आ निकला जहाँ यह मकड़ा रहता था। उस अजनबी का नाम था कछुआ। कछुए अपने घर से बहुत दूर निकल आया था। वह गर्म धूप में सारे दिन चल कर आ रहा था सो वह बहुत थका हुआ था और भूखा भी था।

जब मकड़े ने उसको इतना थका हुआ और भूखा देखा तो उसने उसको अपने घर बुला लिया और उसको कुछ खाने को दिया।

हालाँकि यह सब उसको अच्छा नहीं लग रहा था पर अगर वह इस थके हुए यात्री को खाना खिलाने के लिये नहीं बुलाता तो वह

---

[75] Hungry Spider and the Turtle (Tale No 14) – a folktale from Ghana, West Africa.

[76] Long before Ghana was known as Gold Coast. Ashanti was a large tribe living there at that time and ruled the Ashanti Kingdom which was named on that tribe.

कहीं खेतों की तरफ चला जाता और फिर वहाँ के लोगों से उसकी शिकायत कर देता और लोग उसकी पीठ पीछे उसकी बुराई करते।

उसने कछुए से कहा — "देखो, वहाँ उस झरने पर पानी है तुम वहाँ जा कर अपने पैर धो सकते हो। तुम इस सड़क पर चले जाओ तो तुम उस झरने पर पहुँच जाओगे। तब तक मैं तुम्हारा खाना तैयार करके रखता हूँ।"

कछुए ने कैलेबाश[77] का एक कटोरा लिया, घूमा और मकड़े की बतायी सड़क पर जितनी जल्दी से जल्दी वह चल सकता था झरने की तरफ चल दिया।

झरने पर पहुँच कर उसने वह कटोरा पानी में डुबोया और उसमें पानी में भर कर अपने पैर धोये और फिर वापस उसी रास्ते से मकड़े के घर चला। पर वह रास्ता बहुत धूल भरा था। जब तक वह अपने पैर धो कर घर वापस आया उसके पैरों में फिर से धूल लग गयी थी।

मकड़े ने तब तक खाना बना लिया था और सजा कर रखा हुआ था। खाना गर्म था और उसमें निकलती भाप की खुशबू से कछुए के मुँह में पानी आ रहा था।

---

[77] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes. See its bowl picture above.

कछुए ने सुबह सूरज निकलने से अब तक कुछ भी नहीं खाया था। उसको बहुत ही भूख लगी थी।

जब कछुआ पैर धो कर मकड़े के घर में घुसा तो मकड़े ने उसके पैरों की तरफ देखा तो उसको अच्छा नहीं लगा। उसने देखा कि कछुए के पैर तो बहुत ही गन्दे हो रहे हैं।

मकड़ा बोला — "अरे तुम्हारे पैर तो बहुत गन्दे हो रहे हैं। क्या तुमको ऐसा नहीं लगता कि खाना खाने से पहले तुमको इन्हें धो लेना चाहिये?"

कछुए ने अपने पैरों की तरफ देखा तो उसको तो बहुत ही शर्म आयी। वे तो सचमुच में ही बहुत गन्दे थे। वह फिर घूमा और जितनी जल्दी झरने पर जा सकता था गया। उसने फिर से कैलेबाश के कटोरे में पानी भर कर अपने आपको साफ किया और अपने पैर धोये और फिर जितनी जल्दी घर वापस घर आ सकता था घर लौट कर आया।

पर कछुआ तो कितनी भी जल्दी चले उसको कहीं भी जाने में समय लगता है। इस बार जब बह घर लौटा तो उसने देखा कि मकड़े ने तो खाना भी शुरू कर दिया था।

मकड़ा बोला — "कितना स्वादिष्ट खाना है।" उसने फिर से कछुए के पैरों की तरफ देखा तो वे तो अभी तक गन्दे थे। उसने फिर कहा — "क्या तुम ठीक से नहा कर नहीं आ रहे?"

कछुए ने फिर से अपने पैरों की तरफ देखा तो वे अभी तक गन्दे थे। कछुआ बोला — "पर मैंने इनको साफ किया था। मैंने इनको दो बार धोया। यह तो तुम्हारी गन्दी धूल भरी सड़क है जो मेरे पैरों को बार बार गन्दा कर देती है।"

मकड़ा बोला — "तो इसका मतलब यह है कि तुम मेरे घर को गाली दे रहे हो?" कह कर उसने एक बड़ा सा कौर खाया और उसको चबाने लगा। वह बहुत दुखी दिखायी दे रहा था।

कछुआ खाने की खुशबू लेते हुए बोला — "नहीं, मैं तुम्हारे घर को गाली नहीं दे रहा मैं तो बस तुमको बता रहा था।"

मकड़ा बोला — "ठीक है अब तुम भाग कर जाओ और जल्दी से अपने पैर धो कर वापस आओ ताकि हम दोनों साथ साथ खाना खा सकें।"

कछुए ने देखा कि आधा खाना तो खत्म ही हो चुका था और मकड़ा जितनी तेज़ी से खा सकता था उतनी तेज़ी से खाता ही जा रहा था।

कछुआ एक बार फिर जल्दी से उस झरने पर गया, वहॉ जा कर उसने अपने कटोरे में पानी भरा और अपने पैरों पर छिड़का और वापस घर की तरफ चल दिया।

पर इस बार वह उस धूल भरी सड़क से नहीं गया बल्कि वह घास पर चल कर झाड़ियों से हो कर गया। इससे उसको थोड़ी ज़्यादा देर लग गयी पर इस बार उसके पैर गन्दे नहीं हुए। जब वह

घर पहुँचा तो उसने देखा मकड़े का खाना खत्म हो चुका है और मकड़ा अपने होठ चाट रहा था।

मकड़ा बोला — "ओह आज का खाना कितना बढ़िया था।"

कछुए ने प्लेट में झाँक कर देखा तो वह तो खाली पड़ी थी। खाना तो खाना यहाँ तक कि उसमें से खाने की खुशबू तक जा चुकी थी।

कछुए को बहुत भूख लगी थी पर वह कुछ बोला नहीं। बाद में मुस्कुरा कर बोला — "हाँ खाना तो बहुत ही अच्छा था। तुम लोग अपने गाँव में यात्रियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव करते हो। अगर तुम कभी मेरे देश में आओ तो वहाँ तुम्हारा बहुत अच्छा स्वागत होगा।"

मकड़ा बोला — "ओह यह तो कुछ भी नहीं है। कुछ भी नहीं।"

कछुआ चला गया। उसने मकड़े के घर में जो कुछ भी हुआ था वह किसी से भी नहीं कहा। वह इस सबके बारे में बिल्कुल चुप ही रहा।

फिर यह कई महीने बाद की बात है कि घूमते घूमते एक दिन मकड़ा अपने घर से बहुत दूर निकल गया। उसने देखा कि वह तो उसी कछुए के देश में पहुँच गया था जो एक बार उसके घर आया था। वह कछुआ एक झील के किनारे पर बैठा हुआ धूप खा रहा था।

कछुआ उसको देखते ही बोला — "अरे दोस्त मकड़े, तुम तो अपने गाँव से बहुत दूर आ गये हो। क्या तुम मेरे साथ खाना खाना पसन्द करोगे?"

मकड़ा उस समय बहुत भूखा था बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। ऐसा तो होना ही चाहिये। जब कोई आदमी अपने घर से बहुत दूर हो तो उसके साथ दया का बर्ताव तो करना ही चाहिये।"

कछुआ बोला — "अच्छा, तुम ज़रा यहाँ ऊपर ठहरो। मैं तुम्हारे लिये नीचे खाना बनाने जाता हूँ।" कह कर कछुआ पानी में डुबकी मार कर झील की तली में पहुँच गया। वहाँ जा कर वह खाना खाने लगा।

मकड़ा झील के किनारे बैठा बड़ी बेसब्री से कछुए के खाना लाने का इन्तजार कर रहा था। खाना खा पी कर कछुआ पानी के ऊपर आया और मकड़े से बोला — "ठीक है। सब कुछ तैयार हो गया। चलो अब नीचे चलो खाना खाते हैं।" कह कर उसने अपना सिर पानी में नीचे किया और झील में नीचे तैर गया।

मकड़ा तो बहुत भूखा था ही सो वह भी कछुए के पीछे पीछे पानी में कूद गया। पर मकड़ा तो बहुत हल्का था। वह पानी में नीचे नहीं जा सका वह तैरने लगा। उसने पानी में बहुत हाथ पैर मारे पर वह तो वहीं पानी के ऊपर ही रहा। किसी तरह भी वह नीचे नहीं जा सका।

वह काफी देर तक पानी में नीचे जाने के लिये कोशिश करता रहा जहाँ कछुआ खाना खा रहा था पर उसकी हर कोशिश बेकार रही वह किसी भी तरह वहाँ नहीं पहुँच सका।

कुछ देर बाद कछुआ अपने होठ चाटता हुआ फिर ऊपर आया और मकड़े से पूछा — "अरे क्या हुआ तुम को? तुम नीचे नहीं आये? क्या तुमको भूख नहीं लगी? खाना तो बहुत अच्छा है। आओ तुम जल्दी करो।" और यह कह कर वह पानी में फिर से डुबकी मार गया।

मकड़े ने उस झील की तली में पहुँचने के लिये एक बार फिर से अपनी पूरी कोशिश की पर वह वहाँ तक न पहुँच सका। वह तो पानी के ऊपर तैरता ही रहा।

फिर उसने कुछ सोचा तो वह किनारे पर वापस गया, पत्थर के कुछ टुकड़े उठाये और उनको अपनी जैकेट की जेब में रख लिये। उसने अपनी जेबों में इतने सारे पत्थर के टुकड़े रखे कि वह बहुत भारी हो गया।

उन पत्थरों को अपनी जेबों में रख कर वह इतना भारी हो गया कि वह चल भी नहीं पा रहा था। उसके बाद वह पानी में कूद पड़ा और इस बार तो वह अपने भारीपन की वजह से पानी में नीचे डूबता ही चला गया।

अब वह वहाँ पहुँच गया जहाँ कछुआ खाना खा रहा था। मकड़ा बहुत भूखा था। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि आधा खाना तो पहले से ही खाया जा चुका था।

जैसे ही वह खाने के पास पहुँचा तो कछुए ने नम्रता से कहा — "माफ करना मेरे दोस्त, मेरे देश में लोग जैकेट पहन कर खाना नहीं खाते। सो तुम अपनी जैकेट उतार दो ताकि फिर हम ठीक से खाना खा सकें।"

कह कर कछुए ने एक बहुत बड़ा सा खाने का कौर खाया और उसको चबाने लगा। मकड़े ने सोचा कि अगर यह इसी तरह खाता रहा तो कुछ मिनटों में वहाँ कोई खाना नहीं बचेगा।

मकड़े का सारा शरीर भूख से दर्द कर रहा था। कछुए ने दूसरा बड़ा सा खाने का कौर खाया। यह देख कर मकड़े ने अपनी जैकेट उतारी और खाने को लेने के लिये दौड़ा पर बिना पत्थर के टुकड़ों के तो वह फिर से इतना हल्का हो गया था कि वह तुरन्त ही पानी के ऊपर पहुँच गया।

लोगों का कहना है कि "एक अच्छा खाना दूसरा अच्छा खाना देता है।"

15 पहाड़ फेंकने वाला[78]

एक बार एक लड़का था जिसका नाम था टोड्डू[79]। वह अशान्ती[80] राज्य के कुमासी[81] के उत्तर के घास के मैदानों में रहता था। वह अपने पिता की गायों की देखभाल करता था। वह रोज उनको चराने ले जाता और पानी पिलाने ले जाता।

उसके पिता की बहुत सारी गायें थीं पर उनके पास केवल एक ही बैल था। मगर वह बैल सारे अफ्रीका में सबसे बड़ा था। उस बैल का नाम भी "केवल एक" ही था।

पर जब भी कोई बछड़ा पैदा होता तो वह केवल एक उसको मार देता क्योंकि वह सोचता था कि उन गायों के लिये वह एक अकेला ही काफी था।

एक बार एक बछड़ा पैदा हुआ तो टोड्डू को वह बहुत अच्छा लगा। केवल एक को अभी उसके जन्म का पता नहीं था सो टोड्डू उस नये जन्मे बछड़े को जंगल में ले गया और उसे वहाँ ले जा कर छिपा दिया। रोज वह उस गायों के झुंड में उस बछड़े के लिये उसकी माँ का दूध लेने के लिये आता और उसका दूध ले जाता।

---

[78] Throw Mountains (Tale No 15) – a folktale from Ghana, West Africa.

[79] Toddu – a name of a man

[80] Long before Ghana was known as Gold Coast. Ashanti was a large tribe living there at that time and ruled the Ashanti Kingdom which was named on that tribe.

[81] Kumasi is a metropolis megacity and capital city of Ashanti situated on the semi-island exclave of Ashanti land. Ashanti is situated around the Ashanti capital city of Kumasi, 20 miles North-East of a Crater Lake, the Lake Bosumtwi, in a rain forest region.

केवल एक को इस घटना को देख कर कुछ शक तो हुआ पर उसको ज़्यादा कुछ पता नहीं चल सका। जब वह बछड़ा थोड़ा बड़ा हो गया तो टोड्डू उसको देश के और पीछे के हिस्से में ले गया।

वहाँ बछड़ा और बड़ा होता गया। जब वह चार साल का हो गया तो केवल एक के बराबर हो गया। तब टोड्डू उसको एक चट्टान के पास ले गया जो एक मैदान के बीच में खड़ी थी।

वहाँ ले जा कर वह उससे बोला — "तुम अब बैल जैसे लगते हो और बैल जैसे ही बर्ताव भी करते हो पर तुम अभी पूरे बड़े नहीं हुए हो। तुम पूरे बड़े जब होगे जब इस चट्टान को हिला लोगे।"

यह सुन कर उस बैल ने उस चट्टान पर अपना सिर लगाया और उस बड़ी चट्टान को हिलाने की कोशिश की पर वह तो ज़रा सी भी हिल कर नहीं दी।

टोड्डू बोला — "इस चट्टान को हिलाने के लिये तुम अभी बहुत छोटे हो। तुम अभी भी बछड़े ही हो। एक साल और इन्तजार करो।"

उस नौजवान बैल को यह कह कर इसलिये उकसाया गया था क्योंकि वह उस चट्टान को हिला नहीं सका था जिस पर उसने अपना सिर रखा था। उसने अपना सिर उस चट्टान पर इतनी जोर से और इतनी चौड़ी जगह रखा कि उस चट्टान से जमीन भी दब गयी और वहाँ एक झील बन गयी – झील बूरो[82]।

---

[82] Lake Bouro

अगले साल टोड्डो उस बैल को फिर से वहीं उस चट्टान के पास ले कर गया और उससे कहा — "अबकी बार तुम अपने सींग इस पर रखो और इसको हटाने की कोशिश करो।"

उस नौजवान बैल ने अपना सिर उस चट्टान पर रखा और उसको उछालने की कोशिश की पर वह तो फिर से हिल कर भी नहीं दी। टोड्डू बोला — "तुम अभी भी छोटे हो। तुमको अभी और बड़े होना है।"

यह सुन कर वह बैल बहुत नाराज हो गया। उसने अपना एक सींग जमीन में गड़ाया और उस चट्टान को उखाड़ा तो उसको उसने इतना गहरा उखाड़ा कि वहॉ पानी निकल आया और बहने लगा। वहॉ उससे एक नदी बन गयी — आदीफ़ोफू नदी[83]।

उन्होंने फिर एक और साल इन्तजार किया। अगले साल टोड्डू फिर बोला — "अब तुम बड़े हो गये हो। अपने सींग इस चट्टान पर लगाओ और इसको धक्का मारो।"

बैल ने फिर अपना सिर उस चट्टान से लगाया और उसको इतनी जोर से धक्का दिया कि उसकी ऑखें लाल हो गयीं और उसकी खाल से सफेद झाग निकलने लगे पर वह चट्टान हिल कर नहीं दी। यह देख कर बैल इतना ज़्यादा गुस्सा हो गया कि वह मीलों तक बहुत सारे पेड़ों को गिराता हुआ जंगल में भाग गया।

---

[83] Adifofu River

यह सब तो एक बहुत बड़े तूफान की तरह था जिसकी अशान्ती के लोग आज भी बात करते हैं। दूसरा साल आया तो टोड्डो फिर अपने बैल से बोला — "फिर कोशिश करके देखो।"

इस बार बैल ने उस चट्टान के नीचे अपने पैर गड़ाये, उसकी मॉस पेशियॉ फूलीं और वह चट्टान थोड़ी सी हिली। टोड्डू बोला — "तुम यह काम अगले साल कर सकते हो।"

पर बैल इस बात से खुश नहीं था। वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि सारे कुमासी में उसकी वह आवाज बिजली की गरज जैसी लगी और लोग डर के मारे अपने अपने घरों में घुस गये।

अगले साल वह बैल आठ साल का हो गया था। अब उसके सींग इतने मोटे हो गये थे जितने के बाओबाब पेड़[84] का तना होता है।

टोड्डू बोला — "अब फिर से कोशिश करो।" अबकी बार बैल ने उस चट्टान को अपने सीगों से बहुत ही हल्के से खिसकाने की कोशिश की। फिर वह घास के मैदान से एक मील दूर चला गया।

उसने जमीन में अपने खुर लगाये और सिर नीचे कर के भागना शुरू किया और उस चट्टान के बीच में अपना सिर मारा। वह चट्टान टुकड़े टुकड़े हो कर चारों तरफ हवा में बिखर कर गयी। जहॉ जहॉ वे टुकड़े गिरे वे अफ्रीका के पहाड़ बन गये।

---

[84] Baobab tree – found in Madagaskar and mainland of Africa. See its picture above.

टोइडू बोला — "अब तुम तैयार हो। तुम्हारा नाम पहाड़ फेंकने वाला है। अब चलो उस केवल एक को ढूँढते हैं।"

वे लोग एक जंगली जगह पर पहुँचे जहाँ उसके पिता की गायें चर रही थीं। वे गायें उस नये बैल को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गयीं।

तब वहाँ केवल एक आया और बोला — "मैं केवल एक हूँ तुम कौन हो?"

नौजवान बैल बोला — "मैं पहाड़ फेंकने वाला हूँ। और अब तुम अकेले ही केवल एक नहीं हो।"

केवल एक यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गया। उसने अपना सिर नीचे किया और जमीन में अपना खुर जमाया। यह देख कर पहाड़ फेंकने वाले ने भी अपना सिर झुकाया और जमीन में अपना खुर जमाया।

दोनों ने इतनी ज़ोर से अपने अपने खुर जमाये कि इतना बड़ा धूल का तूफान आ गया कि वह समुद्र के किनारे तक ही नहीं बल्कि समुद्र के पानी में भी बहुत दूर तक चला गया। फिर उन्होंने अपने सींगों से लड़ाई शुरू कर दी।

उन्होंने अपनी लड़ाई में कम से कम सौ मील की जगह रौंद डाली जिससे कि वहाँ कुछ नहीं उगता क्योंकि वह जमीन उनके रौंदने से इतनी ज्यादा ठस हो गयी थी कि वह साँस भी नहीं ले

सकती थी। उनकी अपनी साँस भी इतनी गर्म हो गयी थी कि वहाँ लगे सारे पाम के पेड़ मुरझा गये।

कभी वे दोनों अलग हो जाते तो कभी वे इतनी ज़ोर से भिड़ जाते कि लोग समझते कि जैसे तोपें चल रही हों।

केवल एक ने अपनी टाँगें फैलायीं और अपने सींगों के सहारे इतनी जोर से उछला और पहाड़ फेंकने वाला हवा में उड़ गया। वह इतने ज़ोर से नीचे गिरा कि जहाँ वह गिरा, बटूडा के पास, वहाँ एक बहुत ही गहरा गड्ढा बन गया।

पहाड़ फेंकाने वाला उठा, अपने को हिलाया और फिर केवल एक के ऊपर हमला करने के लिये दौड़ा। इस बार उसने अपनी मोटी गरदन से उस केवल एक को बहुत दूर उछाल दिया।

केवल एक उछलता हुआ डूबते हुए सूरज के सामने से गुजरा तो लोगों को लगा कि सूरज ग्रहण पड़ गया। जब केवल एक जमीन पर गिरा तो वह उत्तरी पहाड़ों पर गिरा।

उसके गिरने से वे सब पहाड़ चौरस हो गये और इसी चौरस मैदान से हो कर फिर व्यापारी टिम्बकटू[85] से कुमासी जाने लगे।

पहाड़ फेंकने वाला अब टोड्डो के पिता की गायों का सरदार बन गया था और उसके बाद अब वहाँ जब भी कोई बछड़ा पैदा होता तो उनको कोई मारने वाला भी नहीं रहा।

---

[85] Timbaktoo is a city in West African nation Mali, 12 mile north of River Niger on the southern edge of Sahara Desert.

कभी कभी तूफान से पहले सारी गायें बछड़ों की तरह भाग जाती थीं। ऐसा इसलिये कि शायद उनको दूर से केवल एक का चिल्लाना सुनायी देता था।
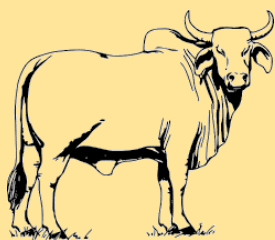
16 लालच से खाने वाला अन्सीगे करम्बा[86]

एक बार एक देश में जो सेनेगल और गाम्बिया नदियों[87] के बीच में है उसके माकू नाम के गॉव में एक आदमी रहता था जिसका नाम था अन्सीगे करम्बा।

अन्सीगे एक अमीर आदमी था क्योंकि उसको उसके पिता के मरने के बाद उनसे काफी सम्पत्ति मिली थी। पर वह एक बहुत ही कंजूस और लालच से खाने वाला आदमी भी था।

उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम था पामा[88] था और उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर और दास[89] थे। पर अपनी कंजूसी की वजह से वह उन सबके लिये बहुत ही मुश्किल आदमी था।

पामा से तो वह हमेशा ही शिकायत करता रहता था — "मुझे कभी पेट भर कर खाना नहीं मिलता।" या "तुम मुझको वह सब नहीं देती जो एक पत्नी को अपने पति को देना चाहिये।" आदि आदि।

अन्सीगे कभी किसी से अच्छा बर्ताव नहीं करता था। उसको लगता था कि उसके नौकर चाकर और उसके दास उसका बहुत ज़्यादा खाना खा रहे थे। इसके अलावा वे उसको लूट भी रहे थे।

---

[86] Ansige Karamba, the Glutton – a folktale from Ghana, West Africa.

[87] A country which is in between Senegal and Gambia Rivers – that is Ghana

[88] Paama – a name of a woman

[89] Translated for the words "Servants and Slaves"

जबकि असल में उनको बहुत कम खाना मिलता था क्योंकि अन्सीगे अपने सब सामान को इतनी अच्छी तरह से सँभाल कर रखता था कि कोई उससे कोई भी चीज़ नहीं ले सकता था। माकू के लोग सोचते थे कि उन्होंने अन्सीगे जैसा मुश्किल आदमी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा।

अन्सीगे अपनी पत्नी को अपनी शिकायतों से इतना बुरा भला कहता कि वह उसको बिल्कुल ही सहन नहीं कर पाती। एक दिन उसने अन्सीगे से कहा — "मैं कुछ दिनों के लिये अपने पिता के गॉव जाना चाहती हूँ। वे मुझे देखना चाहते हैं।"

कह कर उसने अपना सामान बॉधा और माकू छोड़ कर अपने पिता के घर चली गयी।

पर अब अन्सीगे और ज़्यादा नाखुश हो गया और पहले से भी ज़्यादा चिड़चिड़ा हो गया। अब उसके नौकर उसका खाना बनाते तो थे पर वे उसकी उसकी पत्नी की तरह परवाह नहीं करते थे।

उसकी पत्नी के जाने से पहले उसका खाना अच्छा भी होता था और काफी भी होता था पर अब उसका खाना अच्छा भी नहीं होता था और कम भी होता था।

वह अपने नौकरों और दासों से इस बात की जितनी ज़्यादा शिकायत करता उसको उतनी ही खराब चीज़ें खाने को मिलतीं क्योंकि वे सब उसके लालच से बहुत तंग आ चुके थे।

पामा के जाने के काफी दिनों बाद एक सुबह अन्सीगे ने सोचा — "यह तो मेरी बड़ी खराब हालत हो गयी है। मेरी पत्नी दो साल हुए अपने माता पिता के घर भाग गयी।

अब मुझे अपने नौकरों को अपना खाना बनाने के लिये कितना सारा पैसा देना पड़ता है फिर भी वे लोग मुझे धोखा देते हैं और खाने के लिये मुझे खराब चीज़ें देते हैं। मैं तो भूख से मरा जा रहा हूँ। मैं पामा को वापस ले कर आता हूँ।"

यह सोच कर वह पामा को लाने के लिये उसके गॉव चल दिया। अपनी लम्बी यात्रा के बाद वह उस गॉव में आया जहॉ पामा के माता पिता रहते थे। वह उनके घर गया तो पामा के पिता ने उसका स्वागत किया। मेहमानदारी के तौर पर पामा के पिता ने उसको एक छोटा बकरा भी दिया।

उस बकरे को देख कर तो अनसीगे के मुँह में पानी भर आया। वह सब कुछ भूल कर उस बकरे को बाहर एक मैदान में ले गया। वहॉ ले जा कर उसने उसको मार दिया और पकाया।

उसको इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं कोई आ न जाये और उससे उस बकरे का मॉस न मॉग ले सो उस बकरे के ठीक से पकने के पहले ही उसने उसका मॉस खाना शुरू कर दिया।

वह खाता गया और खाता गया। जल्दी ही सारा मॉस खत्म हो गया। पर अन्सीगे अभी भी भूखा था। उसने देखा कि मैदान में एक बहुत बड़ा नर भेड़ चर रहा था।

बस उसने उस भेड़ को पकड़ लिया, मारा और उसको पकाने के लिये वहाँ ले गया जहाँ उसकी आग जल रही थी।

अन्सीगे को अपने गाँव से गये हुए काफी समय हो गया था तो पामा ने सोचा कि उसका पति इतनी देर से गया कहाँ था तो अब तक वह वापस क्यों नहीं आया। और वह कर क्या रहा था।

उसने सोचा "मैं अपने पति को जानती हूँ। मुझे जा कर देखना चाहिये कि वह अपने लालच की वजह से किसी चक्कर में तो नहीं फँस गये हैं।"

सो वह मैदान की तरफ चल दी। वह ठीक सोच रही थी। वहाँ जा कर उसने देखा कि उसके पति ने एक भेड़ मार दिया है। उसने पूछा — "यह सब क्या है? यह तो वह बकरा नहीं है जो मेरे पिता ने आपको दिया था। यह तो एक भेड़ है जो यहाँ के सरदार का है।"

अन्सीगे बोला — "तुम ऐसे क्यों बात कर रही हो जैसे कि तुम मुझे जानती ही नहीं। जो बकरा तुम्हारे पिता ने मुझे दिया था वह तो मैंने खा लिया पर वह मेरे लिये काफी नहीं था। तब मुझे यह भेड़ दिखायी दे गया तो मैंने सोचा कि मैं इसी को खा लेता हूँ।"

पामा बोली — "बस अब आप मुश्किल में पड़ गये हैं। सरदार अब आपको अपना भेड़ मारने के लिये जरूर सजा देगा। कोई बात नहीं, मैं आपको इस मुश्किल से बाहर निकालने की कोशिश करती हूँ।"

उसने अन्सीगे से उस मरे हुए भेड़ को वहाँ ले जाने के लिये कहा जहाँ सरदार का एक जंगली घोड़ा बँधा हुआ था। वहाँ ले जा कर उन्होंने उस भेड़ को उस घोड़े के पास लिटा दिया।

मरे हुई भेड़ को वहाँ लिटा कर वे गाँव वापस गये। पामा रास्ते में सरदार के घर रुकी और उसको बताया कि उन्होंने उसके एक भेड़ को उसके जंगली घोड़े के पास पड़े हुए देखा है। लगता है कि घोड़े ने उसके भेड़ को लात मारी है जिससे वह भेड़ मर गया।

सरदार ने तुरन्त ही अपना एक आदमी यह देखने के लिये भेजा कि वे लोग ठीक कह रहे हैं या नहीं। उस आदमी ने वापस आ कर बताया कि वह स्त्री ठीक कह रही थी। भेड़ मर गया है और लगता है कि घोड़े ने उसको ठोकर मारी है जिससे कि वह भेड़ मर गया है। यह एक बहुत ही बुरी घटना है।

अगले दिन पामा ने अपने पिता से कहा — “अगर मैं अन्सीगे को ठीक से जानती हूँ तो मुझे लगता है कि वह माकू से काफी भूखे आये हैं। मैं उनकी भूख शान्त करने के लिये उनको खाने के लिये क्या दूँ?”

उसका पिता बोला — “तुम उसको खाने के लिये भुने हुए मक्का के दाने क्यों नहीं देतीं? उससे उसकी भूख शान्त होनी चाहिये।” सो पामा बाहर अपने मक्का के खेत में गयी और वहाँ से एक बहुत बड़ी टोकरी भर कर भुट्टे ले आयी।

उतनी मक्का तो **20** आदमियों के लिये काफी थी। पामा ने उस मक्का को भून लिया और अपने पति के पास ले गयी। अन्सीगे ने वह सारी मक्का खा ली। एक भुट्टा भी नहीं बचा पर उसकी भूख अभी भी शान्त नहीं हुई। वह तो और जाग गयी थी। उसको और खाना चहिये था।

अबकी बार वह खुद खेत में चला गया और वहाँ से उसने मक्का के भुट्टे तोड़ने शुरू कर दिये। भुट्टे तोड़ते तोड़ते करीब करीब ॲधेरा हो गया और जब अन्सीगे उतने भुट्टे तोड़ चुका जितने कि वह उठा कर ले जा सकता था तो वह गॉव की तरफ चल दिया।

उसको उस खेत में से रास्ता ढूँढने में बहुत मुश्किल पड़ रही थी और उधर ॲधेरा बढ़ता जा रहा था। जब वह भुट्टे के खेत में से बाहर निकला तो उसको कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था सिवाय गॉव की रोशनियों के।

सो वह उन्हीं रोशनियों की तरफ चल पड़ा। उस खेत और गॉव के बीच में एक कुॅआ था। जब वह उस कुॅए के पास आया तो वह ॲधेरे में कुॅआ न देख पाने की वजह से अपने सारे भुट्टों के साथ उस कुॅए में गिर पड़ा।

इस बीच पामा ने सोचा "मैं अपने पति को जानती हूॅ। मुझे लगता है कि मुझे जा कर देखना चाहिये कि वह कर क्या रहे हैं। उनके पेट में अब क्या जा रहा है।" सो वह उनको देखने के लिये चल दी।

उसने एक टार्च उठायी और खेत की तरफ चल दी। जब वह कुँए के पास आयी तो वहाँ उसने अन्सीगे की सहायता माँगने की आवाज सुनी।

उसने अपनी टार्च की रोशनी कुँए के अन्दर फेंकी तो उसने देखा कि अन्दर अन्सीगे है और उसके चारों तरफ भुट्टे तैर रहे हैं। उसने अन्सीगे से पूछा — "अरे आप वहाँ अन्दर क्या कर रहे हैं?"

अन्सीगे बोला — "नाटक मत करो जैसे कि तुम मुझे जानती ही नहीं। मैं तो बस कुछ और खाने के लिये ढूँढ रहा था। लोग मुझे भूखा मारने की कोशिश कर रहे हैं। तुम मुझे यहाँ से बाहर निकालो।"

पामा बोली — "आप तो वाकई बहुत मुश्किल में पड़ गये हैं। लोगों को आपको यहाँ देख कर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा कि आपने उनके भुट्टे चुराये हैं। पर आप चिन्ता न करें मैं आपको यहाँ से बाहर निकालने की कोशिश करती हूँ।"

वह वहाँ गयी जहाँ उनकी गायें रहती थीं और उनको उस कुँए तक हाँक कर लायी जिसमें अन्सीगे गिर गया था। जब गायों ने घास खाना शुरू कर दिया तो पामा ने सहायता के लिये चिल्लाना शुरू किया।

उसका चिल्लाना सुन कर गाँव के लोग भागे आये और उन्होंने पामा से पूछा कि क्या बात है वह क्यों चिल्ला रही थी।

पामा बोली — "बहुत ही बुरा हो गया है। मेरे पति इधर घूमने आये थे कि उन्होंने देखा कि गायें खेत में मक्का के पौधों को कुचल रही हैं और भुट्टों को तोड़ रही हैं। उन्होंने उनको खदेड़ने की कोशिश की और गिरे हुए वे भुट्टे उठाये जो उन गायों ने तोड़ कर फेंक दिये थे।

पर वह तो यहॉ के लिये एक अजनबी थे जिनको यहॉ के रास्ते पता नहीं थे सो वह इस कुॅए में गिर पड़े। उनको बाहर निकालने में मेरी सहायता कीजिये।"

गॉव वाले बोले — "कोई बात नहीं तुम चिन्ता न करो। यह कोई इतना बुरा भी नहीं है। हम इनको अभी निकाल देते हैं।"

उन्होंने गायों के खेत से भगा दिया और अन्सीगे को कुॅए से बाहर निकालने के लिये रोशनी और रस्सियॉ ले कर आये। कुॅए से बाहर निकलने के बाद अन्सीगे ने पहला काम यह किया कि वह जल्दी से खाना खाने के लिये घर भाग गया।

अगले दिन पामा के पिता ने उससे कहा — "बेटी आज तुम अपने पति के खाने के लिये कोई बहुत ही बढ़िया चीज़ बनाओ। कोई ऐसी चीज़ जो वह बहुत ज़्यादा पसन्द करता हो।"

पामा बोली — "आज में उनके लिये बाजरे की पकौड़ी[90] बनाती हूॅ।"

---

[90] Translated for the words "Millet Dumplings". Millet Dumplings are very famous in connection with a Japanese famous popular folktale "Momotaro or The Peach Boy"

उसने बाजरा एक लकड़ी की ओखली में डाला और उसको वह तब तक कूटती रही जब तक कि उसका आटा नहीं बन गया। अन्सीगे उसको दूर से भूखी निगाहों से देख रहा था।

पामा ने वह ओखली चार बार भरी और उसका आटा बनाया। वह आटा बहुत सारा था। उसने उसमें पानी मिलाया और फिर उसके पकौड़े बनाये।

जब उसने वे पकौड़े बना लिये तो वह उनको अपने पति के पास उनके खाने के लिये ले गयी। वे पकौड़े **20** आदमियों के खाने के लिये काफी थे पर अन्सीगे उन सबको खा गया।

जब उसने आखिरी पकौड़ा भी खा लिया तो वह फिर उस ओखली की तरफ ललचायी निगाहों से देखने लगा जिसमें वह बाजरा पीसा गया था। वह सोच रहा था कि शायद उसमें अभी कुछ और आटा बच गया हो।

वह उठा और उस ओखली के पास जा कर उसमें झॉक कर देखा तो उसको उसमें आधी दूर पर उसकी दीवार पर कुछ आटा लगा हुआ दिखायी दे गया।

बस उसने उसको चाटने के लिये उसमें अपना सिर नीचे की तरफ झुकाया। पर उसको चाटने के बाद उसको कुछ आटा ओखली की तली में भी लगा दिखायी दे गया। तो उसने अपना सिर और नीचे की तरफ झुका दिया।

पर जब वह अपना सिर उसमें से बाहर निकाल रहा था तो वह उसको बाहर नहीं निकाल पाया और वह उसमें अटक गया।

तभी पामा सोच रही थी... "मैं अपने पति को जानती हूँ। मुझे जा कर देखना चाहिये कि वह क्या कर रहे हैं। मुझे मालूम है कि उनके लालच ने उनको जरूर ही किसी मुश्किल में डाल दिया होगा।"

वह घर में अन्सीगे को ढूँढने के लिये इधर उधर गयी पर वह उसको कहीं दिखायी नहीं दिया तो वह बाहर ऑगन में गयी तो वहाँ उसने देखा कि वह तो ओखली में सिर डाले खड़ा है।

पामा ने पूछा — "अरे यह यहाँ क्या हो रहा है?"

अन्सीगे ओखली में सिर डाले डाले गुस्से से बोला — "अब तुम वहाँ मत खड़ी रहो और मुझसे यह मत पूछो कि यहाँ क्या हो रहा है।" उसकी आवाज उस ओखली में से गूँजती हुई आ रही थी।

"बाजरे का कुछ और आटा निकालने के चक्कर में मेरा सिर ओखली में फँस गया है। अब यह इसमें फँस गया है तो इसको निकालने की कोशिश करो।"

पामा बोली — "ठीक है ठीक है। मैं आपको अभी बाहर निकालती हूँ।"

वह फिर सहायता के लिये चिल्लायी तो गाँव वाले फिर वहाँ दौड़े आये कि क्या हो गया।

पामा बोली — "उफ़ कैसी बदकिस्मती है और यह सब मेरी गलती है। मैंने अपने पति से कहा कि उनका सिर बहुत ही बड़ा है। उन्होंने कहा "नहीं मेरा सिर बड़ा नहीं है।"

मैंने फिर कहा कि "आपका सिर इतना बड़ा है कि इस ओखली में नहीं जा सकता" तो उन्होंने फिर कहा कि "नहीं मेरा सिर इतना बड़ा नहीं है।"

और फिर उन्होंने अपना सिर इस ओखली में मुझे यह दिखाने के लिये घुसा दिया कि उनका सिर इतना बड़ा नहीं है कि वह इस ओखली में न आ सके। बस वह उसमें फॅस गया। सो यह सब मेरी गलती से हुआ।"

लोग ओखली के ऊपर अन्सीगे का पिछवाड़ा ऊपर की तरफ देख कर हॅस पड़े फिर बोले — "कोई बात नहीं। यह सब इतना बुरा नहीं है। पर तुम ठीक कहती हो इसका सिर तो वाकई में बहुत बड़ा है।"

उन्होंने एक कुल्हाड़ी ली और उससे वह ओखली तोड़ दी। इस तरह अन्सीगे का सिर उसमें से बाहर निकल आया। सारे गॉव को यह सब देख कर बहुत आनन्द आया।

पर अन्सीगे बहुत गुस्सा था। उसको लोगों का इस तरह अपने ऊपर हॅसना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। उसको उनका हॅसना इतना ज़्यादा बुरा लगा कि उसने अपना सामान उठाया और अपने गॉव माकू वापस चला गया।

जब वह अपने गॉव वापस आ गया तो उसे याद आया कि अपने खाने के चक्कर में वह पामा से यह कहना तो भूल ही गया कि वह उसको लेने के लिये आया था और उसको उसके साथ चलना है।

सो उसने अपने एक नौकर को पामा के गॉव भेजा कि वह तुरन्त ही चली आये पर पामा ने उसके हाथों एक सन्देश भेज दिया — "अब तुम्हें इस तरह का नाटक करने की जरूरत नहीं है जैसे कि मैं तुमको जानती ही नहीं।"

17 हर एक से हाथ मत मिलाओ[91]

एक मेंढक का बहुत बड़ा खेत था। जब उस खेत की सफाई और बुआई का समय आया तो वह इस काम के लिये सहायता माँगने के लिये गाँव गया क्योंकि उसका खेत बहुत बड़ा था और वह अकेले है उसकी सफाई और बीज बोने का काम नहीं कर सकता था।

उसने गाँव वालों से अपनी जमीन साफ करने के लिये कहा क्योंकि वहाँ गाँव वाले एक दूसरे के खेत पर एक दूसरे की सहायता किया ही करते थे।

सो मेंढक के बुलाने पर गाँव के सारे आदमी उस मेंढक का खेत साफ कराने के लिये आये। जब उन्होंने उसका खेत साफ करा दिया तो मेंढक ने उनको खाना खिलाया और उनको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

काम खत्म हो जाने के बाद एक बहुत बड़ी भीड़ उसके घर से चली। वे लोग बहुत सारे थे तो उनकी मीलों लम्बी लाइन बन गयी।

मेंढक ने सोचा "मैं इन लोगों की उस अच्छाई का जो इन्होंने मेरे साथ दिखायी है उसके बदले में धन्यवाद देने के लिये और क्या

[91] Don't Shake Hands With Everybody (Tale No 17) – a folktale from Ghana, West Africa.

करूँ। यह तो मुझे पता है कि मैं हर उस आदमी से हाथ मिलाऊँगा जो भी यहाँ आया था।"

सो वह भागा भागा लाइन के आगे की तरफ गया और वहाँ पहुँच कर उन लोगों के आने का इन्तजार करने लगा। जैसे ही पहला आदमी वहाँ आया जहाँ वह मेंढक खड़ा हुआ था तो मेंढक ने उत्साह से उसका हाथ पकड़ लिया और ज़ोर से बोला — "ओह धन्यवाद धन्यवाद।"

यह कह कर उसने उस आदमी का हाथ छोड़ दिया और फिर दूसरे आदमी का हाथ पकड़ कर फिर से ज़ोर से बोला — "ओह धन्यवाद धन्यवाद।"

इसी तरह से उसने तीसरे आदमी का हाथ भी पकड़ा और ज़ोर से बोला — "ओह धन्यवाद धन्यवाद।"

अब उन काम करने वालों में कुछ बड़े मजबूत आदमी भी थे। सो उन्होंने जब मेंढक का हाथ पकड़ा तो बहुत ज़ोर से पकड़ लिया। और उनमें ऐसे कई आदमी थे जिनका हाथ काफी मजबूत था। इस तरह काफी लोगों से हाथ मिलाते मिलाते मेंढक का हाथ चौरस हो गया।

जब वे सब लोग चले गये तो मेंढक के हाथ सबसे हाथ मिलाते मिलाते बहुत दर्द करने लगे सो वह भगवान के पास इस बात की शिकायत ले कर गया।

भगवान ने मेंढक की शिकायत सुनी। उसके चौरस हाथ भी देखे। जब मेंढक ने अपनी शिकायत खत्म कर ली तो भगवान ने उससे कहा — "तुम थोड़े से ज़रा ज़्यादा ही उत्साह वाले थे। आज के बाद जब भी तुमको इतनी बड़ी भीड़ को धन्यवाद देना हो तो गॉव में अपना एक आदमी भेजो और उससे उनके लिये अपना धन्यवाद कहलवाओ।"

यह सुन कर मेंढक वहॉ से चला गया। उसके हाथ अभी भी चौरस हैं। अब भी कभी कभी जब वह उनकी तरफ देखता है तो कहता है — "हर एक से हाथ नहीं मिलाओ।"

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीवा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक क्रेन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022
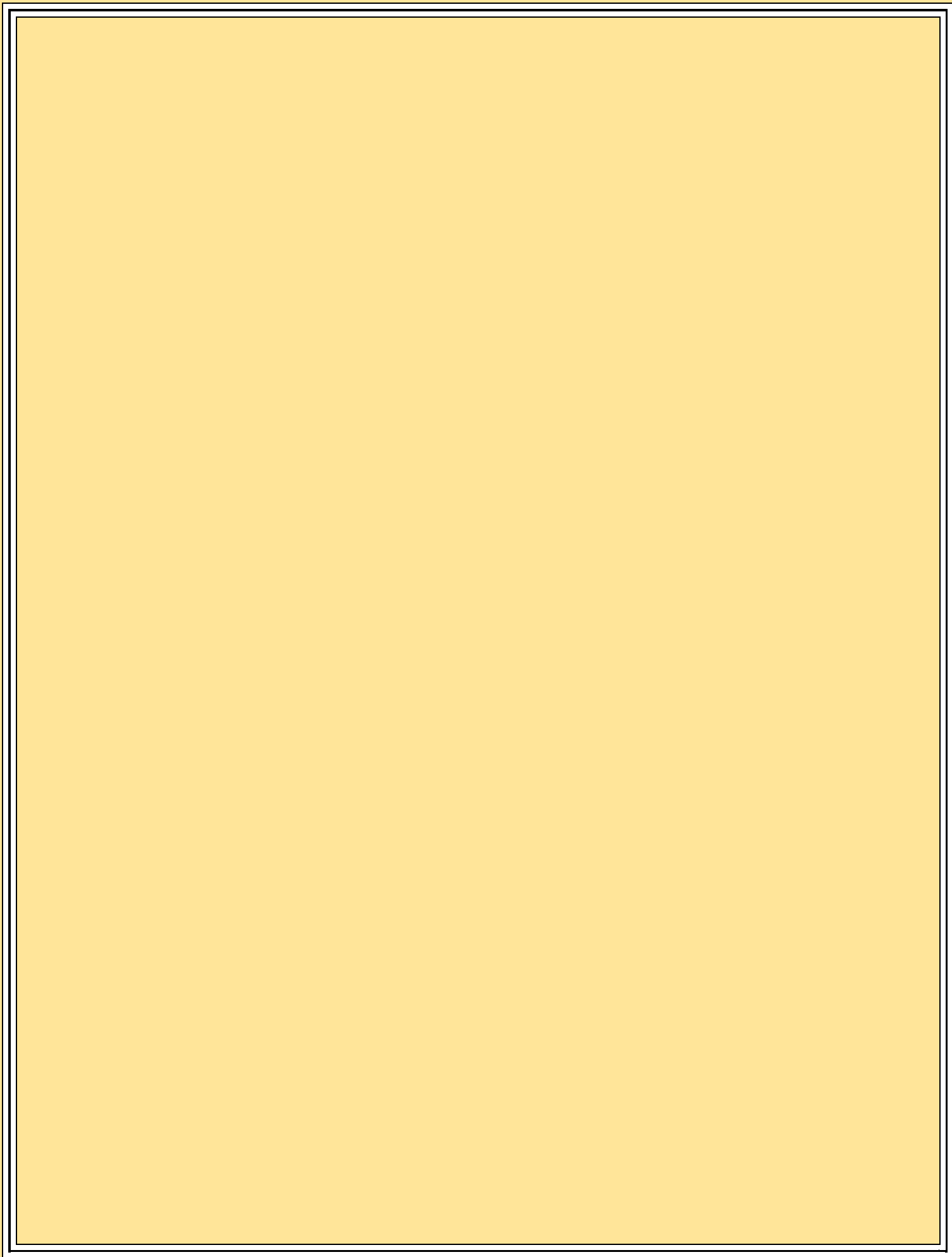
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन गुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको “देश विदेश की लोक कथाऐं” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022